वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

छात्रोपयोगी अध्ययन सामग्री

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

कक्षा 10

हिंदी 'अ'

शैक्षिक सत्र 2023 -24

केंद्रीय विद्यालय संगठन

एर्णाकुलम संभाग

केंद्रीय विद्यालय संगठन

क्षेत्रीय कार्यालय एर्नाकुलम

उपायुक्त : श्री संतोष कुमार एन.

दिनांक-17-08-2023

संदेश

मुझे 2023-24 सत्र के लिए कक्षा 10 की पुनर्संयोजित सहायक पाठ्य-सामग्री प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है । नवीन सहायक सामग्री सीबीएसई के पाठ्यक्रम और परीक्षा-प्रणाली के अनुरूप है । यह सामग्री सभी स्तर के छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है । प्रतिभावान छात्रों का भी इसमें विशेष रूप से ध्यान रखा गया है । पिछले वर्ष की सहायक सामग्री के अधिक विस्तार की समस्या का भी समाधान इसमें किया गया है । पाठ्यक्रम के सभी प्रकरणों को इसमें यथोचित स्थान दिया गया है और अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।

प्रस्तुत सामग्री एर्नाकुलम संभाग के सुयोग्य एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा अपनी योग्यता और अनुभवों का बेहतरीन उपयोग कर तैयार की गई है । यह सामग्री छात्रों को बोर्ड परीक्षा में सर्वोच्च प्रदर्शन करने योग्य बनाने में पूर्णतः समर्थ है । मैं आशा करता हूँ कि संभाग के सभी छात्र इस सामग्री का समुचित अध्ययन कर लाभान्वित होंगे और सफलता की नई ऊँचाइयों का स्पर्श करेंगे।

मैं प्रभारी प्राचार्य केंद्रीय विद्यालय कंजीकोड़ , श्री सदानंद यादव का जो सहायक सामग्री निर्माण के प्रभारी प्राचार्य हैं ,और सहायक सामग्री के निर्माण में रत सभी शिक्षकों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ ,जिनके अथक परिश्रम ,लगन और समर्पण से ही यह कार्य सम्पन्न हो पाया है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी छात्र इसका अधिकतम उपयोग करेंगे और परीक्षा के लिए पर्याप्त आत्मविश्वास प्राप्त कर सफल होंगे।

केन्द्रीय विद्यालय एर्णाकुलम संभाग
छात्रोपयोगी अध्ययन सामग्री २०२३-२४
कक्षा- दसवीं
हिन्दी 'अ"(००२)
अनुभवी शिक्षकों की सूची एवं निर्धारित पाठ /प्रकरण

क्रम संख्या	पाठ /प्रकरण	शिक्षकों के नाम	केन्द्रीय विद्यालय
1	अपठित गद्यांश	श्रीमती प्रीति एन	के वि पय्यन्नूर
2	अपठित पद्यांश	श्रीमती सुधर्मा	के वि कण्णूर
3	रचना के आधार पर वाक्य	श्री रशीद वी.वी	के वि त्रिश्शूर
4	वाच्य	श्री बलराम सिंह	के वि नं १ नेवल बेस कोच्चि
5	पद परिचय	श्रीमती सुनीता के	के वि कड़वन्द्रा
6	अलंकार	श्रीमती बीना फ्रांसिस	के.वि नं २ कोच्चि
7	नेताजी का चश्मा	श्रीमती आर. दीप्ति	के.वि.पेरूरकडा
8	बालगोबिन भगत	श्रीमती इन्दुमोल	के.वि पेरूरकडा
9	लखनवीं अंदाज	श्री हरिकृष्णन वी.	के.वि.पांगोड
10	एक कहानी यह भी	श्री संजीव मेनन	के.वि.पालकाड
11	नौबतखाने में इबादत	श्रीमती एम एस निम्मी	के वि. पल्लीपुरम

12	संस्कृति	श्रीमती मंजू सी	के.वि.पल्लीपुरम
13	सूरदास के पद	श्रीमती अनुबाला	के.वि. नं १ नेवल बेस कोच्चि
14	राम, लक्ष्मण,परशुराम संवाद	गोपालप्रसाद गुप्ता	के.वि.इडुकी
15	आत्मकथ्य	श्री वेलायुधन	के.वि.एषिमला
16	उत्साह	श्रीमती लतिका रानी	के.वि कोल्लम
17	अट नहीं रही है	श्रीमती अनिता सी.	के.वि ओट्टापालम
18	यह दंतुरित मुस्कान	श्री संजीव मेनन	के.वि.पालकाड
19	फसल	श्रीमती श्रीरंजिनी	के.वि ओट्टापालम
20	संगतकार	श्री सदानंदन टी	के.वि नं २ कालीकट
21	माता का आँचल	श्रीमती जीजी मोल पी.एम	के.वि एर्णाकुलम
22	साना-साना हाथ जोडि	श्रीमती बीना फ्रांसिस	के.वि नं २ कोच्चि
23	मैं क्यों लिखता हूँ	श्री उण्णीकृष्णन्	के वि त्रिश्शूर
24	पत्र-लेखन(एक औपचारिक और एक अनौपचारिक)	कुमारी रेणु ठाकुर	के.वि रबड़ बोर्ड कोट्टयम
25	संदेश लेखन(दो)	श्री आबिद हुसैन	के.वि रबड़ बोर्ड कोट्टयम
26	विज्ञापन लेखन(दो)	श्रीमती पिंटू सुगतन	के.वि कडुथुर्थी

27	अनुच्छेद लेखन	श्रीमती स्मिता प्रशांत	के.वि नं२कासरकोड
28	स्ववृत –लेखन(एक)	श्री राजू पोल	के.वि के.वि एर्णाकुलम
29	ईमेल -लेखन (एक औपचारिक और एक अनौपचारिक)	श्रीमती षाइना के.वि.	के.वि पेरिगोम
30	संयोजक गद्य	श्रीमती सुनीता एस	के.वि पांगोड
31	संयोजक पद्य	श्रीमती सिन्धुमोल अय्यपन	के.वि अडूर पारी-१
32	संयोजक -व्याकरण	श्रीमती षीबा एन	के.वि केल्ट्रोण नगर
33	संयोजक -लेखन कार्य	श्रीमती लता रामानुजन	के.वि केल्ट्रोण नगर
34	संयोजक मुख्य पृष्ठ एवं संदेश (आयुक्त, सह-आयुक्त) हिन्दी पाठ्यक्रम प्रश्न प्रारूप	श्री रविकुमार	के.वि पय्यन्नूर
35	प्रश्न पत्र संयोजक	श्रीमती जयश्री विनोद	के.वि नं१ कालीकट
36	संकलन एवं संपादन	श्रीमान सदानंद यादव (उप प्राचार्य) श्रीमती लता रामानुजन श्रीमती षीबा एन कुमारी बिजिना के पी (कंप्यूटर शिक्षिका)	के वे कंजीकोड के.वि केल्ट्रोण नगर

अपठित गद्यांश

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए :**

सच्चे मित्र की तलाश हर व्यक्ति को रहती है। जब कोई व्यक्ति जीवन में कठिनाइयों से दो-चार होता है, तो उसे किसी ऐसे साथी की आवश्यकता महसूस होती है, जो उसके दुख और परेशानियों की गाथा सुने और उनके निराकरण में उसकी सहायता करे। परंतु सच्चा मित्र पाना अत्यंत कठिन है। हर जान-पहचान वाला व्यक्ति हमारा मित्र नहीं हो सकता और न ही मित्रता का दावा करने वाला व्यक्ति सच्चा मित्र होता है। मित्रता सदैव सोच-समझकर करनी चाहिए। मीठी बातें, चाटुकारिता, हँसमुख चेहरा आदि मित्र बनाने के लिए आवश्यक शर्ते नहीं हैं, वरन सच्ची बात कहने वाला, खरी बात कहने वाला. विपरीत परिस्थितियों में साहस बढ़ाने वाला ही सच्चा मित्र हो सकता है। आचार्य शुक्ल ने सच्चे मित्र को कड़वी दवा की भाँति बताया है, जो कुसंग के ज्वर को दूर कर देती है। हमारे जीवन का मार्ग कुमार्ग न बन जाए, सफलता असफलता न बन जाए और नेकनामी बदनामी न बन जाए, इसके लिए हमें बुरे मित्रों और उनकी संगति से दूर ही रहना चाहिए।

(i) प्रत्येक व्यक्ति को किसकी तलाश रहती है?

(क) किसी भी मित्र की (ख) हँसमुख व्यक्ति की
(ग) सच्चे मित्र की (घ) चाटुकारिता की

(ii) सच्चा मित्र विपरीत परिस्थितियों में क्या करता है?

(क) साहस बढ़ाता है (ख) हतोत्साहित करता है
(ग) तटस्थ हो जाता है (घ) हँसता रहता है

(iii) कुसंग के ज्वर को दूर कौन कर देती है?

(क) किसी व्यक्ति की सहानुभूति (ख) सच्ची मित्रता
(ग) निष्पक्षता (घ) हमारी सफलता

(iv) 'मित्रता सदैव सोच-समझकर करनी चाहिए।' अर्थ की दृष्टि से वाक्य का कौन-सा भेद है ?

(क) प्रश्नवाचक (ख) नकारात्मक (ग) विधानवाचक (घ) आज्ञार्थक

(v) नेकनामी को बदनामी से बचाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

(क) किसी मित्र से परामर्श लेनी चाहिए (ख) बुरे मित्रों एवं उनकी संगति से दूर रहना चाहिए
(ग) नेकनामी का प्रचार करना चाहिए (घ) विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना चाहिए

2. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए :**

मनुष्य जीवन कर्म-प्रधान है। मनुष्य को निष्काम भाव से सफलता-असफलता की चिंता किए बिना अपने कर्तव्य का पालन करना है। आशा या निराशा के चक्र में फँसे बिना उसे निरंतर कर्तव्यरत रहना है। किसी भी कर्तव्य

की पूर्णता पर सफलता अथवा असफलता प्राप्त होती है। असफल व्यक्ति निराश हो जाता है, किंतु मनीषियों ने असफलता को भी सफलता की कुंजी कहा है। असफल व्यक्ति अनुभव की संपत्ति अर्जित करता है, जो उसके भावी जीवन का निर्माण करती है। जीवन में अनेक बार ऐसा होता है कि हम जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करते हैं, वह पूरा नहीं होता है। ऐसे अवसर पर सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया-सा लगता है, और हम निराश होकर चुपचाप बैठ जाते हैं। उद्देश्य की पूर्ति के लिए दुबारा प्रयत्न नहीं करते। ऐसे व्यक्ति का जीवन धीरे-धीरे बोझ बन जाता है। निराशा का अंधकार न केवल उसकी कर्म-शक्ति, वरन् उसके समस्त जीवन को ही ढंक लेता है। निराशा की गहनता के कारण लोग कभी-कभी आत्महत्या तक कर बैठते हैं। मनुष्य जीवन धारण करके कर्म-पथ से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। विघ्न-बाधाओं की, सफलता-असफलता की तथा हानि-लाभ की चिंता किए बिना कर्तव्य के मार्ग पर चलते रहने में जो आनंद एवं उत्साह है, उसमें ही जीवन की सार्थकता है।

(i) मनुष्य के कर्तव्य-पालन में कैसा भाव होना चाहिए?

(क) सफलता का भाव (ख) सकाम भाव (ग) निष्काम भाव (घ) परिश्रम का भाव

(ii) सफलता कब प्राप्त होती है?

(क) आशा-निराशा के चक्र में फँसे रहने पर (ख) निरंतर कर्तव्यरत रहने पर
(ग) परिश्रम करने पर (घ) कर्तव्य की पूर्णता पर

(iii) मनुष्य के लिए असफलता भी सफलता की कुंजी बन जाती है, क्योंकि वह :

(क) निष्क्रिय हो जाता है (ख) अनुभव अर्जित करता है

(ग) आशा-निराशा के चक्र में नहीं फँसता (घ) दुबारा प्रयत्न नहीं कर पाता

(iv) जीवन बोझ कब नहीं बनता -

(क) परिश्रम व्यर्थ हो जाने पर (ख) असफल हो जाने पर
(ग) निराश हो जाने पर (घ) उद्देश्य पूरा हो जाने पर

(v) जीवन की सार्थकता है :

(क) लक्ष्य से विचलित न होना (ख) कर्तव्य मार्ग पर चलते रहना
(ग) हानि-लाभ की चिंता करना (घ) सफलता के लिए दुबारा प्रयत्न करना

उत्तर खण्ड (गद्यांश)

गद्यांश - 1

(i) (ग) सच्चे मित्र की (ii) (क) साहस बढ़ाता है (iii) (ख) सच्ची मित्रता

(iv) (ग) विधानवाचक (v) (ख) बुरे मित्रों एवं उनकी संगति से दूर रहना चाहिए

गद्यांश – 2

(i) (ग) निष्काम भाव (ii) (घ) कर्तव्य की पूर्णता पर (iii) (ख) अनुभव अर्जित करता है

(iv) (घ) उद्देश्य पूरा हो जाने पर (v) (ख) कर्तव्य मार्ग पर चलते रहना

अपठित पद्यांश

निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए।

चांद- तारों- सी सहज क्रांति, नदियों में है मुस्कान भरी,

है पवन- झकोरों में दुलार खेतों में है दौलत बिखरी,

पग- पग मेरा विश्वास भरा, तब से है यह जीवन निखरा,

प्रखर कर्म का पाठ सतत-

पढ़ती मैं भारत माता हूं।।

मैं वज्र- सदृश विपदाओं को भी अनायास सह लेती हूं,

सुधा- दान कर औरों को,

मैं विष पीकर मुस्काती हूं,धीरज का पाठ पढ़ाती हूं,

गौरव का मार्ग दिखाती हूं,

मैं सहज बोध, मैं सहज शक्ति-

मूर्तियां बना डाली सजीव अनगढ़

पत्थर को काट- काट,

बंधुता- प्रेम को फैलाया,

अपना ही अंतर बांट- बांट,

जिसके गीतों से जगत मुग्ध,

जिसके नृत्यों पर जगत मुग्ध,

जिसकी कविता- धारा अविरल-

बहती वह भारत माता हूं।।

(i)मुस्कान किस में भरी हुई है

क)चांद में ख)तारों में ग)नदियों में घ)पहाड़ों में

उत्तर:ग)नदियों में

(ii) दौलत कहां बिखरी हुई है?

क) घरों में ख)वन में ग) बगीचे में। घ) खेतों में

उत्तर: खेतों में

(iii)विष पीकर कौन मुस्कुराती है

क) सरोजिनी नायडू ख)भारत माता ग)मीराबाई घ)जयशंकर प्रसाद

उत्तर:ग)भारत माता

iv)अनगढ़ पत्थर को काट- काट कर क्या बनाया गया?

क) सजीव मूर्तियां। ख) हथियार ग)बर्तन। घ) खिलौने

उत्तर:सजीव मूर्तियां

v)निम्नलिखित में अविरल शब्द का अर्थ है-

क) धीरे धीरे चलना ख)निरंतर बहना ग) उड़ना घ)ठहरना

उत्तर: ख) निरंतर बहना

II निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए।

विपदाओं से मुझे बचाओ,

यह मेरी प्रार्थना नहीं

केवल इतना हो(करुणामय)

कभी न विपदा में पाऊं भय।

दुःख ताप से व्यथित चित्त को
न दो सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे (करुणामय)
दुख को मैं कर सकूं सदा जय।
कोई सहायक न मिले
तो अपना बल पौरुष न हिले
हानि उठानी पड़े जगत में
लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानू क्षय।।
मेरा त्राण करो अनुदित
तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे(करुणामय)
तरने को ही शक्ति अनामय
मेरा भार अगर लघु करके
न दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय
वहन कर सकूं इसको निर्भय
नत सिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूं छिन छिन में।
दुख रात्रि में करे वंचना
मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणामय,
तुम पर करूं नहीं कुछ संशय।

i) कवि भगवान से क्या मांग रहे है?

क)बहुत अधिक धन ख)बहुत सारा सुख ग)बहुत बड़ा घर घ)कष्ट को सहने की शक्ति

उत्तर:घ)कष्ट को सहने की शक्ति

(ii) "दुख को मैं कर सकूं सदा जय"कथन

पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए।

कथन:

क)दुख में स्वयं हार जाऊं ख) दुख में विजय प्राप्त कर सकूं

ग)दुख पर संशय करना घ)दुख को सहन कर सकूं

विकल्प:

1)कथन क)और ख)सही है। 2)कथन ख) और ग) सही है।

3) कथन ख) और घ)सही है। 4)कथन क) और घ)सही है।

उत्तर:3)कथन ख)और घ)सही है।

iii) सुख के दिनों में भी कवि क्या करना चाहते हैं?

क)सिर झुकाकर ईश्वर के सामने प्रार्थना ख)ईश्वर को भूलना

ग)ईश्वर को याद न करना घ)ईश्वर को सदा स्मरण रखना

उत्तर:सिर झुकाकर ईश्वर के सामने प्रार्थना

(iv) कवि ईश्वर से कष्टों से बचाने की प्रार्थना नहीं करते क्योंकि•••••••दिए गए कथनों को पढ़कर सबसे सही विकल्प चुनिए।

कथन:

1) वे कठोर हैं। 2) वे निडर हैं।

3) वे उनका सामना स्वयं करना चाहते हैं। 4) वे अपने को लघु मानते हैं।

विकल्प:

क)कथन 1) सही है। ख)केवल कथन 3) सही है।

ग)कथन 1) और 2) सही है। घ)कथन 2) और 4) सही है।

उत्तर: ख) केवल कथन 3) सही है।

v) कवि दुख में सांत्वना के स्थान पर क्या मांग रहे हैं?

क)निडरता ख)धन ग)भय घ)सुख सपत्ति

उत्तर:निडरता

III दो में से क्या तुम्हें चाहिए,कलम या कि तलवार

मन में ऊंचे भाव कि तन में शक्ति अजेय अपार

कलम देश की बड़ी शक्ति है,भाव जगनेवाली,

दिल ही नहीं,दिमागों में भी आग लगानेवाली,

दिल ही नहीं,दिमागों में भी आग लगानेवाली।

पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,

और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे?

लहू गरम रखने को रखो मन में ज्वलित विचार,

हिस्र जीव से बचने को चाहिए किंतु तलवार!

एक भेद है और जहां निर्भय होते नर-नारी,

कलम उगलती आग,जहां अक्षर बनते चिंगारी।

जहां मनुष्यों के भीतर, हर दम जलते हैं शोले,

बाहों में बिजली होती,होते दिमाग में गोले।

जहां लोग पालते लहू में हलाहल की धार,

क्या चिंता यदि वहां हाथ में हुई नहीं तलवार।

प्रश्न1.कलम को देश की बड़ी शक्ति कहने का कारण है-

कथन:

i) इससे हम विचारों का आंदोलन छेड़ सकते हैं ii) लोगों में जागरूकता ला सकते हैं।

iii) दया व प्रेम के भाव जगा सकते हैं। iv) शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं।

विकल्प:

क) केवल i) सही है। ख)i) और ii) सही हैं।

ग) i),ii) और iii) सही है। घ) iii) और iv) सही है।

2. प्रस्तुत काव्यांश किस विषय से संबंधित है?

क) कलम और तलवार दोनों की उपयोगिता से। ख)शारीरिक बल की उपयोगिता से।

ग) तार्किक विचारों की शक्ति से। घ)केवल तलवार की शक्ति से।

3.काव्यांश के आधार पर बताइए कि मन में जलते विचार क्यों रखने चाहिए?

क)अपनी शक्ति का अहसास कराने केलिए ख)क्रांति की मशाल जलाने केलिए

ग)कलम को चलाने केलिए घ)तलवार न चलाने केलिए

4काव्यांश. के आधार पर बताइए कि समाज में बड़ी बड़ी क्रांति का सूत्रपात कैसे हुआ है?

क)तलवार के बल पर ख)विचारों के बल पर

ग)कलम के बल घ)सत्य और अहिंसा के बल पर

5. कथन: (A) कलम एवं दोनों क्रांति का माध्यम हैं।

कारण: (R) इनसे लोगों में जागरूकता फैलती है।

क) कथन (A) गलत है,किंतु कारण(R) सही है।

ख) कथन (A) तथा कारण(R) दोनों गलतहैं।

ग) कथन (A) सही है और कारण(R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

घ) कथन (A) सही है,किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नही करता है।

उत्तर:

1. i), ii) और iii) सही है।
2. क) कलम और तलवार दोनों की उपयोगिता से
3. ख)क्रांति की मशाल जलाने केलिए
4. ग) कलम के बल पर

5. ग)कथन(A) सही है और कारण(R)कथन(A) की सही व्याख्या करता है।

IV शहर की इस भागती- दौड़ती ज़िंदगी में सुबह होते ही शुरू हो जाती है दौड़।

हर कोई भाग रहा लेकर अपनी

दुपहिया, तिपहिया

कोई कार में सवार तो कोई पैदल ही निकल पड़ा, अपने गंतव्य की ओर।

चारों ओर हैं

आवाज़ें कहीं मोटरों के हॉर्न की,

कहीं टैंपो, रिक्शा और ठेलाे ं की ठेलमठेल

कहीं ट्रकों की दूर तक लंबी

कतार

तो कहीं रेलगाड़ियों की गड़गड़ाहट का शोर।

होती है उठापटक, छोटे- बड़े सामान की

कोई बंधा तो

कोई खुला

कोई इस हाथ में तो कोई उस हाथ में

हर तरफ धुंध है,चेहरे भी धुंधलाए- से

कोई इंतज़ार करता है

अपनों का

तो कोई डूबा है विछोह के गम में

कोई मुसुकुराया है कि घर अपने आया है

इसी बीच में कोई

मिलता है,तो कोई बिछुडता है

कोई रोता है, तो कोई सिसकता है

कोई झिझकता है, तो कोई ठिठकता है।

प्रश्न:

1. इस कविता के केंद्रीय भाव हेतु दिए गए कथनों को पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए।
   कथन:

i) शहर का जीवन व्यस्तताओं से भरा हुआ होता है।

ii) मनुष्य को जीवन में भागदौड़ करते रहना चाहिए।

iii) शहर का जीवन शांत होता है।

iv) ध्वनि प्रदूषण से बचना चाहिए।

विकल्प:

क) केवल i) सही है। ख) i) और ii) सही है।

ग) ii) और iii) सही है। घ) iii) और iv) सही है।

2.प्रस्तुत काव्यांश में किस प्रकार की जिंदगी का वर्णन किया गया है?

क) आनंद से भरपूर ख)भागदौड़ से भरपूर

ग)निष्क्रिय एवं दुःखी घ)गांव की जिंदगी

3.धुंधले चेहरों से क्या अर्थ है?

क)लोग व्यस्त जीवन से ऊब गए है। ख)लोगों के चेहरे स्पष्ट नहीं दिख रहे है।

ग)लोगों के चेहरे मुस्कुराए हुए है। घ)लोगों के चेहरे थके हुए से है।

4.काव्यांश में प्रयुक्त पंक्ति 'होती है उठापटक छोटे- बड़े सामान की' यहां छोटे- बड़े सामान की उठापटक किसका

प्रतीक है?

क) दैनिक जीवन के क्रिया कलाप आरंभ होने का ख) कपड़े धोने का

ग) लड़ाई- झगड़ा आरंभ होने का घ) अभ्यास करने का

5. कथन (A) जिंदगी में सुबह होते ही दौड़ शुरू हो जाती है।

कारण (R) हर कोई अपने गंतव्य तक पहुंचना चाहता है।

क) कथन (A) गलत है,किंतु कारण (R) सही है।

ख)कथन (A) तथा कारण (R)दोनों गलत हैं।

ग)कथन (A) सही है और कारण(R) कथन(A)की सही व्याख्या है।

घ) कथन (A) सही है,किंतु कारण(R) कथन (A)की सही व्याख्या नहीं है।

उत्तर:

1. क) केवल १) सही है।
2. ख) भागदौड़ से भरपूर
3. घ)लोगों के चेहरे थके हुए से है।
4. क) दैनिक जीवन के क्रिया कलाप आरंभ होने का।
5. ग) कथन(A) सही है और कारण(R)

कथन (A) की सही व्याख्या है।

वाक्य

ऐसा सार्थक शब्द समूह ,जो व्यवस्थित हो तथा पूरा आशय प्रकट कर सके,वाक्य कहलाता है ।

उदा: राम ने धर्म की स्थापना की ।

जिन अवयवों को मिलाकर वाक्य की रचना होती है ,उन्हें वाक्य के अंग या घटक कहते हैं ।

वाक्य के मूल एवं अनिवार्य घटक है – कर्ता(कार्य करनेवाला) एवं क्रिया(जो कार्य होता है या करता है)

उदा:गीता गाएगी ।गीता-कर्ता,गाएगी क्रिया

तुम जाओ।

आप पढें।

कर्ता और क्रिया पक्ष के अनुसार वाक्य के दो पक्ष होते हैं

उद्देश्य और विधेय।

उद्देश्य:वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा गया है उसे उद्देश्य कहते हैं ।

इसके अंतर्गत कर्ता,तथा कर्ता का विस्तार (विशेषण ,संबंधबोधक आदि होते हैं)

विधेय:- उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए ,उसे विधेय कहते हैं ।

इसके अंतर्गत क्रिया ,क्रिया विशेषण कर्म ,कर्म विस्तार आदि आते हैं ।

सरल वाक्य

जिन वक्यों में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है या एक मुख्य क्रिया होती है ,उन्हें सरल वाक्य कहते हैं।

उदा:पानी बरस रहा है ।

बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।

इन्हें साधारण वाक्य भी कहते हैं।

संयुक्त वाक्य:-

जहाँ दो या दो से अधिक उप वाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक (योजक)अव्यय शब्द से जुडे होते है ,वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं ।

उदा: जल्दी चलिए अन्यथा बहुत देर हो जाएगी ।

वह घर गया और उसने आराम किया ।

इन वाक्यों में दो - दो समानाधिकरण उपवाक्य क्रमश: अन्यथा ,और योजकों से जुडे हुए हैं ।अत: ये संयुक्त वाक्य हैं ।

विशेष:

- संयुक्त वाक्य में एक वाक्य में दो उपवाक्य होते हैं।
- दो उद्देश्य और दो विधेय होते हैं **।**
- दो मुख्य क्रियाएँ होती हैं ।
- दोनों उपवाक्य पूर्ण अर्थ देनेवाले दो सरल वाक्य होते हैं ।

- दोनों समानाधिकरण समुच्चयबोधक से जुडे होते हैं ।
- दोनों एक दूसरे पर आश्रित नहीं होते ।

मिश्र वाक्य:-

जहाँ एक मुख्य उपवाक्य हो और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य आपस में व्यधिकरण समुच्चयबोधक से जुडे होते हैं ,वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं ।

उदा:

उसने सोचा कि आज परीक्षा नहीं होगी ।

शामलाल जो सुंदर नगर में रहता है ,मेरा मित्र है ।

प्राय: मिश्र वाक्य में "कि",जो-वह,ऐसे-जो,वही-जिसे,यदि-तो,जैसे योजक होते हैं ।

विशेष:

मिश्र वाक्य में –

- एक वाक्य में दो उपवाक्य होते हैं ।
- दो उद्देश्य और दो विधेय होते हैं ।
- एक प्रधान उपवाक्य होता है और दूसरा उसपर आश्रित रहता है ।
- दोनों उपवाक्य व्यधिकरण उपवाक्य से जुडे होते हैं ।

उपवाक्य –विश्लेषण

- संयुक्त वाक्य के सभी उपवाक्य समान स्तर के होते हैं ।
- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और शेष उसपर आश्रित रहते हैं ।
- प्रधान उपवाक्य का कोई भेद नहीं होता।

आश्रित उपवाक्य के तीन भेद होते हैं –

१. संज्ञा आश्रित उपवाक्य

२. विशेषण आश्रित उपवाक्य

३. क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य

संज्ञा आश्रित उपवाक्य :

जो उपवाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा पदबंध के बदले में प्रयुक्त हुआ हो उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं।

उदा: मैदान में खेलनेवाले बालकों ने कहा कि वे भूखे हैं ।

यहाँ "वह भूखा है 'उपवाक्य प्रधान वाक्य की संज्ञा (बालक)के बदले में प्रयुक्त हुआ है इसलिए यह संज्ञा उपवाक्य है।

विशेषण आश्रित उपवाक्य

जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताता है उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं **।**

उदा: जिसको किताब चाहिए थी, वह घर गया ।

उपर्युक्त वाक्य में 'जिसको किताब चाहिए थी' उपवाक्य 'वह घर गया' के विशेषण के रूप में आया है ।

विशेषण उपवाक्य -जो ,जिस, जिसे, जिसको, जिनको, जिन्होंने, जिसमें, जिन्हें, हलांकि' योजकों से आरंभ होता है।

क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य

जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया की कोई विशेषता बताता है वह क्रियाविशेषण उपवाक्य कहलाता है।

उदा: जब पानी बरस रहा था तब मैं घर के भीतर था।

यहाँ 'जब पानी बरस रहा था उपवाक्य तब मैं घर के भीतर था' के क्रियाविशेषण के रूप में आया है ।

क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य यह 'यदि, जब, जिस तरह, जिधर , जहाँ, जैसे, जिस जगह , जितना' योजकों से आरंभ होता है।

रचना के आधार पर वाक्य - परिवर्तन

· सरल वाक्य का संयुक्त वाक्य में परिवर्तन-

उसने घर आकर भोजन किया।(सरल वाक्य)

वह घर आया और उसने भोजन किया।

· सरल वाक्य का मिश्र वाक्य में परिवर्तन-

देश के लिए मर मिटने वाला सच्चा देशभक्त होता है। (सरल वाक्य)

जो देश के लिए मर मिटता है वही सच्चा देशभक्त होता है (मिश्र वाक्य)

· संयुक्त वाक्य का सरल वाक्य में परिवर्तन-

शीला ने एक पुस्तक मांगी और वह उसे मिल गई। (संयुक्त वाक्य)

शीला के पुस्तक मांगने पर उसे मिल गई। (सरल वाक्य)

· संयुक्त वाक्य का मिश्र वाक्य में परिवर्तन-

वह तेज दौड़ता तो गाड़ी मिल जाती।(संयुक्त वाक्य)

यदि वह तेज दौड़ता तो गाड़ी मिल जाती । (मिश्र वाक्य)

· मिश्र वाक्य से सरल वाक्य

यद्यपि वह मंत्री बन गया है फिर भी उसका व्यवहार पूर्ववत है।(मिश्र वाक्य)

मंत्री बनने पर भी उसका व्यवहार पूर्ववत है। (सरल वाक्य)

· मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य

जब भी मैं वहां गया, उसने मेरा सत्कार किया। (मिश्र वाक्य)

मैं वहाँ गया और उसने मेरा सत्कार किया। (संयुक्त वाक्य)

वाच्य

परिभाषा- वाच्य का अर्थ है- "बोलने का विषय" अतः क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है या कर्म है अथवा भाव, उसे 'वाच्य' कहते हैं।

उदाहरणतया- संस्कार खेल रहा है।

इस वाक्य में खेलने का मुख्य विषय 'संस्कार' अर्थात् कर्ता है। इसलिए यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

वाच्य के भेद

वाच्य के दो भेद हैं-

1. **कर्तृवाच्य**- इसमें कथन का केंद्र कर्ता होता है। कर्म गौण होता है।

कर्तृवाच्य में क्रिया अकर्मक भी हो सकती है और सकर्मक भी।

जैसे- राजन सोता है। (अकर्मक)

राजन 'पुस्तक' पढ़ता है। (सकर्मक)

इन दोनों वाक्यों में कर्ता ही वाक्य का केंद्र बिंदु है। अतः यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

2. **अकर्तृवाच्य** - जिन वाक्यों में कर्ता गौण या सुप्त होता है. उसे अकर्तृवाच्य कहते हैं। अकर्तृवाच्य के दो भेद हैं-

(क) कर्मवाच्य- जिस वाक्य में केंद्र बिंदु कर्ता न होकर 'कर्म' हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। कर्म की प्रधानता के कारण या तो कर्ता का लोप हो जाता है; या कर्ता के बाद 'से' अथवा 'द्वारा' का प्रयोग होता है।

जैसे- संस्कार द्वारा गीत गाया गया। **[कर्ता (संस्कार) के बाद 'द्वारा' का प्रयोग]**

पतंग उड़ रही है। **(कर्ता का लोप)**

रोगी को दवाई दे दी गई है। **(कर्ता का लोप)**

इन तीनों वाक्यों में क्रमश: 'गीत', 'पतंग' और 'दवाई' कर्म हैं। यही अपने-अपने वाक्यों के केंद्र बिंदु भी हैं।

अतः ये कर्मवाच्य वाक्य है। कर्मवाच्य में कर्ता की असमर्थता सूचित करने वाले वाक्य भी होते हैं।

इनमें कर्ता के साथ 'से' अथवा 'द्वारा' लगता है और क्रिया के साथ निषेधात्मक 'नहीं' का प्रयोग होता है।

जैसे- मुझसे यह दृश्य देखा नहीं जाएगा।

शालिनी से भोजन न हो सका।

सकर्मक क्रिया से व्युत्पन्न अकर्मक क्रियाओं वाले वाक्य भी सकर्मक कहलाते हैं।

जैसे- दरवाजा खुल गया। (खोलना, खुलना)

गिलास टूट गया। (तोड़ना, टूटना)

(ख) भाववाच्य- जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता न होकर अकर्मक क्रिया का भाव प्रमुख हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। ऐसे वाक्यों में क्रिया सदा एकवचन, पुल्लिंग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है।

रवि से चला नहीं जाता।

अब मुझसे सहा नहीं जाता।

इनमें क्रमशः 'चला' तथा 'सहा' क्रियाएँ ही प्रमुख है। अतः ये भाववाच्य के उदाहरण हैं।

वाच्यों की पहचान

1. कर्तृवाच्य- (i) कर्ता बिना विभक्ति के होता है। (अथवा)

(ii) कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति होती है।

2. कर्मवाच्य- (i) कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' विभक्ति होती है।

(ii) मुख्य क्रिया सकर्मक होती है और उसके साथ 'जाना' क्रिया का लिंग, वचन कालानुसार रूप में जुड़ा होता है।

(iii) 'जाना' के उपर्युक्त रूप से पहले क्रिया सामान्य भूतकाल में होती है।

2. भाववाच्य- (i) कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' कारक चिह्न होता है।

(ii) क्रिया अकर्मक होती है।

(iii) क्रिया सदा एकवचन पुल्लिंग में होती है।

वाच्य परिवर्तन

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना

(i) पहले कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल में परिवर्तित कीजिए।

(ii) उस परिवर्तित क्रिया के साथ 'जाना' क्रिया का काल, पुरुष, वचन और लिंग के अनुसार जो रूप

हो, उसे जोड़कर साधारण क्रिया को संयुक्त क्रिया में बदलिए।

(iii) कर्तृवाच्य के कर्ता के साथ यदि कोई विभक्ति लगी हो, तो उसे हटाकर 'से' अथवा 'के द्वारा' आदि जोड़िए।

(iv) यदि कर्म के साथ विभक्ति लगी हो, तो उसे हटा दीजिए।

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
1. मैंने पत्र लिखा।	मुझसे पत्र लिखा गया।
2. महर्षि दयानंद ने आर्यसमाज की स्थापना की।	महर्षि दयानंद द्वारा आर्यसमाज की स्थापना की गई।
3. लड़का पत्र लिखता है।	लड़के द्वारा पत्र लिखा जाता है।
4. करीम पतंग उड़ा रहा है।	करीम द्वारा पतंग उड़ाई जा रही है।
5. नानी कहानी सुनाएगी।	नानी द्वारा कहानी सुनाई जाएगी।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में बदलने के लिए

(i) कर्ता के आगे 'से' अथवा' के द्वारा' लगाएँ।

जैसे- बच्चे का बच्चे से, लड़की का लड़की के द्वारा।

(ii) मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया के एकवचन में बदलकर उसके साथ 'जाना' धातु पुल्लिंग, अन्य पुरुष का वही काल लगा दें, जो कर्तृवाच्य की क्रिया का है।

जैसे- पढ़ेंगे - पढ़ा जाएगा।

खेल रही थी - खेला जा रहा था

सोते हैं - सोया जाता है।

उदाहरण-

कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**

1. हम इतनी दूर नहीं रह सकते।	हमसे इतनी दूर नहीं रहा जा सकता।
2. सास लड़ नहीं सकी।	सास से लड़ा नहीं जा सका।
3. सौम्या सुबह को नहीं उठ सकी।	सौम्या से सुबह नहीं उठा जा सका।
4. हम नहीं हँस सकते।	हमसे हँसा नहीं जाता
5. बच्चे शांत नहीं रह सकते।	बच्चों से शांत नहीं रहा जाता।

भाववाच्य और कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य बनाना

कर्तृवाच्य बनाने की पद्धति उपर्युक्त विधियों के ठीक विपरीत है।

इसमें पहले कर्ता को पहचानें- 'के द्वारा' या 'से' को हटाएँ तथा क्रिया का कर्तृवाच्य में प्रयोग करें।

कुछ उदाहरण देखें-

भाववाच्य / कर्मवाच्य	**कर्तृवाच्य**
1. लड़कों के द्वारा स्कूल साफ किया गया।	लड़कों ने स्कूल साफ किया।
2. वेदव्यास द्वारा महाभारत लिखा गया।	वेदव्यास ने महाभारत लिखा।
3. बालकों द्वारा फुटबाल खेली गई।	बालकों ने फुटबाल खेली।
4. सुमित द्वारा कविता पढ़ी गई।	सुमित ने कविता पढ़ी।
5. राजा द्वारा प्रजा को कष्ट दिए गए।	राजा ने प्रजा को कष्ट दिए।

पद परिचय

शब्द एवं पद

एक या एक से अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र, सार्थक इकाई को शब्द कहते हैं ।वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को पद कहलाते हैं|

वाक्यों में पदों का परिचय देना अर्थात उनकी स्थिति बताना, उनका लिंग, वचन, कारक भेद तथा अन्य पदों से संबंध बताना पद-परिचय कहलाता है । दूसरे शब्दों में वाक्य के अंतर्गत किसी शब्द की सभी भूमिकाओं का परिचय देना पद - परिचय कहलाता है ।

पद परिचय के आवश्यक पहलू

***संज्ञा** - संज्ञा का पद-परिचय देते समय निम्नलिखित बातें अपेक्षित है : भेद - व्यक्ति वाचक, जाति वाचक,भाव वाचक, लिंग- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, वचन- एक वचन, बहु वचन, कारक- कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, सम्बोधन, क्रिया के साथ संबंध

उदाहरण- लंका में राम ने बाणों से रावण को मारा।
इस वाक्य में **'लंका', 'राम', 'बाणों', और 'रावण'** चार संज्ञा पद हैं।
इन संज्ञा पदों का पद परिचय इस प्रकार होगा:-
लंका : संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक।
राम : संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक।
बाणों : संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, करण कारक।
रावण : संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।

***सर्वनाम**- सर्वनाम का पद-परिचय देते समय निम्नलिखित बातें अपेक्षित है| भेद- पुरुष वाचक,निश्चय वाचक, अनिश्चय वाचक, संबंध वाचक, प्रश्न वाचक, निज वाचक, लिंग- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, वचन- एक वचन, बहु वचन, कारक, क्रिया के साथ संबंध

उदाहरण- जिसे आप लोगों ने खाने पर बुलाया है, उसे अपने घर जाने दीजिए।
इस वाक्य में **'जिसे', 'आप लोगों ने', 'उसे' और 'अपने'** पद सर्वनाम हैं। इसका पद परिचय इस प्रकार होगा।
जिसे : अन्य पुरुष, सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।
आप लोगों ने : पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक।
उसे : अन्य पुरुष, सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।
अपने : निजवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक।

***विशेषण** - विशेषण का पद-परिचय देते समय निम्नलिखित बातें अपेक्षित है:- भेद - गुण वाचक, संख्या वाचक, परिमाण वाचक, सार्वनामिक, लिंग- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, वचन- एक वचन, बहु वचन, विशेष्य का निर्देश

उदाहरण-ये तीन मूर्तियां बहुत क़ीमती हैं।
उपर्युक्त वाक्य में **'तीन' ,'बहुत' और 'क़ीमती'** विशेषण हैं। इन दोनों विशेषणों का पद परिचय निम्नलिखित है-

तीन : संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, इस विशेषण का विशेष्य 'मूर्तियां' हैं।
बहुत : संख्यावाचक,स्त्रीलिंग, बहुवचन।
क़ीमती : गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन।

***किया**:- क्रिया का भेद- अकर्मक, सकर्मक, लिंग, व पुरुष की ओर कर्म का संकेत| उदाहरण:- मोहन ने सोहन को मारा।
मारा : क्रिया, सकर्मक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, भूतकाल। 'मारा' क्रिया का कर्ता मोहन तथा कर्म सोहन

***क्रिया विशेषण के भेद** :- रीतिवाचक, काल वाचक, स्थान वाचक, परिमाण वाचक, जिस क्रिया की विशेषता बताई जा रही है उसका निर्देश |

उदाहरण- लड़की उछल कूद कर रही हैं।
इस वाक्य में **'उछल कूद'** क्रियाविशेषण है।
उछल कूद : रीतिवाचक क्रियाविशेषण क्योंकि **'कर रही है'** क्रिया की विशेषता बता रहा है।

***संबंधबोधक का पदपरिचय**

संबंधबोधक के पद परिचय में संबंधबोधक का भेद और संज्ञा या सर्वनाम से संबंधित शब्द को बताना होता है।

उदाहरण - पेड़ के नीचे चिड़िया बैठी है।
के नीचे - संबंधबोधक, पेड़ और चिड़िया इसके संबंधी शब्द हैं।

***समुच्चयबोधक का पदपरिचय**

समुच्चयबोधक के पद परिचय में समुच्चयबोधक के भेद-समानाधिकरण तथा व्यधिकरण और समुच्चयबोधक से संबंधित योजक शब्द को बताना होता है।

उदाहरण – दिल्ली **अथवा** कोटा में पढ़ना ठीक है।
इस वाक्य में 'अथवा' समुच्चयबोधक शब्द है।
अथवा : विभाजक समुच्चयबोधक अव्यय है तथा 'कोटा' और दिल्ली के मध्य विभाजक संबंध।

व्यधि करण समुच्चय बोधक या संबंध बोधक भेद जिससे संबंध दर्शा रहा है तथा उसका निर्देश|

उदाहरण: विद्यालय **के पीछे** बाग है । के पीछे संबंध बोधक अव्यय

*विस्मयादि बोधक- किस भाव (विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, भय, क्रोध आदि) को प्रकट कर रहा है।
उदाहरण- वाह! भारत मैच जीत गए।

विस्मयादि बोधक, हर्ष सूचक

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए|

निम्नलिखित प्रश्नो में रेखांकित पदों के सही परिचय के विकल्पों का चयन करे।

1. <u>मुंशी प्रेमचंद</u> ने गोदान की रचना की।
क) जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक
ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्म कारक
ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक

घ) जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्म कारक

2. रेखा <u>नित्य</u> दौड़ने जाती है ।
क) गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, 'दौड़ने जाता है' क्रिया की विशेषता
ख) रीतिवाचक क्रिया विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, 'दौड़ने जाता है' क्रिया की विशेषता
ग) अव्यय, स्थानवाचक क्रिया विशेषण, 'दौड़ने जाती है' क्रिया की विशेषता
घ) अव्यय, कालवाचक क्रिया विशेषण, 'दौड़ने जाती है' क्रिया की विशेषता

3. अच्छी मिट्टी में फूल <u>खिलते हैं</u>।
क) सकर्मक क्रिया, बहुवचन, पुल्लिंग, वर्तमान काल, कर्तृ वाच्य
ख) अकर्मक क्रिया, बहुवचन, पुल्लिंग, वर्तमान काल, कर्तृ वाच्य
ग) सकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, वर्तमान काल, कर्तृ वाच्य
घ) अकर्मक क्रिया, एकवचन, स्त्रीलिंग, वर्तमान काल, कर्तृ वाच्य

4. <u>पीला</u> गुलाब देखकर मन खुश हो गया।
क) संख्यावाचक विशेषण, बहुवचन, पुल्लिंग, गुलाब विशेष्य का विशेषण
ख) गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, गुलाब विशेष्य का विशेषण
ग) परिमाणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, गुलाब विशेष्य का विशेषण
घ) गुणवाचक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, गुलाब विशेष्य का विशेषण

5. राधिका ने <u>आपको</u> बुलाया है।
क) प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक
ख) निजवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग/स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक
ग) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, स्त्रीलिंग/पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक
घ) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, स्त्रीलिंग/पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक

6. रिया पटना जा रही है।

क) जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक
ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक
ग) भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, करण कारक
घ) भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक

7. राखी से मैं कल यहीं मिला था।

क) क्रिया, अकर्मक, पूर्ण भूतकाल, पुल्लिंग एकवचन, कर्तृवाच्य
ख) क्रिया, सकर्मक, पूर्ण भविष्य काल, पुल्लिंग एकवचन, कर्मवाच्य
ग) क्रिया, अकर्मक, वर्तमान काल, स्त्रीलिंग एकवचन, कर्म वाच्य
घ) क्रिया, अकर्मक, भूतकाल, पुल्लिंग, बहुवचन, भाववाच्य

8. सोहन पहली कक्षा में पढ़ता है।

क) विशेषण, संख्यावाचक, आवृत्तिसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कक्षा विशेष्य
ख) विशेषण, परिमाणवाचक, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कक्षा विशेष्य
ग) विशेषण, संख्यावाचक, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कक्षा विशेष्य
घ) विशेषण, निश्चयवाचक, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कक्षा विशेष्य

9. बिल्ली पेड़ के नीचे बैठी हैं।

क) अव्यय, संबंधबोधक, पेड़ से संबंध
ख) अव्यय, योजक
ग) अव्यय, योजक बिल्ली और पेड़ के बीच सम्बन्ध बता रहा है
घ) अव्यय, क्रिया विशेषण

10. अभिषेक किसे देख रहा है?

क) सर्वनाम, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्म कारक
ख) सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, करण कारक
ग) सर्वनाम, पुल्लिंग, प्रश्नवाचक, कर्ताकारक
घ) सर्वनाम, प्रश्नवाचक, एकवचन, कर्म कारक

11. घोड़ा तेज दौड़ रहा है।

क) अव्यय, कालवाचक क्रियाविशेषण
ख) अव्यय, रीतिवाचक क्रियाविशेषण, दौड़ना क्रिया की विशेषता
ग) अव्यय, स्थानवाचक क्रियाविशेषण, दौड़ना क्रिया की विशेषता
घ) इन में से कोई नहीं

12. <u>गरीब</u> किसान बहुत परिश्रम कर रहा है।

क) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य-किसान
ख) संज्ञा, संख्यावाचक, पुल्लिंग, बहुवचन
ग) विशेषण, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन
घ) इनमें से कोई नहीं

13. कल मेरे पापा दिल्ली <u>गए</u>।

क) क्रिया, सकर्मक, एकवचन, पुल्लिंग, भूतकाल, कर्मवाच्य
ख) क्रिया, सकर्मक, बहुवचन, स्त्रीलिंग, वर्तमानकाल, कर्तृवाच्य
ग) क्रिया, अकर्मक, बहुवचन, पुल्लिंग, भविष्यकाल, कर्तृवाच्य
घ) क्रिया, अकर्मक, एकवचन, पुल्लिंग, भूतकाल, कर्तृवाच्य

14. <u>राम</u> बाजार जा रहा है।

क) संज्ञा, जातिवाचक, बहुवचन, पुल्लिंग, सम्बन्ध कारक, 'जा रहा है' क्रिया का कर्ता
ख) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक, 'जा रहा है' क्रिया का कर्ता
ग) संज्ञा, जातिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, कर्म कारक
घ) इन में से कोई नहीं

15. <u>वाह!</u> कितना सुन्दर कुत्ता है।

क) अव्यय, विस्मयादिबोधक, शोक सूचक
ख) अव्यय, संबंध बोधक, शोक सूचक
ग) क्रिया विशेषण, काल वाचक, कुत्ते की विशेषता बता रहा
घ) अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्ष सूचक

***उत्तर**

1)ग 2)घ 3)ख 4)ख 5)ग 6)ख 7)क 8)ग 9)क 10)घ 11)ख 12)क 13)घ

अलंकार

अलंकार का शाब्दिक अर्थ है आभूषण या गहने। काव्य को अधिक सुंदर, मनोरम एवं आकर्षक बनाने के लिए कवि अलंकारों का प्रयोग करते हैं। काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्वों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार के दो भेद हैं

1. शब्दालंकार-जहां विशिष्ट शब्द योजना द्वारा काव्य में चमत्कार उत्पन्न किया जाता है, वहां शब्दालंकार होता है।

उदाहरण-अनुप्रास अलंकार, यमक अलंकार और श्लेष अलंकार।

श्लेष अलंकार-श्लेष का अर्थ है-चिपकना। इस शब्दालंकार में एक शब्द एक ही बार प्रेरित होते हैं पर दो या दो से अधिक अर्थ देता है वहां श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण-

1. जो रहीम गति दीप की,

कुल कपूत की सोय। बारे उजियारौ करै, बड़े अंधरो होय।।

इन पंक्तियों में बारे और बढें शब्दों के दो- दो अर्थ हैं –

बारे-छोटे, जलाने पर

बढें-बढ़ने पर, बुझने पर

2. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून ।

पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस, चून।।

इन पंक्तियों में पानी के तीन अर्थ निकलते हैं-चमक, सम्मान, जल।

यहां कवि पानी रखने की बात कर रहे हैं। मोती के संदर्भ में पानी का अर्थ आभा या चमक है, मनुष्य और चून के संदर्भ में पानी का अर्थ क्रमशः आत्मसम्मान और जल से हैं। इस प्रकार यहां श्लेष अलंकार है।

2. अर्थालंकार-जहां काव्य में अर्थ-कौशल के द्वारा सुंदरता आती है, वहां अर्थालंकार होता है।

उदाहरण-उत्प्रेक्षा अलंकार, मानवीकरण अलंकार और अतिशयोक्ति अलंकार।

1. उत्प्रेक्षा अलंकार-जहां उपमेय और उपमान की समानता के कारण उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना की जाए वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

(उपमेय-जिस वस्तु की किसी दूसरी श्रेष्ठ वस्तु से तुलना की जाए अथवा जिसका वर्णन किया जाए, उसे उपमेय कहते हैं।

उपमान- रूप की तुलना जिस श्रेष्ठ वस्तु से की जाती है, उसे उपमान कहते हैं।वाचक शब्द है- जनु, मनु, जानो, मानो, जनहु, मनहु, ज्यों आदि।)

1. सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात।

मनो नीलमणि सैल पर, आतप पर्यौ प्रभात।।

-यहां श्रीकृष्ण के सुंदर श्याम शरीर में नीलमणि पर्वत की और उनके शरीर पर शोभायमान पीतांबर में प्रभात की धूप की मनोरम संभावना की गई है।

२. नील परिधान बीच सुकुमार,

खुल रहा मृदुल अधखिला अंग ।

खिला हो ज्यों बिजली का फूल,

मेघ बन बीच गुलाबी रंग।।

यहां नायिका के नीले वस्त्रों के अधखुले अंगों में आकाश के मध्य चमकने वाली बिजली की संभावना प्रकट की गई है। अतः यहां उत्प्रेक्षा अलंकार है।

२. मानवीकरण अलंकार- कवि जब प्रकृति और प्राकृतिक उपादान में तथा जड़ वस्तुओं में मानवीय क्रिया-व्यापार का आरोप करते हैं, तब वहां मानवीकरण अलंकार होता है।

उदाहरण-

१.मेघ आए बन ठन के सँवर के।

यहां कवि मेघों को सज- संवरकर दिखाया है।

2. दिवसावसान का समय,

मेघमय आसमान से उतर रही,

संध्या-सुंदरी परी-सी धीरे-धीरे।

यहां संध्या को एक सुंदरी के रूप में धीरे-धीरे आसमान से उतरता हुआ दिखाया गया है।

3. अतिशयोक्ति अलंकार-जहां वर्णय वस्तु (उपमेय) की लोक-सीमा से बढ़कर प्रशंसा की जाए, वहां अतिशयोक्ति अलंकार होता है। अतिशयोक्ति का शाब्दिक अर्थ होता है- बढ़ा चढ़ाकर कही गई उक्ति।

उदाहरण-

1. आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।

राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।

राणा अभी सोच ही रहे थे कि घोड़ा नदी के पार हो गया। यह यथार्थ में असंभव है। यहां घोड़े की शक्ति और स्फूर्ति का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया गया है। अतः यहां अतिशयोक्ति अलंकार है।

2. कढत साथ ही म्यान में, असि रिपु तन ते प्राण । यहां म्यान से तलवार का बाहर निकलना (कारण) और शत्रु के शरीर से प्राण का निकलना (कार्य) एक साथ वर्णित होने के कारण अतिशयोक्ति अलंकार है।

निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए।

1. देख लो साकेत नगरी है यही,

स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।।

2. आगे-आगे नाचती गाती बयार चली।

3. हनुमान की पूंछ में, लगन न पाई आग । लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।

4. फूले कास सकल महि छाई।

जनु बरसा रितु प्रकट बुढ़ाई।।

5. मधुबन की छाती को देखो,

सूखी कितनी इसकी कलियां।

उत्तर: 1.अतिशयोक्ति अलंकार, 2.मानवीकरण अलंकार, 3.अतिशयोक्ति अलंकार , 4.उत्प्रेक्षा अलंकार, 5.श्लेष अलंकार

नेताजी का चश्मा

लेखक - स्वयं प्रकाश

पाठ परिचय एवं सार

यह कहानी एक छोटे से कस्बे की है। इस कस्बे की नगरपालिका के किसी प्रशासनिक अधिकारी ने कस्बे के मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की एक संगमरमर की मूर्ति बनवाई थी यह कहानी इसी मूर्ति के इर्द गिर्द घूमती है।

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से सही विकल्प का चुनाव कीजिए-

1.नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा किसने लगाया होगा?
क) पानवाले ने ख) लेखक ने ग) हवलदार ने घ) किसी बच्चे ने

2. नेताजी का चश्मा पाठ का मूल भाव क्या है?
क) मूर्तिकला की प्रशंसा ख) सामाजिक भाव ग) देशभक्ति घ) राजनैतिक जागृति

3. नेताजी की बगैर चश्मे वाली मूर्ति किसे बुरी लगती है?
क) चश्मे वाले को ख) पानवाले को। ग) कस्बेवाले को घ) हालदार साहब को

4. सुभासचंद्र बोस की मूर्ति किस वस्तु की बनी थी?
क) मिट्टी की। ख) संगमरमर की। ग) लोहे की। घ) कांसे की

5. ड्राइंग मास्टर का नाम क्या था?
क) मोतीलाल ख) किशनलाल। ग) प्रेमलाल। घ) सोहनलाल

6. हालदार साहब को पानवाले की कौन सी बात अच्छी नहीं लगी?
क) तोंद हिलाकर हंसना। ख) नेताजी का मजाक उड़ाना।
ग) बिना वजह बोलना घ) चश्मे वाले को पागल कहना

7. कैप्टन को देखकर हालदार साहब क्यों अवाक रह गए?
क) किसी फ़ौज का कैप्टन होना। । ख) कैप्टन बूढ़ा, मरियल और लंगड़ा आदमी था।
ग) कैप्टन बहुत बहादुर था। घ) कैप्टन का व्यक्तित्व आकर्षित करने वाला था।

8. कैप्टन चश्मे वाला अपने गिने चुने फ्रेमों में से एक फ्रेम नेताजी की मूर्ति को क्यों पहनाता था?
क) उसको लगता था कि यह देशभक्तो का अनादर है ख) नेताजी को असली रूप में देखना चाहती थी
घ) कैप्टन को बिना चश्मे की मूर्ति आहत करती थी घ) उपर्युक्त सभी

***उत्तर**

1. घ) किसी बच्चे ने 2. ग) देशभक्ति 3. क) चश्मे वाले को 4. ख) संगमरमर की।

5. क) मोतीलाल 6. घ) चश्मे वाले को पागल कहना 7. ख) कैप्टन बूढ़ा, मरियल और लंगड़ा आदमी था।

8. घ) उपर्युक्त सभी

<u>पाठ के प्रश्न उत्तर</u>

प्रश्न1. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?
उत्तर- सेनानी न होते हुए भी लोग चश्मेवाले को कैप्टन इसलिए कहते थे, क्योंकि कैप्टन चश्मेवाले में नेताजी के प्रति अगाध लगाव एवं श्रद्धा भाव था। वह शहीदों एवं देशभक्तों के अलावा अपने देश से उसी तरह लगाव रखता था जैसा कि फ़ौजी व्यक्ति रखते हैं। उसमें देश प्रेम एवं देशभक्ति का भाव कूट-कूटकर भरा था। वह नेताजी की मूर्ति को बिना चश्मे के देखकर दुखी होता था।

प्रश्न 2. हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा |
(क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?
उत्तर- (क) हालदार साहब इसलिए मायूस हो गए थे क्योंकि वे सोचते थे कि कस्बे के चौराहे पर मूर्ति तो होगी पर उसकी आँखों पर चश्मा न होगा। अब कैप्टन तो जिंदा है नहीं, जो मूर्ति पर चश्मा लगाए। देशभक्त हालदार साहब को नेताजी की चश्माविहीन मूर्ति उदास कर देती थी।

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?
उत्तर (ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि देश में देशप्रेम एवं देशभक्ति समाप्त नहीं हुई है। बच्चों द्वारा किया गया कार्य स्वस्थ भविष्य का संकेत है। उनके अंदर राष्ट्र प्रेम की भावना का पैदा होना।

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?
उत्तर (ग) हालदार साहब सोच रहे थे कि कैप्टन के न रहने से नेताजी की मूर्ति चश्माविहीन होगी परंतु जब यह देखा कि मूर्ति की आँखों पर सरकंडे का चश्मा लगा हुआ है तो उनकी निराशा आशा में बदल गई। उन्होंने समझ लिया कि युवा पीढ़ी में देशप्रेम और देशभक्ति की भावना है जो देश के लिए शुभ संकेत है। यह बात सोचकर वे भावुक हो गए।

प्रश्न 3. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!"
कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।
उत्तर- "वह लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल !" पानवाला कैप्टन चश्मेवाले के बारे में कुछ ऐसी ही घटिया सोच रखता है। वास्तव में कैप्टन इस तरह की उपेक्षा का पात्र नहीं है। उसका इस तरह मजाक उड़ाना तनिक भी उचित नहीं है। वास्तव में कैप्टन उपहास का नहीं सम्मान का पात्र है देशभक्ति की

<u>अन्य प्रश्न</u>

प्रश्न 1. नगरपालिका द्वारा किसकी मूर्ति को कहाँ लगवाने का निर्णय लिया गया?
उत्तर- नेताजी सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति को नगरपालिका द्वारा लगवाने का निर्णय लिया गया। इस मूर्ति को कस्बे के बीचो-बीच चौराहे पर लगवाने का फैसला किया गया।

प्रश्न 2. मूर्ति बनवाने का कार्य स्थानीय ड्राइंग मास्टर को क्यों सौंपना पड़ा?
उत्तर- मूर्ति बनवाने का कार्य स्थानीय ड्राइंग मास्टर को इसलिए सौंपना पड़ा क्योंकि अधिकारी ने फाइलों और मूर्ति संबंधी अन्य बातों के निर्णय में बहुत अधिक समय ले लिया। ये अधिकारी अपना कार्यकाल समाप्त होने से पहले ही मूर्ति बनवाने का काम कर लेना चाहते थे, इसलिए जल्दबाजी में इसे स्थानीय ड्राइंग मास्टर को सौंप दिया।

प्रश्न 3. नेताजी की मूर्ति में कौन-सी कमी खटकती थी?
उत्तर- नेताजी की मूर्ति सुंदर थी। उसे देखते ही नेताजी द्वारा किए गए कार्य याद आने लगते थे, परंतु इस मूर्ति में एक कमी जो खटकती थी वह थी-मूर्ति पर चश्मा न होना। चश्मा न होने से नेताजी का व्यक्तित्व अधूरा-सा प्रतीत होता था।

प्रश्न 4. मूर्ति की कमी को कौन और किस तरह पूरा करने का प्रयास करता था?
उत्तर- नेताजी की मूर्ति चश्माविहीन थी। इससे उनका व्यक्तित्व अपूर्ण-सा लगता था। इस कमी को पूरा करने का प्रयास कैप्टन चश्मेवाला करता था। वह नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगा दिया करता था। इस प्रकार वह मूर्ति की कमी और नेताजी के व्यक्तित्व की अपूर्णता को भरने का प्रयास करता था।

प्रश्न 5. कैप्टन कौन था?
उत्तर- कैप्टन फेरी लगाकर चश्मे बेचने वाला एक मरियल और लँगड़ा-सा व्यक्ति था, जो हाथ में संदूकची और एक बाँस में चश्मे के फ्रेम टाँगे घूमा करता था।

प्रश्न 6. कैप्टन मूर्ति के चश्मे को बार-बार क्यों बदल दिया करता था?
उत्तर- कैप्टन देशभक्त तथा शहीदों के प्रति आदरभाव रखने वाला व्यक्ति था। वह नेताजी की चश्माविहीन मूर्ति देखकर दुखी होता था। वह मूर्ति पर चश्मा लगा देता था पर किसी ग्राहक द्वारा वैसा ही चश्मा माँगे जाने पर उतारकर उसे दे देता था और मूर्ति पर दूसरा चश्मा लगा दिया करता था।

प्रश्न 7. 'नेताजी का चश्मा' पाठ के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश देने का प्रयास किया है?
उत्तर- 'नेताजी का चश्मा' नामक पाठ के माध्यम से लेखक ने देशवासियों विशेषकर युवा पीढ़ी को राष्ट्र प्रेम एवं देशभक्ति की भावना मजबूत बनाए रखने के साथ-साथ शहीदों का सम्मान करने का भी संदेश दिया है। देशभक्ति का प्रदर्शन देश के सभी नागरिक अपने-अपने ढंग से कार्य-व्यवहार से कर सकते हैं।

प्रश्न 8. बच्चों द्वारा मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या प्रदर्शित करता है?
उत्तर- बच्चों द्वारा मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगाना यह प्रदर्शित करता है कि बच्चों के मन में देश प्रेम और देशभक्ति की भावना जागृत करना। उन्हें यह ज्ञान हो गया है कि शहीदों और देशभक्तों का आदर करना चाहिए।

बालगोबिन भगत

<u>सारांश</u>

बालगोबिन भगत कहानी का नायक है जो ग्रामीण जीवन से संबंधित है। यह लेख रेखाचित्र शैली में लिखा गया है, क्योंकि लेखक ने अपने स्मृति तथा अनुभव का प्रयोग किया है।

<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्न</u>

1. 'बालगोबिन भगत' शीर्षक पाठ के लेखक का क्या नाम है?
क. यशपाल ख. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ग.रामवृक्ष बेनीपुरी घ.स्वयं प्रकाश
2. बालगोबिन भगत आत्मा और परमात्मा के बीच कौन-सा संबंध मानते थे?

क. पिता-पुत्री ख.प्रेमी-प्रेमिका ग.बहन-भाई घ.माँ-बेटा

3. बेटे की मृत्यु के पश्चात् बालगोबिन भगत की आखिरी दलील क्या थी?
क.पतोहू का पुनर्विवाह करवाना ख.पतोहू को शिक्षा दिलवाना

ग. पतोहू को घर से निकालना घ. पतोहू से घृणा करना

4. बालगोबिन कबीर को क्या मानते थे?
क. साहब ख.गुरु ग. शिष्य घ. मित्र

5. बालगोबिन भगत अपनी फसल को पहले कहाँ ले जाते थे?
क. मंदिर में ख. गुरुद्वारे में ग.मस्जिद में घ. कबीरपंथी मठ में

6.लेखक बालगोबिन भगत की किस विशेषता पर अत्यधिक मुग्ध था?
क. पहनावे पर ख. भोजन पर ग.मधुर गान पर घ.व्यवहार पर

7. भगत जी की बहू उन्हें छोड़कर क्यों नहीं जाना चाहती थी?

क. सामाजिक मर्यादा के कारण ख. संपत्ति के लोभ में
ग. पति से प्यार होने के कारण घ. ससुर की चिंता के कारण

8. भगत जी भजन गाते समय क्या बजाया करते थे?

क. ढोल ख. ढपली ग. गिटार घ. खंजड़ी

9. भगत जी अपने बेटे का खास ख्याल रखा करते थे, क्योंकि वह?

क.चालाक था ख. ईमानदार था ग.प्रतिभावान था घ.सुस्त और बोदा था

10. भगत जी बेटे के मरने के बाद अपनी बहू की दूसरी शादी क्यों करवाना चाहते थे?

क. उसके सुखद भविष्य के लिए ख. छुटकारा पाने के लिए
ग.सबकी नजर में अच्छा बनने के लिए घ. इनमें से कोई नहीं

लघूत्तरीय प्रश्न-उत्तर

1 . खेती-बाड़ी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे ?

- वह साधारण वेशभूषा में रहते थे, कमर पर लंगोटी तथा सिर पर कबीरपंथी टोपी बांधे रहते थे।
- सुबह – शाम भक्ति के गीत गाते थे। ईश्वर तथा परमात्मा के महत्व को जानते थे।
- वह अपना घर तथा आसपास का वातावरण साफ सुथरा रखते थे।
- घर पर अनाज लाने से पूर्व वह कबीरपंथी मठ में अनाज का दान किया करते थे।
- किसी का सामान भी बिना पूछे उपयोग में नहीं लाते थे। वह झूठ नहीं बोलते थे।

2 . भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी ?

बालगोबिन यह जानते थे कि उनकी मृत्यु के बाद पुत्र वधू बिल्कुल अकेली हो जाएगी इससे उसका जीवन कष्ट से बीतेगा वह संसार के उतार-चढ़ाव तथा दुखों को अकेले सहन नहीं कर पाएगी। इसलिए बेटे के अंतिम संस्कार के बाद उसे जब मायके भेजने और दूसरा ब्याह करने की बात कही गई तो पुत्र वधू भगत को अकेला नहीं छोड़ना चाह रही थी। क्योंकि वह उसे पिता के समान मानती थी। वह भी जानती थी अब इनका कोई देखरेख करने वाला नहीं है, ऐसे में वह उस ससुर रुपी परमात्मा की सेवा करते हुए अपना जीवन निर्वाह करना चाहती थी।

3 . भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएं किस तरह व्यक्त की ?
उत्तर – भगत कबीर पंथी थे जिन्हें ईश्वर पर अटूट विश्वास होता है। वह ईश्वर को सर्वत्र मानते हैं जिसका कोई आकार नहीं है वह चर-अचर सर्वत्र विद्यमान रहता है। वह आत्मा और परमात्मा के भेद को भी जानते थे।अपनी बहू को रोने से मना कर रहे थे साथ ही समझा रहे थे कि यह उत्सव मनाने का समय है क्योंकि बेटे की आत्मा उस परमात्मा के पास चली गई है इससे और बड़ी बात क्या हो सकती है।
4 . भगत के व्यक्तित्व और उसकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत करें।
उत्तर – गोरा चिट्टा मंझोले कद काठी का लगभग उम्र साठ साल के पार होगी। सिर के बाल सफेद हो चुके थे, चेहरे पर सफेद झुर्रियां आ गई थी फिर भी उसका चेहरा जगमगाता रहता था, जैसे किसी प्रकार की चिंता उसके जीवन में ना रह गई हो। शरीर पर साधारण वेश कमर में लंगोटी और सिर पर कबीरपंथी की एक टोपी, हां सर्दी में एक कंबल और देखने को मिलता था।
5. पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर – बालगोबिन नित्य सुबह शाम कीर्तन भजन गाया करते थे। उनके गायन में वह मधुर स्वर लहर हुआ करती थी कि आसपास के समाज को भी एकत्र कर लिया करती थी। देखते ही देखते एक खुशनुमा माहौल बन जाता था, जिसमें हर एक कोई गीत गा रहा होता कोई नाच रहा होता।

6. कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोबिन प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन सामाजिक मान्यताओं का उल्लेख करें।

पाठ के आधार पर निम्नलिखित कारणों से स्पष्ट होता है –

- लोग अपनी मेहनत से उपजाए हुए अनाज को कहीं दान करना उचित नहीं समझते। भगत उसके विपरीत कबीरपंथी मठ में अपना सारा अनाज दान कर देते और वहां से जो प्रसाद स्वरूप मिलता उसी से अपना जीवन चलाते थे।
- पुत्र की मृत्यु पर वह शोक मनाने की बजाय उत्सव मनाने की बात करते हैं क्योंकि वह आत्मा और परमात्मा के भेद को जानते थे।
- धर्म की मान्यता के अनुसार स्त्रियां चिता को अग्नि नहीं देती। जबकि भगत ने अपने पुत्र का दाह संस्कार अपनी पुत्रवधू से ही करवाया था।
- अपनी पुत्रवधू का पुनः विवाह कराने के लिए आदेश देना उन्हें अन्य सामाजिक व्यक्ति से अलग करता है। वह अपने स्वार्थ के लिए किसी का जीवन बर्बाद नहीं करना चाहते थे।

<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर</u>

1. ग 2.ख 3.क 4. क 5. घ 6. ग 7. घ 8. घ 9. घ 10. क

लखनवी अंदाज़ - यशपाल

प्रश्नोतर

1. लेखक को नवाब साहब के किन हाव भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बात करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं है?

जब लेखक सेकंट क्लास के डिब्बे में चढ़ा तो देखा उसमें एक नवाब साहब पहले बैठे थे। लेखक को देखकर नवाब साहब की आंखों में एकांत चिंतन में विघ्न का अंश दिखाई दिया। उन्होंने लेखक से बातचीत नहीं की और वे खिड़की से बाहर कि स्थिति पर गोर करते रहे। इन सब हाव - भावों को देखकर लेखक ने जान लिया कि नवाब साहब उनसे बातचीत करने के इच्छुक नहीं हैं।

2. लेखक क्या सोचकर सेकंड क्लास का टिकट लिया?

लेखक ने भीड़ से बचने के लिए तथा एकांत में नयी कहानी सोच सकने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखने केलिए सेकंड क्लास का टिकट लिया।

3. लेखक ने क्या सोचकर सेकंड क्लास के डिब्बे में चढ़ा और उनका अनुमान गलत कैसे निकला?

लेखक ने डिब्बे को खाली समझकर चढा, लेकिन उनके अनुमान के खिलाफ एक बर्थ पर एक नवाब बैठे थे।

4. सेकंड क्लास में बैठे सज्जन की स्थिति कैसी थी ?

सज्जन बर्थ पर पालथी मारे बैठे थे, उनके सामने दो ताजे चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे।

5. लेखक का डिब्बे में घुसने पर सज्जन की क्या प्रतिक्रिया थी?

लेखक का डिब्बे में घुसने पर सज्जन की आँखों में एकांत चिंतन में विघ्न का असंतोष दिखाई दिया शायद वे नयी कहानी को सूझ में थे या फिर खीरे जैसे अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने के संकोच में थे। उन्होंने लेखक से संगति करने का कोई उत्साह भी नहीं दिखाया।

6. लेखक ने आत्मसम्मान में आँखें क्यों चुरा ली ?

नवाब साहब ने लेखक से संगति करने का उत्साह नहीं दिखाया तो उन्होंने आत्मसम्मान में आँखें चुरा ली।

7. नवाब साहब की असुविधा और संकोच के संबंध में लेखक ने क्या क्या अनुमान लगाए ?

नवाब साहब की असुविधा और संकोच के संबंध में लेखक ने ये अनुमान लगाए कि उन्होंने अकेले यात्र करने के विचार से सेकंड क्लास का अपेक्षाकृत सस्ता टिकट ले लिया होगा। यही नहीं अकेले सफर का वक्त काटने के लिए खोरे खरीदे, लेकिन किसी दूसरे सफेदपोश के सामने उसे खाने में नवाब को शरम अनुभव होने लगा।

8. नवाब साहब का कौन सा भाव परिवर्तन लेखक को अच्छा नहीं लगा ?

नवाब साहब पहले तो लेखक से संगति के लिए उत्साह नहीं दिखा रहे थे। फिर अचानक लेखक से पूछ बैठे कि क्या आप खीरा खाना पसंद करेंगे? नवाब साहब का यह भाव परिवर्तन लेखक को अच्छा नहीं लगा।

9 नवाब साहब ने खीरे की फाँकों पर नमक मिर्च छिड़का जिसे देखकर लेखक ललचाया पर उसने खीरे खाने का प्रस्ताव दूसरी बार भी अस्वीकृत क्यों कर दिया ?

नवाब साहब ने खोरे की फाकों पर नमक मिर्च छिड़ककर लेखक से खाने के लिए आग्रह किया तो लेखक ने मना कर दिया। यद्यपि लेखक खीरा खाना चाहता था फिर भी एक बार मना कर चुकने के कारण अपने आत्मसम्मान को बनाए रखने के लिए उन्होंने खीरे खाने के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया।

10. लेखक ने ऐसा क्या देख कि उसके ज्ञान चक्षु शुल गए?

उतर - लेखक ने देखा कि नवाब साहब खीरे की नमक मिर्च लगी फाँकों को सूँघकर खिड़की के बाहर फैकते गए। बाद में उन्होंने डकार करके संतुष्टि दर्शने का प्रयास किया। नवाब के अनुसार खीरा पेट पर बोझ डालता है। यह देखकर लेखक के ज्ञान चक्षु खुल गए कि इसी तरह सच्ची बातों से बेखबर नयी कहानी के लेखक भी बिना घटनाक्राम, पात्र और विचार से कहानी का प्रयास करते हैं।

11. लखनवी अंगदाज पाठ में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

उतर - लखनवी अंदाज नामक पाठ के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहता है कि हमें दिखावेपन से दूर रहना चाहिए। हमें काल्पनिकता को छोड़कर वास्तविकता को अपनाना चाहिए। एक अच्छे मनुष्य की पहचान उसका अच्छा व्यवहार ही है।

एक कहानी यह भी - मन्नू भंडारी

सारांश

एक कहानी यह भी' मन्नू भंडारी द्वारा आत्मपरक शैली में लिखी हुई आत्मकथ्य है। इस पाठ में यह बात बड़े ही प्रभावशाली ढंग से दर्शाई गई है कि बालिकाओं को किस तरह की पाबंदियों का सामना करना पड़ता है। अपने पिता से लेखिका के वैचारिक मतभेद का भी चित्रण हुआ है। प्रस्तुत आत्मकथा में लेखिका मन्नू भंडारी ने सिलसिलेवार आत्मकथा न लिखकर उन व्यक्तियों और घटनाओं का वर्णन किया है जिन्होंने उसके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओं के साथ-साथ अपने पिताजी, कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल के बारे में भी लिखा है।जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े है।

1 अजमेर आने के बाद लेखिका के पिता ने क्या किया ?

1. शब्दकोश का निर्माण
2. क़र्ज़ चूका देना
3. बच्चों के साथ खुलमिलकर व्यवहार
4.इनमें से कोई भी नहीं

12. पिताजी की सबसे बड़ी दुर्बलता क्या थी

1 धन लिप्सा 2. यश लिप्सा 3. क्रोध 4. अहंकार

lii पिताजी ने रसोईघर को क्या नाम दिया

1. भंडारशाळा 2. भटियार खाना 3. पाठशाला 4. गौशाला

iv) लेखिका को अपने अस्तित्व का एहसास कब हुआ?

1. आन्दोलन में भाग लेने पर
2. पिताजी से बहस करने पर
3. भाई-बहन की छत्रछाया हटने पर
4. माँ से दूर हो जाने पर

v आज़ादी के आन्दोलन में लेखिका ने क्या किया?

1. जुलूस में भाग लिया
2. भाषण दिए
3. कॉलेज में छात्र-छात्राओं से हड़तालें करवाई
4. उपर्युक्त सभी

16. लेखिका का अपने घर में किस सम्मानित व्यक्ति ने बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया ?

1. अंबिका लाल जी 2. अंबा लाल जी 3. श्री कृष्ण लाल जी 4. अंबा देव जी

प्रश्नोत्तर

1.लेखिका के व्यक्तित्व पर किन किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

लेखिका के व्यक्तित्व पर उनके पिता और उनकी कॉलेज की हिंदी अध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव सबसे अधिक पडा।गोरे रंग के प्रति पिता का आकर्षण तथा साँवले रंग वाली लेखिका की उपेक्षा उसमे हीन भावना उत्पन्न कर शक्की बनाया। पिता के व्यवहार ने लेखिका के मन में आक्रोश, विद्रोह और जागरूकता भरा। शीला अग्रवाल ने उनमें पुस्तकों के चयन और साहित्य में रुचि उत्पन्न की। तत्कालीन राजनीति में भागीदारी केलिए प्रेरित कर उन्होंने लेखिका को एक नया रास्ता दिखाया।

2.इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को भटियारखाना कहकर क्यों सम्बोधित किया है?

भटियारखाना' का अर्थ है- ऐसा घर या स्थान जहाँ भट्ठी जलती है अथवा वैसा घर जहाँ लोगों द्वारा लोक-लज्जा का त्याग कर अपशब्दों का इस्तेमाल किया जाता हो। यहाँ लेखिका के पिता रसोईघर को 'भटियार खाना ' कहते हैं। उनके अनुसार रसोईघर की भट्ठी में महिलाओं की समस्त प्रतिभा जलकर भस्म हो जाती है, क्योंकि उन्हें वहाँ से कभी फ़ुर्सत ही नहीं मिलती कि वे अपनी कला और प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें। उन्हें अपनी इच्छाओं का गला घोंटना पड़ता है।

3.वह कौनसी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

लेखिका और उसके साथियों की नारेबाज़ी और हड़ताल के कारण कॉलेज़ प्रशासन को कॉलेज़ चलाने में कठिनाई हो रही थी। फलतः लेखिका के पिता के पास कॉलेज़ के प्रिंसिपल का पत्र आया, जिसमें लेखिका के क्रिया - कलापों की शिकायत की गई थी। वे आग-बबूला होकर कॉलेज़ गए। परन्तु ; अपनी बेटी के कारनामें जानकर और उसके प्रभाव को देखकर उन्हें मन ही मन गर्व हुआ। लेखिका पिता के डर से अपने पड़ोसी के यहाँ बैठ गई थी। माँ ने जब जाकर बताया कि उसके पिताजी क्रोधित नहीं हैं, तो वह घर आई। पिता की बातें सुनकर और उनकी खुशी देखकर लेखिका को न तो अपनी आँखों पर विश्वास हुआ और न अपने कानों पर।

4.लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

लेखिका ने जब से होश संभाला तब से प्राय: किसी न किसी बात को लेकर अपने पिता के साथ उसका टकराव होता ही रहता था। लेखिका के रंग को लेकर पिता ने उसके मन में हीनता भर दी थी। वे लेखिका में विद्रोह और जागरण का भाव भरना तो चाहते थे , परन्तु ; उसे घर की चारदीवारी तक ही सीमित रखना चाहते थे। लेखिका को रंग का भेदभाव पसंद न था, साथ ही पिता का शक्की स्वभाव भी उसे खलता था। वह भी स्वतंत्रता - संग्राम में सक्रिय भागीदार होना चाहती थी। प्राय: इन्हीं मुद्दों पर दोनों में वैचारिक टकराहट होती रहती थी।

5.इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजीए।

सन् 1946-47 ई. में समूचे देश में 'भारत छोड़ो आंदोलन' पूरे उफ़ान पर था। हर तरफ़ हड़तालें , प्रभात - फ़ेरियाँ, ज़ुलूस और नारेबाज़ी हो रही थी। घर में पिता और उनके साथियों के साथ होनेवाली गोष्ठियों और गतिविधियों ने लेखिका को भी जागरूक कर दिया था। प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका को स्वतंत्रता - आंदोलन में सक्रिय रूप से जोड़ दिया। जब देश में नियम - कानून और मर्यादाएँ टूटने लगीं, तब पिता की नाराज़गी के बाद भी वे पूरे उत्साह के साथ आंदोलन में कूद पड़ीं। उनका उत्साह , संगठन-क्षमता और विरोध करने का तरीक़ा देखते ही बनता था। वे चौराहों पर बेझिझक भाषण, नारेबाज़ी और हड़तालें करने लगीं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भी सक्रिय भूमिका थी।

6.लेखिका ने बचपन में अपने भाइयों के साथ गिल्ली डंडा तथा पतंग उडाने जैसे खेल भी खेले किन्तु लड़की होने के कारण उनका दायरा घर के चार दीवारी तक सीमित था। क्या आज भी लड़कियों के लिए स्थितियां ऐसी ही है या बदल गई है? अपने परिवेश के आधार पर लिखिए।

बचपन में लेखिका ने गिल्ली-डंडा और पतंग उड़ाने जैसे खेल तो खेले, लेकिन उनका दायरा घर की चारदीवारी तक ही सीमित था। इस दृष्टि से आज स्थितियाँ एकदम बदल-सी गई हैं। आज लड़कियाँ घर की चौखट लाँघ कर खेल के मैदानों में पहुँच गईं हैं। उन पर लगी पाबंदियाँ क्रमश: कमतर होती जा रही हैं। यही कारण है कि लड़कियाँ केवल खेल में ही नहीं , अपितु अन्य लड़कों की तरह समाज सेवा , नौकरी , व्यापार आदि क्षेत्रों में भी अपना वर्चस्व स्थापित करते जा रही हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आज लड़कियाँ घर की चारदीवारी में बन्द नहीं हैं।

7.मनुष्य के जीवन में आस पड़ोस का बहुत महत्त्व होता है। बड़े शहरों में रहनेवाले लोग प्राय: पड़ोस कल्चर से वंचित रह जाते है। अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।

मनुष्य के जीवन में 'पड़ोस-कल्चर' का बड़ा महत्व है। पड़ोसी प्राय: एक-दूसरे की सहायता करने के लिए तैयार रहते हैं। गाँवों में 'पड़ोस-कल्चर' के आज भी दर्शन होते हैं। परन्तु; दुर्भाग्यवश शहरों में 'पड़ोस-कल्चर' प्राय: है ही नहीं। महानगरों के लोग इससे सर्वथा वंचित रह जाते हैं। आज नगरों में नर - नारी दोनों कामकाजी हैं। वे अपने काम और घर के अलावा कुछ दूसरा सोच ही नहीं पाते। वे स्व - केन्द्रित हो गए हैं। बच्चे भी अपने भविष्य की चिन्ता में खोए रहते हैं। आज लोग पड़ोसी से इतने कटे हैं कि उन्हें अपने पड़ोसी का नाम भी नहीं मालूम होता , फ़िर भला सुख - दुख बाँटने की तो बात ही दूसरी है ।

नौबतखाने में इबादत

लेखक-यतींद्र मिश्र

*<u>पाठ-परिचय</u>

" नौबतखाने में इबादत " प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पर मनोरंजक अथवा दिलचस्प शैली में लिखा गया व्यक्ति – चित्र है। इसमें उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की जिंदगी के प्रमुख पहलुओं की जानकारी मिलती है ।

*<u>पाठ से बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर:</u>

1.उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म स्थान कहाँ है?

(क) काशी (ख) डुमराँव (ग) पटना (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर -(ख) डुमराँव

2.यतींद्र मिश्र जी किस पाठ के लेखक है?

(क) बालगोबिन भगत (ख) नौबतखाने में इबादत (ग) सूरदास के पद (घ) इनमे से कोई नही

उतर-(ख) नौबतखाने मे इबादत

3.रीड किस चीज से बनाई जाती है?

(क) लोहा से (ख)पतियों से (ग) बसों से (घ)नरकट से

उतर-(घ) नरकट से

4.काशी में संगीत आयोजन किस मंदिर में होता था ?

(क) संकट मोचन मंदिर (ख) शिव शक्ति मंदिर (ग) जानकी मंदि (घ) हरे कृष्ण मंदिर

उतर-(क) संकट मोचन मंदिर

5.पाठ के आधार पर इतिहास में शहनाई का कोई उल्लेख नहीं उपलब्ध होता है ?

(क) वैदिक कालीन (ख) मराग कालीन (ग)मुगलकालीन (घ) उपयुक्त में से कोई नहीं

उत्तर-(क) वैदिक कालीन

6.बिस्मिल्लाह खां को संगीत सीखने की प्रेरणा किससे मिली?

(क)अपने नाना से (ख) रसूलनबाई और बतूलन बाई

(ग) दोनों में से कोई नहीं (घ) अपने मामा से

उत्तर-(ख) रसूलनबाई और बतूलन बाई

7.अमीरुद्दीन के नाना जी कहाँ पर शहनाई बजाने जाते थे?

(क) शिव मंदिर में (ख) देवी के मंदिर में (ग) बालाजी के मंदिर में (घ) धर्मशाला में

उत्तर- (ग) बालाजी के मंदिर में

8.पाठ में कचौड़ी को संगीतमय क्यों कहा गया है?

(क) खाँ साहब संगीत बजाते हुए खाते थे।

(ख) कलकलाते घी में जब कचौड़ी पड़ती थी तो छन्न की आवाज होती थी

(ग) कचौड़ी खाते समय मिर्च लगती और सी-सी मुँह से निकलता

(घ) कचौड़ी खाते समय पद सुनाया करते थे

उत्तर-(ख) कलकलाते घी में जब कचौड़ी पड़ती थी तो छन्न की आवाज होती थी।

9.नमाज़ के बाद बिस्मिल्ला खाँ सजदे में किसके लिए गिड़गिड़ाते थे?

(क) मोक्ष प्राप्ति के लिए (ख) धन प्राप्ति के लिए (ग) प्रसिद्धि के लिए (घ) एक सच्चे सुर के लिए

उत्तर -(घ) एक सच्चे सुर के लिए

10.बिस्मिल्लाह खाँ शहनाई और काशी को इस धरती पर क्या मानते थे?

(क) बोझ (ख) जन्नत (ग) नरक (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(ख) जन्नत

*निम्नलिखित पठित गद्यांश के आधार पर पूछे गए बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।

। -काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं .....और भीतर की आस्था रीड के माध्यम से बजती है।

1.काशी का संगीत आयोजन किस अवसर पर होता है?

(क)रामलीला के अवसर पर (ख)हनुमान जयंती के अवसर पर

(ग)विश्वनाथ की पूजा के अवसर पर (घ)संकट मोचन के अवसर

2.संगीत सभा में किस प्रकार का आयोजन होता है?

(क) सुगम संगीत का (ख)लोक संगीत का

(ग) शास्त्रीय संगीत का (घ)शास्त्रीय तथा उप शास्त्रीय संगीत

3.बिस्मिल्ला खाँ काशी विश्वनाथ के प्रति-

(क) आस्थावान नहीं है (ख) विरोधी हैं (ग)आस्थावान है (घ) सहनशील है

4.काशी से बाहर संगीत आयोजन में बिस्मिल्ला खाँ काशी की ओर मुंह क्यों करते हैं

(क)काशी के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए (ख)हिंदुओं की खुशी के लिए

(ग) विश्वनाथ के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए (घ) सांप्रदायिक एकता प्रकट करने के लिए

5.बिस्मिल्लाह खान कैसे मनुष्य थे ?

(क)कट्टर मुसलमान (ख)कट्टर हिंदू (ग)सांप्रदायिक (घ)आस्थावान मनुष्य थे।

उत्तर- 1(ख) 2(घ) 3(ग) 4(ग) 5(घ)

II- काशी संस्कृति की पाठशाला..... अलग करके नहीं देख सकते।

1.काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहते हैं ?

(क) यहां सांस्कृतिक विद्या अस्थाई जाती है (ख) यहां रहन-सहन के तौर तरीके सिखाए जाते हैं

(ग) यहां संस्कृति का बोलबाला है (घ) यहां के विद्यालयों में संस्कृति भी एक विषय है

2. काशी में विश्वनाथ किस रूप में प्रतिष्ठित है

(क) कलाकार रू प में (ख) नर्तक रूप में (ग) आनंद रूप में (घ) रसिक रूप में

3.काशी में हजारों साल का इतिहास है का आशय है

(क) यहां संगीत और कला की बहुत पुरानी परंपरा है (ख) यहां हजारों साल से इतिहास लिखा जाता है

(ग) यह नगरी हजारों सालों से बसी हुई है (घ) यहां हजारों सालों से संगीत प्रतियोगिताएं होती है

4. काशी का जनसमूह बिस्मिल्लाह खाँ जैसे संजीत साधकों के कारण :

(क) दुखी है (ख) व्यस्त है (ग) कृतज्ञ है (घ) महान है

5. काशी में संगीत और भक्ति:

(क) अलग-अलग है (ख) विशिष्ट हैं (ग) एक हैं (घ) अनोखे हैं

उत्तर- 1(ग) 2(ख) 3(क) 4(ग) 5(ग)

III- किसी दिन एक शिष्या ने डरते- डरते खां साहब को टोका, "बाबा! .....आज फटी है तो कल सी जाएगी ।"

1 .बिस्मिल्लाह खाँ खुदा से क्या दुआ करते हैं?

(क) वे उनको फटी लुंगी ना दें (ख) वे उनको धन-मान दें

(ग) वे उनको फटा सुर न दें (घ) वे उनको प्रतिष्ठा दें।

2.बिस्मिल्लाह खाँ घर पर कैसे रहते थे?

(क) सीधे -सादे (ख) फटेहाल (ग) गंदे (घ) बन-ठन कर ।

3. खाँ साहब की शिष्या ने खाँ साहब को किस बात के लिए टोका?

(क) फटी लूंगी ना पहनने के लिए (ख) फटे कपड़े ना पहनने के लिए

(ग) फटे कपड़े में लोगों से मिलने के लिए(घ) अपना मान - सम्मान गिराने के लिए ।

4. खाँ साहब ने बनाव श्रृंगार क्यों नहीं किया?

(क) शौक ना होने के कारण (ख) लोगों को अपनी फटेहाली दिखाने की इच्छा से

(ग) आवश्यकता ना होने के कारण (घ) शहनाई में लगे रहने के कारण ।

5. शिष्या द्वारा टोके जाने पर खाँ साहब ने क्या प्रतिक्रिया की ?

(क) वे क्रुद्ध हो गए (ख) वे प्रसन्न हो गए (ग) वे मुस्कुराने लगे (घ) वे भाषण देने लगे ।

उत्तर- 1(ग) 2(क) 3(क) 4(घ) 5(ग)

***प्रश्नोत्तर:-**

प्रश्न 1.शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर-शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किए जाने के मुख्यतया दो कारण हैं-शहनाई बजाने में जिस

रीड का प्रयोग होता है वह डुमराँव में ही सोन नदी के किनारे मिलती है। तथा शहनाई की मंगल ध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मस्थली डुमराँव ही है।

प्रश्न 2.बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक इसलिए कहा गया है क्योंकि शहनाई की ध्वनि मंगलदायी मानी जाती है। इसका वादन मांगलिक अवसरों पर किया जाता

प्रश्न 3. बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के लिए सर्वोच्च सम्मान पाकर भी नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते -' मेरे मालिक एक सुर बख्श दे।'- इससे उनकी कौन सी विशेषता उभरकर आती हैं ?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ एक विश्व प्रसिद्ध महान कलाकार हैं। शहनाई वादन के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के बावजूद भी उनमें इस बात का जरा भी घमंड नहीं। वे चाहते हैं कि खुदा की रहमत उनके सुर पर सदा बनी रहे।

प्रश्न 4.काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

उत्तर-समय के साथ-साथ काशी में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं जो बिस्मिल्ला खाँ को दुखी करते हैं। खानपान की पुरानी चीजें और विशेषताएं नष्ट होती जा रही हैं, पक्का महाल से मलाई बरफ़ वाले गायब हो रहे हैं। कुलसुम की कचौड़ियाँ और जलेबियाँ अब नहीं मिलती हैं। संगीत और साहित्य के प्रति लोगों में वैसा मान-सम्मान नहीं रहा। गायकों के मन में संगतकारों के प्रति सम्मान भाव नहीं रहा। हिंदू-मुसलमानों में सांप्रदायिक सद्भाव में कमी आ गई है।

प्रश्न 5.बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की विशेषताओं में प्रमुख हैं: (i)सादाजीवन उच्च विचार : बिस्मिल्ला खाँ अत्यंत सादा जीवन जीते थे। (ii) निरभिमानी : सफलता की चोटी पर पहुँचने के बाद भी बिस्मिल्ला खाँ को अभिमान छू भी न गया था। (iii) धार्मिक सदभाव : बिस्मिल्ला खाँ अपने धर्म के प्रति समर्पित होकर नमाज़ अदा करते थे और हजरत इमाम हुसैन के बलिदान के प्रति दस दिन का शोक मनाते थे तो गंगा मइया, बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति भी असीम आस्था रखते थे। (iv)परिश्रमशील स्वभाव : बिस्मिल्ला खाँ अपने जीवन के अस्सी बरस पूरे करने के बाद भी रियाज़ करते थे और संगीत साधना के प्रति समर्पित रहते थे।

संस्कृति

सारांश

संस्कृति निबंध में भदन्त आनंद कौसल्यायन ने अनेक उदाहरणों से सभ्यता और संस्कृति इन दोनों शब्दों के अंतर, उनके अर्थ तथा उनके प्रयोग की जटिलता को समझाने का प्रयास किया है।

निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए।

1. जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा .....आविष्कर्ता होगा।

क) आग और सुई-धागे के आविष्कार के प्रेरक का कारण क्या है?

i) इच्छा ii) प्रेरणा iii) आवश्यकता iv) योग्यता

ख) संस्कृति क्या है?

i) खोजने की योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा ii) प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा

iii) आविष्कृत वस्तु iv) इनमें से कोई नहीं

ग) सभ्यता क्या है?

i) खोजने की योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा ii) योग्यता, प्रवृत्ति

iii) आविष्कृत वस्तु iv) इनमें से कोई नहीं

घ) कौन परिष्कृत आविष्कर्ता है?

i) जिस व्यक्ति में पहली चीज़, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में नहीं होगी, वह

ii) जिस व्यक्ति में पहली चीज़, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में होगी, वह

iii) जिस व्यक्ति में पहली चीज़ होगी, वह iv) इनमें से कोई नहीं

ङ) यहाँ आग व सुई-धागे क्या है-

i) संस्कृति ii) सभ्यता iii) आविष्कार iv) इनमें से कोई नहीं

2. आग के आविष्कार में कदाचित .....आखिर यह मोती भरा थाल क्या है?

क) आग के आविष्कार में किसकी प्रेरणा रही है?

i) शीतोष्ण से बचने ii) शरीर को सजाने iii) पेट की ज्वाला iv) इनमें से कोई नहीं

ख) सुई-धागे के आविष्कार में किसकी प्रेरणा रही है?

i) शीतोष्ण से बचने ii) शरीर को सजाने iii) उपर्युक्त दोनों iv) इनमें से कोई नहीं

ग) कौन तारों को देखता है?

i) जिसका पेट भरा है iii) जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढंगा है

ii) जिसका तन ढंगा है iv) इनमें से कोई नहीं

घ) **आग** शब्द का पर्यायवाची है?

i. वारि, नीर ii. आगंतुक, मेहमान iii. अनल,पावक iv. जलद,पयोधर

ङ) ''**आखिर** का विलोम शब्द है-

i. अंत ii. प्रत्यक्ष iii. शुरुआत iv. आकांक्षा

3. और सभ्यता ? सभ्यता है .....अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?

(क) सभ्यता को किसका परिणाम कहा गया है?

i) संस्कृति ii) सभ्यता iii) आविष्कार iv) इनमें से कोई नहीं

(ख) आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराने की मानव की योग्यता को क्या कहते है?

i) संस्कृति ii) असभ्यता iii) आविष्कार iv) असंस्कृति

(ग) कल्याण-भाव से रहित संस्कृति का क्या परिणाम होगा?

i) संस्कृति ii) असभ्यता iii) आविष्कार iv) असंस्कृति

घ) सभ्यता है-

i) खाने-पीने के तरीके ii) ओढ़ने-पहनने के तरीके iii) गमना-गमन के साधन iv) उपर्युक्त सभी

ङ) 'अति' उपसर्ग से युक्त शब्द है-

i) असंस्कृति ii) असभ्यता iii) अतिरिक्त iv) इनमें से कोई नहीं

4. बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) संस्कृति का जनक कौन है?
i) पेट भरने वाला ii) संस्कृत पढ़ने वाला iii) तन ढँकने वाला iv) ज्ञान पैदा करने वाला

(ख) 'मोती भरा थाल' किसे कहा गया है?
i) आकाश में खिले तारों को ii) खेत में लगे फसलों को iii) समुद्र को iv) वन को

(ग) लेखक के अनुसार कौन संस्कृत व्यक्ति कहलाता है?
i) आविष्कार करने वाला ii) आविष्कृत वस्तु का प्रयोग करने वाला
iii) नई खोज को देखने वाला iv) समाज का कल्याण करने वाला

(घ) मनीषियों से मिलने वाला ज्ञान किसका परिचायक है?
i) हमारी उन्नति का ii) देश के विकास का
iii) मानव कल्याण का iv) उपर्युक्त सभी का

ङ) अपने पूर्वजों की खोज की गई वस्तु को अनायास प्राप्त करनेवाला व्यक्ति क्या कहलाता है?

i) बुद्धिमान ii) ज्ञानवान iii) सभ्य iv) उपर्युक्त सभी

प्रश्नोत्तर

1.**आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?**

आग ने मनुष्य को सभ्य बनने का मार्ग भी प्रशस्त किया। इसकी खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत पेट की ज्वाला, सरदी से मुक्ति, प्रकाश की चाहत तथा जंगली जानवरों के खतरे में कमी लाने की चाहत रही होगी।

2. वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?

जो व्यक्ति अपनी बुद्धि तथा योग्यता के बल पर कुछ नया अविष्कार करने की क्षमता रखता हो, उसे वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' कहा जा सकता है। जिसमें यह क्षमता जितनी अधिक होगी, वह उतना ही अधिक संस्कृत व्यक्ति होगा। जैसे, न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का अविष्कार किया, तो वह एक संस्कृत व्यक्ति था।

3.न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों?

संस्कृत मानव उसे कहा जाता है जो अपनी बुद्धि-शक्ति और योग्यता के बल पर कोई नया अविष्कार कर सके। न्यूटन ने अपनी इसी योग्यता के बल पर गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांतों की खोज की, इसलिए उसे संस्कृत मानव कहा जा सकता है। आज के समय में इस विषय पर लोगों के पास और अधिक जानकारी है परंतु उन्हें न्यूटन से अधिक सभ्य कहा जा सकता है लेकिन संस्कृत नहीं।

4.किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का अविष्कार हुआ होगा?

जब मनुष्य को अपने शरीर को ढकने और सर्दियों से बचने की आवश्यकता महसूस हुई होगी, तब सुई-धागे की खोज हुई होगी। साथ ही, मनुष्य को अपने शरीर को सजाने के लिए आवश्यकतानुसार दो कपड़े के टुकड़ों को जोड़ने के लिए भी सुई-धागे की ज़रूरत महसूस हुई होगी।

उत्तर

1. क) iii) आवश्यकता , ख) i) खोजने की योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा , ग) iii) आविष्कृत वस्तु, घ) ii) जिस व्यक्ति में पहली चीज़, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में होगी, वह, ङ) ii) सभ्यता

2. क) iii) पेट की ज्वाला, ख)iii) उपर्युक्त दोनों , ग) iii) जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढंगा है , घ) iii) अनल,पावक, ङ) iii) शुरुआत

3. क) i) संस्कृति, ख) iv) असंस्कृति, ग) ii) असभ्यता, घ) iv) उपर्युक्त सभी, ङ) iii) अतिरिक्त

4. क) iv) ज्ञान पैदा करने वाला, ख) i) आकाश में खिले तारों को, ग) i) आविष्कार करने वाला, घ) iv) उपर्युक्त सभी का, ङ) iii) सभ्य

सूरदास के पद

* सूरदास जी सगुण भक्ति मार्ग के समर्थक थे ।

* यहाँ सूरसागर के भ्रमरगीत से चार पद लिए गए हैं ।

* श्रीकृष्ण ने मथुरा जाने के बाद स्वयं न लौटकर उद्धव के जरिए गोपियों के पास योग का संदेश भेजा था ।

* वेदना में तड़पती गोपियों को योग संदेश कड़वी ककड़ी खाने के समान व व्याधि जैसे लगे ।

* उन्होंने उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते से तथा तेल की गागरी से की है ।

* योग संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम किया ।

* गोपियों के अनुसार यह योग संदेश उन लोगों के लिए है जिनका मन चकरी है ।

* गोपियाँ ज्ञान मार्ग को नहीं प्रेम मार्ग को ही पसंद करती हैं ।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1) कृष्ण की संगति में रहकर भी कौन उनके प्रेम से अछूते रहे हैं?

क) उद्धव ख) गोपियाँ ग) राधा घ) इनमें से कोई नहीं

2) कृष्ण द्वारा चुराई गई अपनी किस वस्तु को गोपियाँ वापस लेना चाहती है ?

क) मक्खन ख) धन ग) मन घ) दही

3) गोपियों द्वारा उद्धव को बड़भागी कहने का क्या कारण है ?

क) कृष्ण के प्रिय सखा होना ख) कृष्ण के समीप रहकर भी निर्गुण की बात करना

ग) उद्धव का अत्यंत ज्ञानी होना घ) इनमें सभी

4) गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए ?

क) राजा किसी भी स्थिति में प्रजा को नहीं सताता है ख) प्रजा को दुःखी नहीं करता

ग) प्रजा की रक्षा करता है घ) उपरोक्त सभी

5) हारिल पक्षी से किसकी तुलना की गई है ?

क) कृष्ण की ख) गोपियों की ग) उद्धव की घ) ब्रजवासियों की

6) प्रीति-नदी' किसके लिए प्रयोग किया गया है?

क) ऊद्धव के लिए ख) यशोदा के लिए ग) नंद के लिए घ) श्रीकृष्ण के लिए

7) गुर चाँटी ज्यौं पागी'-इस पंक्ति में 'गुर' अर्थात् गुड़ किसे कहा गया है?

क) श्रीकृष्ण को ख) उद्धव को ग) नंद को घ) गोपियों को

8)मन चकरी' से क्या अभिप्राय है?

क) मन की चालाकी ख) मन का चक्र ग) मन की अस्थिरता घ) मन की स्थिरता

9)सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए' पंक्ति में 'ब्याधि' किसे कहा गया है?

क) योग साधना को ख) भक्ति संदेश को ग) श्रीकृष्ण को घ) विरह को

10)गोपियों के अनुसार किसने राजनीति की शिक्षा प्राप्त की है?

क) कंस ने ख) नंद ने ग) श्रीकृष्ण ने घ) ऊधौ ने

11) मधुकर' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

क) भ्रमर के लिए ख) श्रीकृष्ण के लिए ग) नंद के लिए घ) उद्धव के लिए

12) गोपियों ने कृष्ण को किस प्रकार धारण किया था ?

क) मन से ख)कर्म से ग)वचन से घ)उपरोक्त सभी तरह से

13) 'जक री' शब्द का क्या अर्थ है ?

क) व्यर्थ होना ख) रटना ग) जर्जर होना घ) दुःखी होना

14) निम्नलिखित में कौन-सी रचना सूरदास की नहीं है ?

क) सूरसागर ख) सूर-सारावली ग) साहित्य लहरी घ) साहित्य अमृत

15) गोपियों ने स्वयं को 'भोरी' क्यों कहा है ?

क) वे मूर्ख थीं ख) वे छल-कपट और चतुराई से दूर थीं

ग) वे ऊधौ की बातों में आ गईं थीं घ) वे किसी का कहना नहीं मानती थीं

उत्तरमाला

1.क, 2.ग, 3.ख, 4.घ, 5.ख, 6.घ, 7क., 8.ग, 9.क,10.ग, 11.घ, 12.घ, 13.ख, 14.घ, 15.ख

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1-'सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी'- पंक्ति में गोपियों के कैसे मनोभाव दर्शाए गए हैं?

उत्तर: 'सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी' – पंक्ति में गोपियाँ योग के प्रति अपने मनोभाव प्रकट कर रही हैं। वह सोते-जागते, स्वप्न में, दिन-रात सदैव श्रीकृष्ण का ही स्मरण करती रहती हैं। ऐसे में उद्धव द्वारा दिया गया योग का संदेश उन्हें कड़वी ककड़ी के समान प्रतीत होता है, जिसे कोई खाना नहीं चाहता और न ही जिसके प्रति किसी की रूचि होती है।

प्रश्न-2 गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने प्रेमभाव की गहनता को किस प्रकार प्रकट किया है? सूरदास-रचित पदों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: गोपियों ने श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेमभाव की गहनता को प्रकट करने के लिए स्वयं को हारिल पक्षी के समान बताया है और श्री कृष्ण के प्रेम को हारिल की लकड़ी के समान बताया है जिसे वे दृढ़ता से पकड़े हुए हैं। वे मन, कर्म और वचन से श्री कृष्ण को अपने हृदय में धारण किए हुए हैं। वे श्रीकृष्ण के प्रेम में उस तरह से बँधी हुई हैं, जिस तरह गुड़ से चीटियाँ चिपटी रहती

प्रश्न-3 गोपियाँ अपनी व्यथा किस बल पर सह रही थी ?

उत्तर: गोपियाँ अपनी व्यथा श्रीकृष्ण के आने की अवधि को आधार बनाकर सह रही थी । उनको विश्वास था कि उनका प्रिय श्रीकृष्ण एक दिन ब्रज में अवश्य लौटेंगे ।

प्रश्न-4 गोपियाँ किस मर्यादा के उल्लंघन की बात कर रही हैं?

उत्तर: गोपियाँ प्रेम की मर्यादा के उल्लंघन की बात कर रही हैं । उनको कृष्ण से प्रेम वापस नहीं मिला । कृष्ण ने गोपियों के प्रेम की लाज नहीं रखी । उद्धव के द्वारा योग का संदेश भेजकर प्रेम की मर्यादा तोड़ी है।

प्रश्न-5 योग संदेश का गोपियों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: विरहाग्नि बढ़ गई । उनका मन दुखी हो गया । उद्धव को उलाहने देने लगी।

प्रश्न-6 गोपियों को श्रीकृष्ण को राजधर्म की याद क्यों दिलानी पड़ी?

उत्तर: प्रेम आदि की पवित्र नीतिपरक बातें भूलकर कृष्ण अनीति पर उतर आए हैं । अतः योग का संदेश भेजकर प्रेम की मर्यादा के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं । इसलिए उन्हें राजधर्म की याद दिलाकर प्रेम-नीति पर लाने का प्रयास किया गया ।

प्रश्न-7 निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी। .....

.....'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यों पागी |

1) ' अपरस रहत सनेह तगा ते ' पंक्ति का क्या आशय है-

क) तुम्हारे मन में प्रेम नहीं है ख) भौंरे की तरह फूलों का रस पीते हो

ग) प्रेम के बंधन से अछूते हो घ) इनमें से कोई नहीं

2) बड़भागी किसे कहा गया है ?

क) उद्धव को ख) कृष्ण को ग) गोपियों को घ) इनमें कोई नहीं

3) गोपियाँ स्वयं को क्या समझती हैं?

क) डरपोक ख) निर्बल ग) अबला घ) साहसी

4).'पुरइनि पात' शब्द का अर्थ है-

क) तेल की गागरी ख) भाग्यवान ग) कमल का पत्ता घ) प्रेम में डूबना

5) 'प्रीति-नदी में पाउँ न बोरयौ' में कौन-सा अंलकार है?

क) उपमा ख) रूपक ग) उत्प्रेक्षा घ) अनुप्रास

राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद

पाठ का सार - यह पाठ भक्तिकाल के राम भक्तिशाखा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास द्वारा रचित ‘रामचरितमानस’ ग्रंथ के बाल कांड से लिया गया है। यह एक रोचक प्रसंग है। राजा जनक के दरबार में सीता-स्वयंवर के लिए सभी राजा-महाराजा उपस्थित हैं और श्रीराम ने शिव के धनुष को तोड़ दिया है। उसी समय महाक्रोधी परशुराम सभा में प्रवेश करते हैं और आग बबूला होने लगते हैं। वे अपने गुरु शिव के धनुष तोड़ने वाले को मार डालने वाले की धमकी देते हैं। श्रीराम परशुराम को मीठे वचन कहकर शांत करने की कोशिश करते हैं, किंतु परशुराम का क्रोध बढ़ता ही जाता है। बाद में लक्ष्मण परशुराम के क्रोध भरे वाक्यों का उत्तर व्यंग्य वचनों से देते हैं । इस प्रसंग की विशेषता है- लक्ष्मण की वीरता, व्यंग्योक्तियाँ तथा व्यंजना-शैली की सरस अभिव्यक्ति।

प्रश्न- निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प छाँटकर लिखिए-

(I) नाथ संभधनु ..... बिदित सकल संसार ||

प्रश्न - (1) परशुराम को नाथ किसने कहा था?

(i) विश्वामित्र ने (ii) लक्ष्मण ने (iii) श्रीराम ने (iv) राजा जनक ने

(2) जो सेवा का काम करे , वो कौन कहलाता है ?

(i) नौकर (ii) सेवक (iii) चौकीदार (iv) मालिक

(3) 'बचपन में हमने बहुत सारी धनुही तोड़ी' यह बात किसने कही ?

(i) राम (ii) लक्ष्मण (iii) परशुराम (iv) विश्वामित्र

(4) "तू तो काल के वश में है, अतः अपनी जीभ नहीं सँभाल पा रहा है" यह किसने कहा ?

(i) श्रीराम ने (ii) विश्वामित्र ने (iii) लक्ष्मण ने (iv) परशुराम ने

(5) परशुराम श्रीराम को अपना क्या मानने से इनकार करते हैं?

(i) शिष्य (ii) पुत्र (iii) शत्रु (iv) सेवक

(II) लखन कहा ..... परसु मोर अति घोर ||

प्रश्न- (1) लक्ष्मण के कथनों में कौन-सा भाव प्रकट हुआ है ?

(i) व्यंग्य का भाव (ii) क्रोध का भाव (iii) विनम्रता का भाव (iv) इनमें से कोई नहीं

(2) परशुराम ने अपनी भुजाओं के बल से क्या कर दिया ?

(i) धरती को क्षत्रियों से रहित (ii) क्षत्रियों का पालन (iii) गरीब लोगों की सहायता (iv) विश्व विजय

(3) परशुराम ने किसकी भुजाओं को काटा था ?

(i) राजा की (ii) सहस्त्रबाहु की (iii) राक्षस की (iv) इनमें से कोई नहीं

(4) 'अर्भक' का शाब्दिक अर्थ क्या हैं ?

(i) सोना (ii) महल (iii) बच्चा (iv) इनमें से कोई नहीं

(5) 'महिदेव' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(i) ब्राह्मण (ii) भगवान (iii) आकाश (iv) इनमें से कोई नहीं

(III) बिहसि लखनु ..... भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर ॥

प्रश्न (1) तरजनी (तर्जनी) देखकर कौन मर जाता है ?

(i) कायर व्यक्ति (ii) अहंकारी व्यक्ति (iii) कुम्हड़बतिया (iv) इनमें से कोई नहीं

(2) लक्ष्मण के कुल में किन पर वीरता नहीं दिखाई जाती है?

(i) देवता पर (ii) ब्राह्मण एवं गाय पर (iii) भगवान के भक्त पर (iv) ये सभी

(3) 'तरजनी' का अर्थ क्या है ?

(i) हाथ (ii) उँगली (iii) शरीर (iv) अँगूठे के पास की उँगली

(4) वज्र के समान कठोर वचन किसका है ?

(i) लक्ष्मण (ii) राम (iii) परशुराम (iv) विश्वामित्र

(5) 'सुराई' का अर्थ क्या है ?

(i) अपमान (ii) सम्मान (iii) वीरता (iv) कायरता

(IV) कौसिक सुनहु ..... रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥

प्रश्न- (1) परशुराम किसके प्रति अपना रोष प्रकट कर रहे हैं ?

(i) श्रीराम के प्रति (ii) विश्वामित्र के प्रति (iii) लक्ष्मण के प्रति (iv) किसी के प्रति नहीं

(2) परशुराम ने लक्ष्मण को क्या-क्या बताया ?

(i) कुबुद्धि एवं कुटिल (ii) सूर्यवंश का कलंक तथा कुल घातक (iii) काल के वश में (iv) ये सभी

(3) लक्ष्मण ने शूरवीरों की क्या पहचान बताई ?

(i) वे अपनी वीरता का बखान स्वयं नहीं करते (ii) वे क्षत्रियों से युद्ध नहीं करते

(iii) वे सबका अपमान करते हैं (iv) ये सभी

(4) अबुधु का अर्थ क्या है ?

(i) नासमझ (ii) कायर (iii) वीर (iv) शांत

(5) 'कौसिक' किसे कहा गया है ?

(i) राम को (ii) लक्ष्मण को (iii) विश्वामित्र को (iv) किसी को नहीं

(V) तुम्ह तौ कालु हाँक ..... अजहुँ न बूझ अबूझ ||

प्रश्न- (1) विश्वामित्र ने परशुराम से क्या कहा ?

(i) लक्ष्मण को दंडित करें (ii) लक्ष्मण को फरसा दिखाएँ

(iii) लक्ष्मण को समझाएँ (iv) लक्ष्मण के अपराध को क्षमा कर दें

(2) 'बाल बिलोकि बहुत में बाँचा' में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है ?

(i) अनुप्रास (ii) रुपक (iii) उपमा (iv) मानवीकरण

(3) **गाधिसूनु** किसे कहा गया है?

(i) लक्ष्मण को (ii) राम को (iii) विश्वामित्र को (iv) ब्राह्मण को

(4) **'बधजोगू'** का अर्थ क्या है ?

(i) युद्ध योग्य (ii) मारने योग्य (iii) मित्रता योग्य (iv) इनमें से कोई नहीं

(5) **'अयमय'** का अर्थ क्या है ?

(i) तांबे का बना हुआ (ii) लोहे का बना हुआ

(iii) मिट्टी का बना हुआ (iv) ये सभी

(VI) कहेउ लखन मुनि .....जल सम बचन बोले रघुकुलभानु ||

प्रश्न- (1) कृसानु का अर्थ क्या है ?

(i) जल (ii) वायु (iii) अग्नि (iv) क्रोध

(2) किसने लक्ष्मण को बोलने से रोका ?

(i) राजा जनक ने (ii) राजा दशरथ ने (iii) विश्वामित्र ने (iv) श्रीराम ने

(3) परशुराम के लिए अभी किसका ऋण शेष था ?

(i) माता का (ii) पिता का (iii) गुरु का (iv) भाई का

(4) श्रीराम के वचनों को किसके समान कहा गया है ?

(i) आहुति के समान (ii) जल के समान (iii) कुठार के समान (iv) फरसे के समान

(5) 'द्विजदेवता घरहि के बाढ़े' पंक्ति में कौन किससे कुछ कह रहा है ?

(i) परशुराम लक्ष्मण को (ii) लक्ष्मण परशुराम को

(iii) विश्वामित्र परशुराम को (iv) श्रीराम परशुराम को

उत्तरमाला (पठित पद्यांश)

प्रश्न. I	1. iii	2. ii	3. ii	4. iv	5. iv
II	1. i	2. i	3. ii	4. iii	5. i
III	1. iii	2 iv	3. iv	4.iii	5.iii
IV	1. iii	2 iv	3. i	4.i	5.iii
V	1. iv	2 i	3. iii	4.iv	5.ii
VI	1. iii	2 iv.	3. iii	4.ii	5.ii

प्रश्न 1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए ?

उत्तर–परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने शिव धनुष के टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए थे-

*. लक्ष्मण कहते हैं कि बचपन में हमने ऐसी कई धनुहियाँ तोड़ी हैं परंतु आप कभी भी क्रोधित नहीं हुए। इसी धनुष से आपका इतना मोह क्यों है ?

*. मुझे तो यह धनुष और धनुषों के जैसा ही साधारण लगा।

*. इस धनुष के टूट जाने से मुझे तो कोई लाभ या हानि नजर नहीं आती है।

प्रश्न 2. श्री राम के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- भगवान श्री राम मर्यादा, विनम्रता, धैर्य व सहनशीलता के प्रतीक हैं। वे सदैव बड़ों का आदर व सम्मान करते थे। इसीलिए उन्होंने धनुष के टूटने पर क्रोधित परशुराम को शांत करने का प्रयास किया और विनम्र निवेदन कर परशुराम से कहा कि "धनुष तोड़ने वाला आपका ही कोई एक दास होगा"।

प्रश्न 3. लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

उत्तर- लक्ष्मण – यह धनुष तो श्रीराम के छूते ही टूट गया । इसमें रघुपतिजी का कोई दोष नहीं हैं। इसीलिए हे मुनि ! आप बिना कारण के ही क्रोधित हो रहे हैं।

परशुराम जी – (परशुराम जी अपने फरसे की ओर देखकर बोले) हे बालक !! क्या तुम मेरे स्वभाव के बारे में नहीं जानते हो ।

प्रश्न 4. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं ?

उत्तर- लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्न विशेषताएँ बताईं-

* वीर योद्धा शांत, विनम्र एवं साहसी होते हैं।

*. वीर कभी भी अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते हैं बल्कि दूसरे लोग उनकी वीरता की प्रशंसा करते हैं।

*. वीर सदैव दूसरों का आदर व सम्मान करते हैं।

*. वीर कभी भी अपनी वीरता पर अभिमान नहीं करते हैं और युद्ध भूमि में शत्रु के सामने अपनी वीरता का बखान करने के बजाय युद्ध में वीरता दिखाते हैं।

प्रश्न 5 .निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचानकर लिखिए

(क) बालकु बोलि बधौं नहि तोही।

उत्तर – 'ब' वर्ण की बार बार आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार हैं ।

(ख) कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।

उत्तर – इसमें दो अलंकारों का प्रयोग हुआ हैं।

* कोटि-कुलिस में 'क' वर्ण की बार बार आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार हैं ।

*. कोटि-कुलिस सम बचनु में उपमा अलंकार हैं।क्योंकि परशुराम के वचनों की तुलना बज्र से की गई है।

(ग) तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। ।

बार बार मोहि लागि बोलावा ॥

उत्तर –कालु हाँक जनु लावा में उत्प्रेक्षा अलंकार हैं।

बार-बार मोहि लागि बोलावा – पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

आत्मकथ्य

छायावादी शैली में लिखी गई इस कविता में जयशंकर प्रसाद ने जीवन के यथार्थ एवं अभाव पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है । जयशंकर प्रसाद ने प्रस्तुत कविता में ललित, सुंदर एवं नवीन शब्दों और बिंबों का प्रयोग किया है । इन्हीं शब्दों एवं बिंबों के सहारे उन्होंने बताया है कि उनके जीवन की कथा भी किसी एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की कथा की तरह ही है । इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे महान और दिलचस्प कहकर लोग वाह-वाह करेंगे ।

I. निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्नों के सही उत्तरवाले विकल्प चुनकर लिखिए -

मधुप गुन – गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी ,.....

..... तुम सुनकर सुख पाओगे , देखोगे – यह गागर रीती ।

1. आत्मकथ्य- शब्द का क्या अर्थ है ?

अ. अपने बारे में कहना आ. अपने बारे में मौन रहना
इ. अपनी कमियाँ बताना ई. दूसरों की बात सुनना

2. मधुप- किसका प्रतीक है ?

अ. भ्रमर आ. मन इ. प्रेयसी ई. दोस्त

3. गहरे नीले आकाश में अनगिनत लोगों ने क्या लिखे हैं ?
अ. आत्मकथा आ. कविता इ. कहानियाँ ई. गीत

4. कवि अपनी बीती बातों को क्यों नहीं बताना चाहता ?

अ. कायरता के कारण आ. समाज से डरता है
इ. कमियाँ और कमजोरियाँ बाहर आएंगी ई. मन दुखी हो जाएँगे

5. मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ-किस ओर संकेत करता है ?

अ. जीवन की कठिनाइयों की ओर आ. ढलती उम्र एवं जीवन के आनंद की समाप्ति की ओर
इ. निराशा की ओर ई. सूखे की ओर

6. कवि ने यहां अपने जीवन के किस पक्ष का उल्लेख किया है ?

अ. बचपन का आ. दुखद पक्ष का इ. वृद्धावस्था का ई. सुखद पक्ष का

7. कवि ने यहां गागर रीति किसे कहा है ?

अ. अभावपूर्ण ज़िंदगी को आ. खाली घड़े को इ. अज्ञानता को ई. सुखद जीवन को

8. आत्मकथ्य-कविता किस काल की रचना है ?

अ. रीतिकाल आ. छायावाद युग इ. भक्तिकाल ई. आदिकाल

9. मधुप गुन – गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी – पक्ति में प्रयुक्त अलंकार लिखिए-

अ. उपमा आ. अनुप्रास इ. यमक ई. मानवीकरण

II. निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्नों के सही उत्तरवाले विकल्प चुनकर लिखिए

किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले – .....
..... अरे खिल – खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की ।

1. काव्यांश में "सरलते" संबोधन किसके लिए है ?

अ. अपने सरल स्वभाव के लिए आ. अपने निडर स्वभाव के लिए
इ. विनम्र स्वभाव के लिए ई. उपर्युक्त सभी

2. कवि ने मधुर चाँदनी रात किसे कहा है ?

अ. सुहावनी चाँदिनी रात को आ. चांदिनी चौक की रात को
इ. जीवन की मीठी यादों को ई. जीवन की खुशी को

3. कवि अपने जीवन को कैसा बताता है ?

अ. सुखद जीवन आ. विडम्बना और छलाव युक्तजीवन
इ. प्रेरक जीवन ई. रोचक जीवन

4. कवि अपने जीवन के किन अनुभवों को सबसे बांटना नहीं चाहते है ?

अ. निजी आ. पारिवारिक इ. सामाजिक ई. रोचक

5. प्रवंचना का समानार्थी शब्द -

अ. धोखा आ. चालाक इ. स्वार्थ ई. रोचक

6. " खाली करने वाले तथा मेरा रस ले अपनी भरने वाले " कवि का संकेत किस ओर है ?

अ. साहित्यिक मित्रों की ओर आ. घर के सदस्यों की ओर
इ. पड़ोसियों की ओर ई. सहकर्मियों की ओर

7. खिल-खिलाकर हँसते होनेवाली बातें किन्हें कहा है ?

अ. हँसी-मजाक युक्त बात को आ. हँसकर कहने वाली बात को
इ. खुशियों से युक्त बात को ई. दुःखों से युक्त बात को

उत्तर माला : I 1. अ 2. आ 3. अ 4. इ 5. अ 6. आ 7. अ 8. आ 9. ई

II 1. अ 2. इ 3. आ 4. अ 5. अ 6. अ 7. इ

उत्साह - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

मुख्य बिंदु: -

- उत्साह कविता एक आह्वान गीत है। कवि बादल में क्रांति का स्वर सुनते हैं। वे उसके गडगडाते स्वर पर मुग्ध हो जाते हैं।
- कवि बादल को पौरुष का प्रतीक मानते हुए घोर गर्जन द्वारा आकाश को घेर लेने का आह्वान करते है।
- कवि बादलों का आह्वान करके कहते हैं कि अपने काले घुंघराले बालों से संसार पर छा जाए।
- कवि चाहते हैं कि तप्त और व्यथित संसार को अपने जल से शीतल कर दे ।
- अलंकार :* घेर -घेर घोर गगन में, ललित ललित काले घुघराले में अनुप्रास अलंकार हैं।

  * बाल कल्पना के से पाले - उपमा अलंकार है।

<u>बहुविकल्पीय प्रश्न -उत्तर</u>

1.बादल गरजो में कवि बादल को गरजने के लिए क्यों कह रहा है?

(क) लोगों को डराने के लिए (ख) धरती की प्यास बुझाने और दुष्टों को डराने के लिए

(ग) बरसने के लिए (घ) जो गरजते हैं वे बरसते नहीं

2 कवि बादल को किस का प्रतीक मानता है?

(क) विप्लव का (ख) युद्ध का (ग) शांति का (घ) हरियाली का

3.कवि बादल में किसका स्वर सुनता है?

(क) वेदना का (ख) खुशी का (ग) क्रांति का (घ) इनमें से कोई नहीं

4.बादल गरजो में कौन सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास (ख) उपमा (ग) मानवीकरण (घ) रूपक

5.तप्त धारा का सांकेतिक अर्थ क्या है?

(क) गर्म धरती (ख) सूखी धरती (ग) दुखों से पीडित धरती (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-माला

1. उत्तर- धरती की प्यास बुझाने और दुष्टों को डराने के लिए 2. उत्तर- विप्लव का

3. उत्तर - क्रांति 4. उत्तर- मानवीकरण 5. उत्तर-(ग) दुखों से पीडित धरती

<u>अभ्यास हेतु अतिरिक्त प्रश्न</u>

1.उत्साह कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर - कवि ने उत्साह कविता में बादलों का आह्वान करते हुए क्रांति लाने केलिए कहा है। इस कविता में बादलों को क्रांतिदूत मानकर सोए ,अलसाए और कर्तव्य विमुख लोगों में उत्साह भरना ही उत्साह कविता का उद्देश्य है।

2.बरसात के अभाव में लोगों व धरती की क्या दशा हो रही थी ?

उत्तर - बादलों के न बरसने से या बरसात के अभाव में लोगों में बेचैनी एवं व्याकुलता बढ गई थी। भीषण गर्मी के कारण सारी धरती जलती सी प्रतीत हो रही थी । पृथ्वी पर चारों ओर नीरस तथा उदासीनता व्याप्त थी।

3.कवि निराला बादलों में क्या - क्या संभावनायें देखते हैं?

उत्तर- निराला जी बादलों में निम्नलिखित संभावनायें देखते हैं -

- बादल लोगों को क्रांति लाने योग्य बनाने में समर्थ हैं।
- बादल धरती और धरती के प्राणियों को नव जीवन प्रदान करते हैं।
- बादल धरती और लोगों का ताप हरकर शीतलता प्रदान करते हैं।

4.बादल किसका प्रतीक है?

उत्तर - बादल क्रांति का प्रतीक हैं । समाज में क्रांति रूपी बादल के आगमन से भीषण गर्मी रूपी कठिनाइयां समाप्त होंगी और सब कहीं उमंग एवं सुखमय वातावरण छा जाएगा, अर्थात क्रांति के बाद नए समाज का सृजन होगा।

5."बाल कल्पना के से पाले "पंक्ति का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर - पंक्ति का भाव है कि जिस प्रकार बच्चों की कल्पनायें पलभर में ही बनती और बिगडती हैं। उसी प्रकार बादल भी अचानक अज्ञात दिशा से आ जाते हैं और पल भर में ही गायब भी होने लगते हैं।

<u>बहुविकल्पीय प्रश्न</u>

1.बादल से कवि ने किसे घेर लेने का आह्वान किया है?

(क) गगन को (ख) रत्नाकर को (ग) धरती को (घ) तीनों को

2.बादल के लिए कविता में क्या विशेषण प्रयुक्त हुआ है?

(क) ललित (ख) काले (ग) घुंघराले (घ) तीनों

3.उत्साह कविता में किस दिशा से अनंत के घन आने की बात कही है?

(क) पूर्व (ख) पश्चिम (ग) ज्ञात (घ) अज्ञात

4.विश्व के निदाघ से कौन विकल व उन्मन है?

(क) नेता (ख) समस्त जन (ग) अभिनेता (घ) कोई

5.कविता में नवजीवन वाले किसे कहा गया है?

(क) बादलों को (ख) कवि को (ग) पेडों को (घ) वर्षा को

उत्तर-माला

1.उत्तर- गगन को 2. उत्तर - तीनों 3. उत्तर- अज्ञात 4.उत्तर- समस्त जन 5. उत्तर- बादलों को

अट नहीं रही है ।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

सार : यह कविता फागुन महीने की मादकता को प्रकट करती है। कवि फागुन महीने के सौंदर्य से इतना अभिभूत है कि फागुन की आभा समाती हुई नहीं दिख रही है। फागुन मास में सर्वत्र फागुन का उल्लास तथा सौंदर्य नजर आता है। सुंदर शब्दचयन और लय ने कविता को भी फागुन की ही तरह ललित एवं सुंदर बना दिया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1) कविता 'अट नहीं रही है' में किस ऋतु के प्राकृतिक सौदर्य का चित्रण किया गया है?

उत्तर- वसंत ऋतु

2) किस महीने में चारों तरफ हरियाली छा जाती है?

उत्तर- फागुन

3) फागुन मास के कारण लोगों के चेहरे पर क्या है?

उत्तर- ख़ुशी

4) फागुन मास में कैसी हवाएँ चल रही हैं ?

उत्तर- मादक

प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1 .कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही हैं ?

उत्तर –फगुन माह खिले फूलों की खूबसूरती से, हरे पत्तों से भरी डालों से, फूलों के सुगंध से भरे वातावरण से सुंदर व मनमोहक है ।इसी लिए कवि की आँख फागुन की सुंदरता से नहीं हट रही हैं ।

प्रश्न 2. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है?

उत्तर: प्रस्तुत कविता में कवि ने फागुन की सर्वव्यापी सौंदर्य और मादक रूप दर्शाया है। पेड़ पौधे लाल – हरी पत्तियों व फूलों से भरे हैं । खुशबू वातावरण को सुगंधित कर रही है। चारों ओर हरियाली छा गई है ।

प्रश्न 3. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

उत्तर: फागुन बाकी ऋतुओं से निम्नलिखित प्रकार से भिन्न है:

क- इस समय प्रकृति की शोभा अपने चरम पर होती है।

ख- पेड़-पौधे नए पत्तों, फल और फूलों से लद जाते हैं।

ग- हवा सुगंधित हो उठती है।

घ- आकाश स्वच्छ होता है।

ङ- बाग-बगीचों और पक्षियों में उल्लास भर जाता हैं।

प्रश्न 4. इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ बताएँ ।

उत्तर: महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी ' जी छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं। उनके काव्य-शिल्प की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

क- कविताओं में तत्सम शब्दों का प्रयोग उचित मात्रा में किया गया है।

ख- कविताओं में अनुप्रास, रूपक, यमक, उपमा आदि अलंकारों कासार्थक प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 5 'उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो' के आलोक में बताइए कि फागुन लोगों के मन को किस तरह प्रभावित करता है?

उत्तर-'उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो' से ज्ञात होता है कि फागुन में फूल एवं पत्तियों का सौंदर्य वातावरण को मनोहर बनाता है तथा फूलों का सुगंध हवा में मादकता भर देती है। ऐसे में लोगों का मन कल्पनाओं में खोकर उड़ान भरने लगता है।

प्रश्न 6 कहीं साँस लेते हो' ऐसा कवि ने किसके लिए कहा है और क्यों? (या कवि ने फागुन का मानवीकरण कैसे किया है?)

उत्तर-फागुन महीने में तेज हवाएँ चलती हैं जिनसे पत्तियों की सरसराहट के बीच साँय-साँय की आवाज़ आती है। इसे सुनकर ऐसा लगता है, मानो फागुन साँस ले रहा है। कवि इन हवाओं में फागुन के साँस लेने की कल्पना कर रहा है। इस तरह कवि ने फागुन का मानवीकरण किया है।

प्रश्न 7 फागुन महीने के सांस लेने का संसार पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

उत्तर :कवि ने फागुन महीने का मानवीकरण किया है। उसके साँस छोड़ने से पूरे परिवेश में सुगंध व्याप्त हो गई है। ऐसे चलनेवाली हवाओं से सर-सर आवाज आ रही है। सुगंध को मानो पर लग गए हैं और उसने सारे आकाश को सुगंध से भर दिया है।

प्रश्न 8 फागुन में ऐसा क्या होता है जो अन्य ऋतुओं से भिन्न होता है?

उत्तर :फागुन महीने में वसंत के आगमन के साथ पेड़-पौधों की शाखाएं नव पल्लवों से भरकर हरी-लाल लगती हैं। पुष्पों की मंदगंध पूरे परिवेश में फैलकर परिवेश को मादक बना देती है। ऐसा केवल वसंत ऋतु के फागुन महीने में ही होता है ।

प्रश्न 9 'अट नहीं रही है' कविता में कवि क्या संदेश दे रहा है ?

उत्तर :'अट नहीं रही है' कविता में फागुन महीने की प्रकृति की व्यापकता एवं सौंदर्य का चित्रण किया गया है। कवि कामना करते हैं कि व्यक्ति प्राकृतिक सौंदर्य के दर्शन का लाभ उठाएँ । जीवन में प्रसन्नता का संचार हो।

यह दंतुरित मुसकान

कविता से संबंधित बहुविकल्पीय प्रश्न –

1. कवि ने किसकी मुस्कान को दंतुरित मुसकान कहा है ?

(वृद्ध की , युवक की , बच्चे की , युवती की)

उत्तर-बच्चे की

2. कवि को एकटक कौन निहार रहा है ?

(लडकी , किसान , शिशु , मेहमान)

उत्तर-शिशु

3. बच्चे की दंतुरित मुसकान किसमें जान डाल देगी ?

(रोगी में , पक्षी में , कमज़ोर में , मृतक में)

उत्तर-मृतक में

4. झोंपडी में कमल खिलने का क्या आशय है ?

(फूल खिलना , पैसा कमाना , अमेएर होना , गरीबी में आनंद होना)

उत्तर-गरीबी में आनंद होना

5. बच्चे की मुस्कान में किसे पिघलाने की शक्ति है ?

(बर्फ , क्रोध , कठोर व्यक्ति का मन , पत्थर)

उत्तर-कठोर व्यक्ति का मन

6.जलजात शब्द का अर्थ क्या है ?

(बादल , वर्षा , कमल , मछली)

उत्तर-कमल

7. किसके प्राणों का स्पर्श पाकर कठिन पाषाण पिघल गया होगा ?

(कवि के , माता के , बच्चे के , पिता के)

उत्तर-बच्चे के

8. अनिमेष देखना – का अर्थ क्या है ?

(रुक-रुक कर देखना , कभी-कभी देखना , लगातार देखना , इनमें से कोई नहीं)

उत्तर-लगातार देखना

9. कवि और छोटे बच्चे के परिचय के माध्यम कौन बनता है ?

(बच्चे की दादी , बच्चे की माता , बच्चे की बहन , बच्चे का भाई)

उत्तर-बच्चे की माता

10. किसकी अंगुलियाँ बच्चे को मधुपर्क कराती है ?

(कवि की , माता की , बहन की , डॉक्टर की)

उत्तर-माता की

11. कवि को क्या छविमान लगती है ?

(धुप , छाया , बच्चे की मुसकान , बच्चे की माँ)

उत्तर-बच्चे की मुसकान

12. नन्हे शिशु का शरीर किसकी तरह खिल उठता है ?

(सूरज , कमल , चाँदनी , इनमें से कोई नहीं)

उत्तर-कमल

13. बच्चा कवि को क्यों नहीं पहचान पाया ?

(बच्चा पहली बार देख रहा है , बच्चे का उनसे कोई परिचय नहीं था , कवी बच्चे के जन्म के बाद पहली बार घर पहुँच रहा था , उपर्युक्त सभी कथन सही है)

उत्तर-उपर्युक्त सभी कथन सही है |

14. कवि ने अपने आपको क्या कहा ?

(अभागा , कठोर ह्रदय , चिर प्रवासी , बेरहम)

उत्तर-चिर प्रवासी

15. कवि ने किसे धन्य माना ?

(स्वयं को , बच्चे की माँ को , बच्चे और माँ को , इनमें से कोई नहीं)

उत्तर-बच्चे और माँ को

16. प्रस्तुत कविता का कवि कौन है ?

(निराला , नागार्जुन , ऋतुराज , जयशंकर प्रसाद)

उत्तर-नागार्जुन

17. दंतुरित मुसकान – कविता की भाषा कैसी है ?

(मैथिली भाषा , ब्रज भाषा , अवधी भाषा , संस्कृत निष्ठ खडी बोली)

उत्तर- संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली

फसल (कविता) कवि का नाम - नागार्जुन

फसल शब्द सुनते ही खेतों में लहलहाती फसल आँखों के सामने आ जाती है लेकिन फसल है क्या और प्रकृति और मनुष्य के सहयोग से ही सृजन संभव है । कवि के अनुसार नदियों के पानी का जादू, मनुष्यों के श्रम का परिणाम ,पानी, मिट्टी, धूप और हवा का मिल-जुला रूप है फसल ।

भाषा- खडी बोली , आधुनिक काल की कविता

प्रश्नोत्तर:

1.फसल को किसका जादू बताया है और क्यों ?

उ. फसल नदियों के पावन जल का जादू है । नदियों के जल के सिंचन से ही खेतों में फसलें लहलहाती हुई दिखाई देती हैं ।

2. फसल के उत्पन्न और फलदायी होने में मनुष्य के हाथों की महिमा क्या है ?

उ. फसल के उत्पादन में किसान जैसे अनेक मनुष्यों ने अपने हाथों से कठोर परिश्रम किया, जिसके परिणाम स्वरूप सारी धरती के जीवों को अन्न प्राप्त होता है।

3. फसल पानी का जादू और हाथों के स्पर्श की महिमा कैसे है ?

उ. नदियों के पावन जल का और किसान के महिमामंडित हाथों की मेहनत का परिणाम फसल है । दोनों के समान योगदान से ही हमें लहलहाते खेत दिखाई देते हैं ।

4. फसल को मिट्टी का गुण-धर्म क्यों कहा गया है ?

उ. पानी, धूप, वायु के अतिरिक्त फसल मिट्टी के गुणों पर आधारित होती है । हर फसल को अलग अलग खनिज तत्वों से युक्त मिट्टी की आवश्यकता होती है। जो मिट्टी जितनी उपजाऊ होती है,उतनी अच्छी व पौष्टिक फसल उगाई जाती है ।

5.कवि ने फसल के निर्माण में कृषक के परिश्रम को अधिक महत्व दिया है, क्यों ?

उ. फसल के निर्माण में कृषक का अपना अथक प्रयास होता है। समय- असमय की चिंता किए बिना कृषक अपने खेत को तैयार करके बीज बोने से लेकर फसल तैयार होने तक खूब मेहनत करते हैं, इसलिए कवि ने कृषक के परिश्रम को अधिक महत्व दिया है ।

संगतकार

काव्यांश के आधार पर बहुविकल्पीय प्रश्न:

1. मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती .....

..... वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से

क.मुख्य गायक के गायन की क्या विशेषता होती है ?

i) उसका स्वर अत्यंत आत्मविश्वास से भरा हुआ होता है | ii) उसका स्वर कांपता हुआ होता है |
iii) उसका गायन रसहीन होता है | iv) उसका स्वर प्रभावशाली नहीं होता है |

ख. मुख्य गायक की आवाज़ कैसी है?

i) चट्टान की तरह भारी ii) कमज़ोर iii) काँपती हुई iv) सुंदर

ग. कवि ने इन पंक्तियों में किसके महत्व को बताया है?

i) संगीतकार की ii) संगतकार की iii) गीतकार की iv) तबला वादक की

घ. संगतकार और मुख्य गायक का रिश्ता है-

i) छोटा भाई ii) दूर का रिश्तेदार iii) शिष्य iv) कुछ भी हो सकता है

ङ. संगतकार की आवाज़ कमजोर और कांपती हुई लगाती है, क्योंकि -

i) उसे मुख्य गायक के समक्ष अपनी श्रेष्ठता का बोध होता है |

ii) उसे मुख्य गायक के समक्ष अपनी लघुता का बोध होता है |

iii) संगतकार उम्र में छोटा होता है |

iv) संगतकार बूढा हो चुका होता है |

उत्तर: क. (i) ख. (i) ग. (ii)घ. (iv) ङ. (ii)

2. तारसप्तक में बैठने लगता है उसका गला .....

..... उसे विफलता नहीं उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

क)संगतकार मुख्य गायक को सहारा देता है जब मुख्य गायक

i) का गला बैठने लगता है | ii) अकेला पड़ जाता है |

iii) राग को दुबारा गाता है | iv) उपरोक्त सभी

ख) संगतकार की आवाज में हिचकिचाहट की वजह क्या है ?

i) संगतकार की थकावट ii) राग का भूलना

iii) गला बैठना iv) जानबुझकर अपनी आवाज को दबाना |

ग) मुख्य गायक की बुझती आवाज़ को कौन ढाढ़स बँधाता है?

i) दर्शक ii) कवि iii) गुरु iv) संगतकार

घ) संगतकार मुख्य गायक को संभालने के लिए क्या करता है?

i) उसे हटाकर गाने लगता है ii) उसके स्वर में अपना स्वर मिला देता है

iii) तुरंत दूसरे गायक को बुलाता है iv) उपरोक्त कोई नहीं

ङ) संगतकार अपनी आवाज़ को ऊँचा क्यों नहीं उठाता?

i) पेशे की मजबूरी है ii) उसे स्तरीय संगीत का ज्ञान नहीं होता

iii) उपर्युत दोनों iv) मुख्य गायक की श्रेष्ठता कायम रखने हेतु

उत्तर: क. (iv) ख. (iv) ग. (iv) घ. (ii) ङ. (iv)

3. दो अंकीय प्रश्न: (25-30 शब्दों में उत्तर)

क] संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

संगतकार के माध्यम से कवि किसी भी कार्य अथवा कला में लगे सहायक कर्मचारियों और कलाकारों की ओर संकेत कर रहा है। वे सहायक कलाकार स्वयं को महत्त्व न देकर मुख्य कलाकार और मुख्य व्यक्ति के महत्त्व को बढ़ाने में अपनी शक्ति लगा देते हैं ।

ख] संगतकार अपने स्वर को ऊँचा न उठाने का प्रयास क्यों करता है?

संगतकार अपने स्वर को ऊँचा न उठाने का प्रयास इसलिए करता है ताकि मुख्य गायक की श्रेष्ठता बनी रहे। संगतकार भी संगीत में अत्यंत प्रवीण होता है, परंतु गायक की गरिमा को ध्यान में रखकर मानवीयता दर्शाते हुए अपने स्वर को धीमा रखता है।

ग] तारसप्तक में गाने के कारण मुख्य गायक को कैसा महसूस होता है ?

लगातार तारसप्तक में गाते रहने के कारण मुख्य गायक का गला बैठ जाता है और उसकी आवाज बिखरने लगती है, तब उसकी प्रेरणा भी उसका साथ छोड़ देती है |

घ) संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?

वे गायक द्वारा और कहीं गहरे चले जाने पर उनकी स्थायी पंक्ति को पकड़े रखते हैं तथा मुख्य गायक को वापस मूल स्वर पर ले आते हैं। वे मुख्य गायक की थकी हुई, टूटती-बिखरती आवाज को बल देकर सहयोग देते हैं । उन्हें अकेला नहीं होने देते, बिखरने नहीं देते।

ङ) गाए जा चुके राग को फिर से गाने की पृष्ठभूमि किस प्रकार तैयार होती है ?

जब मुख्य गायक किसी राग को गा चुका होता है, तब संगतकार पीछे से सुर को ऐसी जगह पहुँच देता है, जहाँ से गायक पहले गा चुके राग को फिर से गा पाता है | इस प्रकार संगतकार मुख्य गायक का सहायक सिद्ध होता है |

च) 'संगतकार' कविता में कवि ने आम लोगों से क्या अपेक्षा की है ?

कवि यह कहना चाहता है कि यदि मुख्य गायक के साथ संगतकार बैठा है, तो उसकी उपेक्षा मत करना, उसका सम्मान करना, उसके महत्व को समझना, क्योंकि उसके सहयोग से ही मुख्य गायक अपने गायन को प्रभावशाली बनाता है|

माता का अँचल

लेखक का नाम : शिवपूजन सहाय

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर- मेरी समझ से इसकी निम्नलिखित वजह हो सकती है:

· माँ के आँचल में वह ज़्यादा सुरक्षित महसूस करता है। माँ जननी होती है, उसी का दूध पीकर शिशु बड़ा होता है।

· अतः माँ और शिशु का एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध बन जाता। माँ बच्चे के दुख दर्द का अनुभव ठीक तरह से महसूस करती है।

· ममतामयी माँ के आँचल में उसे प्रेम और शांति की शीतल छाया मिलती है। बाह्य तौर पर माँ से अधिक नाता न रहने पर भी वह हृदय से माँ से जुड़ा था।

· साँप से भयभीत अर्थात् विपदा के समय पिता के दुलार की कम, माता के स्नेह, ममता और सुरक्षा की ज़रूरत अधिक होती है। यह सुरक्षा उसे माँ के आँचल में नज़र आती है।

प्रश्न 2 आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है ?

· बच्चों की यह स्वाभाविक विशेषता होती है कि वे अत्यंत भोले-भाले, निश्छल तथा सरल होते हैं। अपनी मनपसंद की चीजें मिलते ही,अपने साथियों का साथ पाते ही अपने दुख-सुख तथा रोना-धोना भूल जाते हैं।

· उन्हें अपने समान उम्र वाले साथियों का साथ अच्छा लगता है। वे उन्हीं के साथ तरह-तरह के खेल खेलते हैं। अपने मन की हर बात तथा हर भाव को उनके साथ बाँटते हैं।

· जब माँ भोलानाथ के सिर पर तेल लगाकार, उनकी चोटी करती हैं,कपड़े पहनाती हैं तब वह रोता-सिसकता है। बाबूजी उसे लेकर बाहर आते हैं तो हमजोली उसकी बाट जोहते मिल जाते है।

· मित्रों को देखते ही वह सिसकना भूलकर खेल-तमाशे में व्यस्त हो जाता है क्योंकि बाल मन बहुत भोला होता है।

प्रश्न 3. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

· भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री हमारे खेल और खेलने की सामग्री से पूरी तरह भिन्न है। भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने के सामान ग्रामीण पृष्ठभूमि से संबंधित हैं। जिसमें मिट्टी के ढेले के लड्डू पत्तियों की पूरी-कचौरियाँ, गीली मिट्टी की जलेबियाँ,घड़े के टुकड़े के बताशे आदि बना लेते ।

· आज हमारे खेल तथा खेल-सामग्री में बदलाव आ गया है। हमारे खेल के सामान मशीन-निर्मित हैं। हमारे खेलों में क्रिकेट, फुटबॉल, वालीबॉल, लूडो, शतरंज, वीडियो गेम, कंप्यूटर पर गेम आदि शहरी पृष्ठभूमि वाले खेल शामिल हैं।

प्रश्न 4. इस उपन्यास के अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं।

· तत्कालीन ग्राम्य संस्कृति में दिखावट- बनावट का सर्वथा अभाव था, किंतु आज की ग्रामीण संस्कृति में काफ़ी परिवर्तन दिखाई देता है। आज गाँवों में भी शहर की तरह खेलने के लिए विभिन्न प्रकार के खेलों का सामान बच्चों को खेलने के लिए दिया जाता है।आवागमन के आसान साधनों के कारण बच्चे शहर के स्कूलों में पढ़ते हैं। बच्चों में भोलापन न होकर चुस्ती और चालाकी है। बच्चे आधुनिक मनोरंजन के साधनों टी.वी. सी.डी. टेपरिकार्डर, एफ. एम. तथा डी. बी. डी. से अपना मनोरंजन कर समय बिताते हैं। जैसे गाँव के रहन-सहन में परिवर्तन आया है वैसे ही गाँव के आचरण, व्यवहार, बोल-चाल तथा वेशभूषा में भी बदलाव देखा जा सकता है। गाँव के खान-पान से लेकर चाल-ढाल सभी पर शहरीकरण का प्रभाव दिखाई देता है।

प्रश्न 5. यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

· पाठ में माता-पिता का बच्चे के प्रति असीम वात्सल्य व्यक्त हुआ है। बच्चे का पिता के साथ विभिन्न शैतानियों करना मूंछ खीचना, कुश्ती लड़ना,कंधे पर बैठना आदि क्रियाएँ पिता को बच्चे के प्रति वात्सल्य से भर देती है। पिता द्वारा बच्चे के गालों पर खट्टा-मीठा चुम्मन लेना,पिता के रोम-रोम को खुशी प्रदान करता है। पिता द्वारा बच्चे की गुस्ताखियों को माफ़ करना प्यार का ही प्रतीक है। माता द्वारा बच्चे को मुँह भर रोटी

के कौर खिलाना और यह कहना 'जब खाएगा बड़े-बड़े कौर,तब पाएगा दुनिया में ठौर' बच्चे के प्रति वात्सल्य,आशीर्वाद तथा शुभ आकांक्षाओं का चिन्ह है। बच्चे के भयभीत होने पर अपनी गोद में उठाकर उसे पुचकारना,अंगों को अपने अंचल से पोंछकर बच्चे को चूमना आदि में सहज ही माँ के ममत्व के दर्शन होते है। माता-पिता के लिए बच्चा ही खुशियों का भंडार है। उसके बिना उनका जीवन नीरस एवं सूना है।

प्रश्न 6. माता का आँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

· मेरे अनुसार प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक 'माता का अंचल' सर्वथा उपयुक्त है, क्योंकि अध्याय का अंत बच्चे के सुरक्षा कवच माँ के आँचल से ही हुआ है। बच्चा सर्प द्वारा भयभीत होने के बाद पिता से असीम प्रेम करने के बावजूद माँ की ही गोद में जाकर छुपता है। माँ का आँचल उसे भय से मुक्त कराता है। माँ की गोद में ही वह सर्वाधिक सुख तथा सुरक्षा प्राप्त करता है। माँ का महत्व बच्चे को संसार के बड़े से बड़े भय से मुक्ति प्रदान करता है। अतः अध्याय का शीर्षक विषयानुकूल तथा लेखक की भावना को पूर्णतः अभिव्यक्त करने के कारण सटीक है। इस अध्याय का शीर्षक माँ की ममता 'बाल्यकाल', 'बचपन' अथवा अतीत भी रखा जाए तो भी उपयुक्त होगा। क्योंकि पाठ में बच्चा अर्थात लेखक के जीवन का जीवंत वर्णन है।

प्रश्न 7. बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

· बच्चे का बचपन सामान्यतया उसके माता-पिता के साथ बीतता है। वे अनेक तरीकों से माता-पिता के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं; जैसे

· माता-पिता की बताई हुई अच्छी बातों पर अमल करके

· उनके साथ खेलकर,उनकी आज्ञा का पालन करके

· माँ-बाप के न चाहने पर भी वे उनकी गोद में बैठ कर

· माँ-बाप से लिपटकर, उन्हें चूमकर

· अपने नन्हें हाथों से माँ-बाप को खाना खिलाकर।

प्रश्न 8. इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

· माता का अंचल' शीर्षक पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह 1930 के आस-पास के ग्राम्य जीवन का जीवंत चित्र है। वे प्रकृति की गोद में प्राकृतिक अवलंबों में अपना खेल ढूँढ लेते थे और उसी में खुश तथा स्वस्थ रहते थे।जबकि आज हम शहरी संस्कृति में पले-बढ़े बच्चों तत्कालीन बाल सुलभ कार्यों से कोसों दूर है। वर्तमान संस्कृति में प्राकृतिक खेल की जगह टेलीविज़न,मोबाइल,विडियो गेम तथा कार्टूनों ने से ली है। प्रत्येक दृष्टिकोण से तत्कालीन बच्चों से आज के बच्चे सर्वथा भिन्न हैं। उनके खेल, खेल सामग्री, खाने पीने का ढंग, रहन-सहन सब कुछ बदल गया है।

साना साना हाथ जोड़ि- मधु कांकरिया

पाठ का सार- प्रस्तुत यात्रा वृत्तांत में लेखिका ने महानगरों की भाव-शून्यता, भागमभाग और यंत्रवत जीवन को प्रस्तुत किया है। मधु जी ने अपनी यात्राओं के अनुभवों को अपने यात्रा वृत्तांतों में शब्दबध्द किया है। पाठ में भारत के सिक्किम राज्य की राजधानी गंतोक और उसके आगे हिमालय की यात्रा का वर्णन है। लेखिका हिमालय के सौंदर्य पर मुग्ध ही नहीं होती वहां के निवासियों की मेहनत ,अभाव और गरीबी को भी रेखांकित करती हुई बता रही है कि हिमालय तक पहुंचने के लिए बनाए जाने वाले रास्तों के निर्माण में पहाड़ी लोग कठिन मेहनत कर चुके हैं, जो अत्यंत सराहनीय है। इस पाठ में पीड़ा और सौंदर्य का अद्‌भुत मेल है।

प्रश्न - उत्तर

*1. गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया है?

उ) मेहनतकश का अर्थ है कड़ी मेहनत करने वाले। लेखिका व्यक्त करना चाहती हैं कि गंतोक के लोगों को अत्यंत कड़ी मेहनत करनी पड़ती है क्योंकि यह पर्वतीय स्थल है। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण यहां की परिस्थितियां भी अत्यंत कठिन है। उन्हें पहाड़ों को काटकर रास्ता बनाना पड़ता है। पत्थरों पर बैठकर औरतें कुदाल व हथौड़े से पत्थर तोड़ती हैं ।लेखिका ने देखा कि कुछ औरतें पीठ पर बंधी टोकरी में उनके बच्चे भी बंधे रखे हैं। यहां के लोग अत्यंत कठिन परिस्थितियों में जीवन जीते हैं। वे चुनौतियों से डरते नहीं और ऐसी कठिनाइयों के बीच में भी मस्त रहते हैं। इसलिए गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा गया है।

*2. जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, वहां के भौगोलिक स्थिति एवं जन जीवन के बारे में क्या महत्वपूर्ण जानकारियां दी, लिखिए।

उ) जितेन नार्गे उस जीप का गाइड कम ड्राइवर था, जिसके द्वारा लेखिका सिक्किम की यात्रा कर रही थी। जितेन एक समझदार और मानवीय संवेदना से युक्त व्यक्ति था। उसने लेखिका को प्राकृतिक परिदृश्य, भौगोलिक स्थिति और जनजीवन के विषय में अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां दी।

प्राकृतिक परिदृश्य- सिक्किम बहुत ही खूबसूरत पहाड़ी इलाका है, जहां जगह-जगह पर धूपी के खूबसूरत नुकीले पेड़ हैं। रास्ते वीरान, संकरे, जलेबी की तरह घुमावदार हैं। थोड़ी थोड़ी दूरी पर झरने बह रहे होते हैं।

भौगोलिक स्थिति - गंतोक के 149 किमी की दूरी पर हिमालय की गहनतम घाटियां और फूलों से लदी वादियां थूमथांग में देखने को मिलती हैं। सिक्किम प्रदेश चीन की सीमा से सटा है। पहले यह स्वतंत्र रजवाड़ा था, अब यह भारत का एक अंग है।

जनजीवन -सिक्किम के लोग अधिकतर बौद्ध धर्म को मानते हैं ।यहां के लोग बड़े मेहनती हैं, इसलिए गंगटोक को मेहनतकश बादशाहो का नगर कहा जाता है। यहां की स्त्रियां भी कठोर परिश्रम करती हैं। वे चाय की पत्तियां चुनने बाग में जाती हैं। कई बार बच्चों को पीट पर बंधी 'डोको' में अपने साथ रखती हैं। यहां के लोग रंगीन कपड़े पसंद करते हैं, और उनके परंपरागत परिधान 'बोकु' है। बच्चे पढ़ने के लिए तीन-चार किलोमीटर पहाड़ी चढ़कर स्कूल जाते हैं ।शाम को वे अपनी माताओं के साथ काम करते हैं। उनका जीवन बहुत श्रम साध्य हैं।

3. जितेन नार्गे की गाइड की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं?

उ) जितेन नार्गे एक कुशल गाइड कम ड्राइवर है।

- एक कुशल गाइड को अपने क्षेत्र की प्राकृतिक एवं भौगोलिक स्थिति विभिन्न स्थानों के महत्व तथा उनसे जुड़ी रोचक जानकारियों का ज्ञान होना चाहिए। इससे पर्यटकों का मनोरंजन होता है और उनकी उस स्थान के प्रति रुचि बढ़ जाती हैं।

-जितेन नेपाली हैं, लेकिन उसे सिक्किम के जनजीवन, संस्कृति, तथा धार्मिक मान्यताओं का पूरा ज्ञान है ।वहां की कठोर जीवन परिस्थितियों से भी वह भली-भांति परिचित हैं। यह एक कुशल गाइड के आवश्यक गुण हैं।

-जितेन का सबसे अच्छा गुण है- मानवीय संवेदनाओं की समझ तथा परिष्कृत संवाद शैली। सिक्किम की सुंदरता का गुणगान ही नहीं करता, वहां के लोगों के दुख-दर्द के बारे में भी लेखिका से बातचीत करता है। उसकी भाषा बड़ी परिष्कृत और संवाद का ढंग अपनत्व से पूर्ण है।

इस प्रकार एक गाइड में आत्मविश्वास, पर्यटन का पूर्ण ज्ञान, यात्रियों को रास्ते में दर्शनीय स्थलों की पूर्ण जानकारी देने वाला और अपनेपन से आकर्षित करने वाला होना चाहिए।

4) कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

उ) यहां पहाड़ी रास्तों पर कतार में लगी श्वेत पताकाएं दिखाई देती हैं । ये सफेद पताकाएं शांति और अहिंसा की प्रतीक है। इस पर मंत्र लिखे होते हैं। ऐसी मान्यता है कि श्वेत पताका यह किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर फहराई जाती हैं। उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से बाहर किसी पवित्र स्थान पर 108 श्वेत पताकाएं

फहरा दी जाती हैं, जिन्हें उतारा नहीं जाता। वे धीरे-धीरे स्वयं नष्ट हो जाती हैं। किसी शुभ कार्य आरंभ करने पर रंगीन पताकाएं फहराई जाती हैं।

5)" कितना कम लेकर यह समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं" - इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है?

उ) लेखिका ने देखा कि आदिवासी औरतें पहाड़ों के बीच सड़कें चौड़ी करने हेतु अत्यंत दु:साध्य कार्य पत्थर तोड़ रही हैं । ज़रा सी चूक होने पर उनकी जान भी जा सकती है। लेखिका ने ऐसा दृश्य देखकर यह विचार प्रकट किया कि आदिवासी औरतें कितना कम लेकर कितना अधिक वापस लौटा देती हैं। इतना जोखिम भरा काम और उनका पारिश्रमिक इतना कम । यह बात आम जनता पर भी लागू होती हैं ।हमारे किसान, जो खेतों में काम कर अन्न पैदा करते हैं, मज़दूर जो सड़क के पुल इत्यादि बनाने का कठिन कार्य करते हैं, उसके बदले उन्हें उनकी मज़दूरी भी पूरी नहीं दी जाती। यदि पहाड़ों में यह लोग अपना कार्य करना बंद कर दें तो पर्यटन विभाग ठप्प हो जाएगा। इस प्रकार हमारे देश की आम जनता अपने जीवन की विवशताओं के कारण इतना कम लेकर बहुत कुछ वापस दे देते हैं।

6) लॉन्ग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक सी क्यों दिखाई दी?

उ) सिक्किम में एक जगह का नाम है 'कवी -लांग स्टॉक'। कहा जाता है कि यहां गाइड फिल्म की शूटिंग हुई थी। वहीं एक घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्मचक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं ।जितेन की यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है। इस स्थिति को देखकर लेखिका को लगता है कि धार्मिक- आस्थाओं, पाप- पुण्य और अंधविश्वासों के बारे में सारे भारत में एक जैसी मान्यताएं हैं।

7) अपने शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने में आप किस प्रकार योगदान दे सकते हैं? साना साना हाथ जोड़ि... पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उ)अपने शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाना न केवल हमारा कर्तव्य है बल्कि हमारे स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है। हम इस कार्य में निम्न प्रकार से अपना योगदान दे सकते हैं-

१. हमें अपने शहर को हरा-भरा तथा प्रदूषण रहित बनाने के लिए अधिक से अधिक संख्या में पेड़ लगाने चाहिए और उनकी देखभाल करनी चाहिए।

२. हमें सड़कों, गलियों तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर कूड़ा कचरा नहीं डालना चाहिए ।सभी को कूड़ा डालने के लिए कूड़ेदान के प्रयोग पर बल देना चाहिए।

३. सभी प्रकार के प्रदूषण को रोकने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करने होंगे, जैसे सार्वजनिक परिवहन प्रणाली का प्रयोग करना ,नदियों में कूड़ा न फेंकना, इत्यादि।

४. हमें अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के अनुकूल इको फ्रेंडली सामग्री के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए और प्लास्टिक का पूर्ण रूप से बहिष्कार करना चाहिए।

५. समय-समय पर पर्यावरण संरक्षण के अभियान चलाकर अपने आसपास के लोगों को जागरूक करना होगा तथा प्रत्येक व्यक्ति की पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी सुनिश्चित करनी होगी।

8) देश की सीमा पर तैनात सैनिकों के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है?

उ) देश की सीमा पर तैनात सैनिक दिन-रात अपनी जान जोखिम में डालकर हमारी रक्षा करते हैं ।हमें उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। हमारा कर्तव्य है कि हम सैनिकों से जब भी मिले ,उन्हें सदा सम्मान दें ।हमें सैनिकों के परिवारों तथा उनके बच्चों की मदद करनी चाहिए। हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे यह संकेत जाए कि हम देश के सैनिकों का अपमान कर रहे हैं। हमें अपने देश की जवानों पर गर्व करना चाहिए तथा उनका उत्साहवर्धन करना चाहिए ।संघर्ष के दिनों में हमें उनका हर प्रकार से सहयोग करना चाहिए, जिससे वे अपने कर्तव्य को भलीभांति निभा पाए। दरअसल देश की सेवा में समर्पित जवानों के प्रति अपने कर्तव्य पूर्ण करके हम एक प्रकार से देश सेवा का कार्य ही करते हैं।

9) आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए?

उ)आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ निम्न रूपों में खिलवाड़ किया जा रहा है-

* वृक्षों को अंधाधुन रूप में काटा जा रहा है ।इससे पहाड़ नंगे हो रहे हैं ।इसका पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है ।पर्यावरण प्रदूषण का खतरा निरंतर बढ़ता चला जा रहा है।

* नदियों के जल को प्रदूषित करने में भी आज की पीढ़ी आगे हैं। नदियों में कल-कारखानों की गंदगी डाली जाती है। नगरों शहरों का कूड़ा तथा गंदगी को बहा दिया जाता है।

* पर्यटन क्षेत्रों में आवागमन के बढ़ने से सुख सुविधाओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक सौंदर्य को नष्ट किया जाने लगा है ।इससे प्रदूषण फैलने के साथ-साथ क्षेत्र विशेष में अपसंस्कृति को भी बढ़ावा मिलता है।

इसे रोकने के लिए हमारी भूमिका यह होनी चाहिए - वृक्षों को काटने से रोकें। अनेक वृक्ष लगाएं तथा उनकी देखभाल करें। नदियों की स्वच्छता एवं पवित्रता को बनाए रखें उनमें गंदगी न बहाएं। प्लास्टिक- पूर्ण रूप से उपेक्षा करें।

मैं क्यों लिखता हूँ (अज्ञेय)

1. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरूपयोग है । आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ - कहाँ और किस तरह से हो रहा है?

आजकल विज्ञान का दुरुपयोग अनेक जानलेवा कर्मों के लिए किया जा रहा है। हिरोशिमा की घटना निश्चित रूप से विज्ञान का भयानकतम दुरूपयोग है । मेरी दृष्टि में आज लगभग हर क्षेत्र में विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा है । आज घातक अस्त्र -शस्त्रों की बाढ़ आना , साइबर - क्राइम का बढ़ना , प्रदूषण का जानलेवा स्तर तक पहुँचना , जगह - जगह आतंकवादी विस्फ़ोट, भ्रूण – हत्या तथा फ़सल-वृद्धि के लिए ज़हरीले रसायनों के ज़्यादा से ज़्यादा प्रयोग आदि बातें विज्ञान का ही दुरुपयोग है।

2. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान के दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?

- विज्ञान के सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों के प्रति जागरूकता बढाना।
- विज्ञान के दुरुपयोग वालेक्रियाकलापों से अपने आपको मुक्त रखना।
- अपनी मित्र –मंडली और परिचितों को इस दिशा की ओर आकर्षित करना।
- इस दिशा में काम करने वाली संस्थाओं से जुडे रहना।
- मानव एवं प्रकृति के बीच संतुलन बनए रखने के लिए प्रयास करना।

3. लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

लेखक ने अपनी जापान यात्रा के दौरान हिरोशिमा का दौरा किया था। वह उस अस्पताल में भी गया जहाँ आज भी उस भयानक विस्फोट से पीड़ित लोगों का इलाज हो रहा था। इस अनुभव द्वारा लेखक को, उसका भोक्ता बनना स्वीकार नहीं था। कुछ दिन पश्चात जब उसने उसी स्थान पर एक बड़े से जले पत्थर पर एक व्यक्ति की उजली छाया देखी, विस्फोट के समीप कोई व्यक्ति उस स्थान पर खड़ा रहा होगा। विस्फोट से विसर्जित रेडियोधर्मी पदार्थ ने उस व्यक्ति को भाप बना झकझोर दिया। उसे प्रतीत हुआ मानो किसी ने उसे थप्पड़ मारा हो और उसके भीतर उस विस्फोट का भयानक दृश्य प्रज्ज्वलित हो गया। उसे जान पड़ा मानो वह स्वयं हिरोशिमा बम का उपभोक्ता बन गया हो।

4. हिरोशिमा के एक जले हुए पत्थर पर एक उजली छाया देखकर लेखक ने क्या अनुमान लगाया?

लेखक अपनी जापान यात्रा के समय हिरोशिमा भी गए थे जहाँ पर विश्व युद्ध में अणु बम बरसाए गए थे। लेखक ने वहाँ के लोगों की त्रासदी को देखा। उसे अनुभव भी हुआ कि लोग रेडियम पदार्थ से किस प्रकार प्रभावित थे। पर अनुभव पर्याप्त नहीं होता, अनुभूति कहीं गहरी संवेदना होती है जो कल्पना के सहारे सत्य

का भोग लेती है। तब लेखक ने अनुमान लगाया कि विस्फोट के समय कोई आदमी वहाँ खड़ा होगा और विस्फोट से बिखरे हुए रेडियमधर्मी पदार्थ की किरणें उसमें रुद्ध गयी होंगी, जिन्होंने आगे बढ़कर पत्थर को झुलसा दिया और आदमी को भाप बनाकर उड़ा दिया होगा।

पत्र-लेखन

पत्र लेखन एक विशेष कला – वास्तव में पत्र मानव के विचारों के आदान-प्रदान का अत्यंत सरल और सशक्त माध्यम है। पत्र हमेशा किसी को संबोधित करते हुए लिखे जाते हैं, अतः यह लेखन की विशिष्ट विधा एवं कला है। पत्र-लेखन के निम्नलिखित गुण आवश्यक हैं |

1. सरलता - पत्र सरल भाषा में लिखना चाहिए। भाषा सीधी, स्वाभाविक व स्पष्ट होनी चाहिए। अतः पत्र में व्यक्ति को पूरी आत्मीयता और सरलता दर्शानी चाहिए।
2. स्पष्टता - जो भी हमें पत्र में लिखना है यदि स्पष्ट, सुमधुर होगा तो पत्र प्रभावशाली होगा। सरल भाषा-शैली, शब्दों का चयन, वाक्य रचना की सरलता पत्र को प्रभावशाली बनाने में हमारी सहायता करती है।
3. संक्षिप्तता - पत्र में हमें अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए। अनावश्यक विस्तार पत्र को नीरस बना देता है। पत्र जितना संक्षिप्त व सुगठित होगा उतना ही अधिक प्रभावशाली भी होगा।
4. शिष्टाचार - पत्र प्रेषक और पत्र पाने वाले के बीच कोई न कोई संबंध होता है। आयु और पद में बड़े व्यक्ति को आदरपूर्वक, मित्रों को सौहार्द से और छोटों को स्नेहपूर्वक पत्र लिखना चाहिए।
5. आकर्षकता व मौलिकता - पत्र का आकर्षक व सुंदर होना भी महत्त्वपूर्ण होता है। मौलिकता भी पत्र का एक महत्त्वपूर्ण गुण है। पत्र में घिसे-पिटे वाक्यों के प्रयोग से बचना चाहिए। पत्र-लेखक को पत्र में स्वयं के विषय में कम तथा प्राप्तकर्ता के विषय में अधिक लिखना चाहिए।
6. उद्देश्य पूर्णता - कोई भी पत्र अपने कथन या मंतव्य में स्वतः संपूर्ण होना चाहिए। उसे पढ़ने के बाद किसी प्रकार की जिज्ञासा, शंका या स्पष्टीकरण की आवश्यकता शेष नहीं रहनी चाहिए। पत्र लिखते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कथ्य अपने आप में पूर्ण तथा उद्देश्य की पूर्ति करने वाला हो।

पत्र के प्रकार : 1. अनौपचारिक पत्र 2. औपचारिक पत्र

अनौपचारिक पत्र
बधाई पत्र
शुभकामना पत्र
निमंत्रण पत्र
विशेष अवसरों पर लिखे गये पत्र
सांत्वना पत्र
किसी प्रकार की जानकारी देने के लिए
कोई सलाह आदि देने के लिए....आदि

औपचारिक पत्र

प्रार्थना पत्र
आवेदन पत्र
बधाई पत्र
शुभकामना पत्र
धन्यवाद पत्र
सांत्वना पत्र शिकायती पत्र
संपादकीय पत्र
व्यावसायिक पत्र .....आदि

अनौपचारिक पत्र

1.अपने मित्र को परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर उसे बधाई देते हुए पत्र लिखिए -
3/15 लाल नगर
आगरा

प्रिय मित्र भरत

नमस्ते
तुम्हारे पिता को फोन किया तो उन से ज्ञात हुआ कि तुमने बोर्ड की परीक्षा में अपने संभाग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह समाचार सुनकर मेरा मन खुशी से भर गया। मुझे तो पहले से ही विश्वास था कि तुम परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हो जाओगे, लेकिन यह जानकर कि तुमने परीक्षा में प्रथम श्रेणी के साथ-साथ अपने संभाग में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया है, मेरी खुशी की सीमा नहीं रही।
इस परीक्षा के लिए तुम्हारी मेहनत और नियमित अनुशासन पूर्वक पढ़ाई में ही तुम्हें इस सफलता तक पहूंचाया है।। मुझे पूरी आशा थी कि तुम्हारी मेहनत रंग लाएगी और मेरा अनुमान सच साबित हुआ।। तुम ने प्रथम स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि दृढ़ संकल्प और कठिन परिश्रम से जीवन में कोई भी सफलता प्राप्त की जा सकती है।
मैं सदा ही यह कामना करूंगा कि तुम्हें जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आने का सौभाग्य प्राप्त हो और तुम इसी प्रकार परिवार और विद्यालय का गौरव बढ़ाते रहो। इतना ही नहीं,। इसी प्रकार मेहनत करते रहो और अधिक से अधिक अंक प्राप्त कर जीवन की सभी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करो।
शेष मिलने पर
तुम्हारा मित्र
क ख ग

2.अपने छोटे भाई को सुबह घूमने के लाभ से अवगत कराते हुए पत्र लिखो
11, सुंदर नगर
सहारनपुर

प्रिय भाई संजीव

स्नेहाशीष
हम सभी यहां पर कुशल पूर्वक हैं। आशा है तुम सब भी वहां पर स्वस्थ एवं कुशल होंगे। मां के पत्र से पता चला कि तुमने अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस सफलता के लिए तुम्हें हार्दिक बधाई। माँ ने यह भी लिखा है कि तुम अपनी अगली परीक्षा की तैयारी में लगे हुए हो और रात को बहुत देर तक पढ़ते हो। रात को देर तक जगने की वजह से सुबह देर से उठते हो। अपने स्वास्थ्य के प्रति तुम्हारी लापरवाही साफ दिखाई दे रही है।
देखो संजीव, तुम जानते हो स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। यदि शरीर स्वस्थ नहीं होगा तो मन कैसे स्वस्थ रहेगा? यदि मन अस्वस्थ है तो विचार भी स्वस्थ नहीं होंगे। शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम की आवश्यकता होती है। तुम यदि व्यायाम नहीं कर सकते तो कम से कम सुबह उठकर घूमने अवश्य जाया करो।
प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व बिस्तर छोड़कर खुली हवा में घूमने से शरीर का सारा आलस्य भाग जाता है। अंग अंग खुल जाता है और इस समय नदी पार्क या बगीचे की सैर मन को आनंद देती है। जल्दी सोने और जल्दी उठने से मनुष्य स्वास्थ्य, धनवान और बुद्धिमान बनता है। शुभम घूमने से मस्तिष्क तरोताजा हो जाता है और सारा दिन शरीर में स्फूर्ति का संचार होता रहता है। प्रातः भ्रमण आयु बढ़ाने के लिए हितकर है।। अतः तुम्हें प्रतिदिन सुबह घूमने अवश्य जाना चाहिए।
मुझे विश्वास है कि मेरा यह सुझाव तुम्हें पसंद आएगा और तुम इस पर अमल भी करोगे। मैं चाहता हूं कि तुम जितना अपनी पढ़ाई के लिए सचेत हो उतना ही ध्यान अपने स्वास्थ्य का भी रखो। मेरी कामना है कि तुम स्वस्थ और दीर्घायु हो।
घर पर मां और पिता को मेरा प्रणाम कहना और अपना ध्यान रखना।
तुम्हारा भाई
क ख ग
3. विदेश यात्रा पर जाने वाले मित्र को उसकी मंगलमय यात्रा की कामना के लिए पत्र लिखिए
12 नेहरू नगर,
प्रयागराज

प्रिय मित्र अमित

सस्नेह नमस्ते
तुम्हारा पत्र अभी अभी प्राप्त हुआ। यह जानकर खुशी हुई कि तुम 15 मार्च को अमेरिका जा रहे हो।। विदेश जाने का सपना तुम बचपन से ही देखा करते थे। सपना तुम्हारा साकार होने जा रहा है।। तुम्हारी इस अमेरिका यात्रा में मेरी अनेकों शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं। ईश्वर करे तुम्हारी यात्रा सफल हो। वह जाकर मुझे पत्र लिखते रहना और अपने अमेरिका में निवास के अनुभवों से परिचित कराते रहना।

मेरे मित्र अमित, इस बात का ध्यान रखना कि तुम भारतीय हो, अपनी सभ्यता और संस्कृति को मत भूलना।। विदेशी प्रभाव तुम्हारे व्यवहार और स्वभाव को प्रभावित ना करें।। तुम जैसे हो वैसे के वैसे ही लौट कर भारत वापस आना। मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा मित्र
क ख ग

4.जन्मदिन पर उपहार भेजने के लिए मामाजी को धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए
12 नेहरू नगर,
प्रयागराज

आदरणीय मामा जी
सादर प्रणाम

अपने जन्मदिन पर आपके द्वारा भेजी गई घड़ी प्राप्त हो गई। मुझे आपका यह उपहार कितना सुंदर और उपयोगी लगा इसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। घड़ी का अभाव मुझे कई वर्षों से खड़क रहा था पापा भी मेरी घड़ी की मांग को डालते जा रहे थे पर जाने कैसे आपने मेरे मन की बात जान ली। कई बार स्कूल आने जाने में देर हो जाती थी। अब मैं अपने आप को अनुशासित बनाने का पूरा प्रयत्न करूंगा। इस घड़ी को उपहार में पाकर मैं कितना खुश हूं, आप उसका अनुमान ही नहीं लगा सकते। इतने सुंदर और मनचाहे उपहार के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।
आदरणीय मामी जी को मेरा प्रणाम कहिए। छोटी बहन रितु की बहुत याद आती है। उसे मेरा प्यार दीजिए।
आप का भांजा
क ख ग

5.छोटी बहन को पत्र लिखकर पढ़ाई के प्रति सजग होने की सलाह दीजिए
12 जवाहर नगर
मेरठ 17 दिसंबर 2021

प्रिय सुनीता

शुभाशीष
दो दिन पहले तुम्हारी छात्रावास की मित्र का पत्र प्राप्त हुआ। शायद तुम समझ गई होंगी तो उसने यह पत्र क्यों लिखा था। आजकल तुम गलत लड़कियों के साथ अपना समय अधिक बता रही हो तथा तुम्हारा ध्यान पढ़ाई से हटकर दूसरे विषयों की ओर जा रहा है। यह जानकर हमें अत्यधिक दुख हुआ।

तुम यह बहुत अच्छी तरह जानती हो कि छात्रावास में भेजने का मूल कारण क्या था? माँ और पिताजी दोनों ही चाहते हैं कि तुम पढ़ लिखकर अपना कैरियर बनाओ और इसके लिए तुम्हें अध्ययन की तरफ ध्यान लगाना होगा। अध्ययन शील व्यक्ति ही जीवन में कुछ बन सकता है। अध्ययन केवल ज्ञान बुद्धि नहीं करता बल्कि सही रास्ता दिखाकर कुसंगति से भी बचाता है। पढ़ाई का भी अपना एक अलग ही आनंद होता है। पढ़ाई हमे साधारण व्यक्तियों की श्रेणी से ऊपर उठा देती है। नियमित रूप से पढ़ाई में ध्यान लगाने वाले व्यक्ति जीवन में बहुत आगे बढ़ते हैं और उच्च स्थान को प्राप्त करते हैं।
मैं भी चाहती हूं कि तुम मेरी बातों पर ध्यान दो और अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित कर पढ़ाई करो। तुम जीवन में निश्चित ही सफल होगी और अपने माता-पिता को गर्व करने का अवसर दोगी।
तुम्हारी बड़ी बहन
क ख ग

औपचारिक पत्र
1. अपने प्रधानाचार्य को छात्रवृत्ति के लिए आवेदन पत्र लिखिए |

सेवा में
प्रधानाचार्य
प्रभात इंटर कॉलेज
आरा

महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा ग्यारहवीं का छात्र हूँ । मैं अपनी कक्षा में प्रतिवर्ष अच्छे अंको से उत्तीर्ण होता रहा हूँ । मैं विद्यालय की क्रिकेट टीम का एक सदस्य भी हूँ । इसके अतिरिक्त मैं विद्यालय की ओर से विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अनेकों पुरस्कार ले चुका हूँ । मेरा प्रयास रहा है कि मैं विद्यालय का गौरव बढ़ा सकूँ। मैं अपनी कक्षा का मॉनिटर भी हूँ । अपने अनुशासन और अच्छे स्वभाव के कारण सभी अध्यापकों और विद्यार्थियों का स्नेह प्राप्त करता रहा हूँ ।
महोदय, मेरे पिताजी एक प्राथमिक विद्यालय में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हैं। मेरी पढ़ाई का भर उठाने में असमर्थ सा महसूस कर रहे हैं। मेरा एक छोटा भाई और दो छोटी बहनें भी हैं। मेरा आपसे निवेदन है कि घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण आप को छात्रवृत्ति देने की कृपा करें। अपनी पढ़ाई को नियमित रखने के लिए छात्रवृत्ति की बहुत आवश्यकता है। पढ़ाई छूट जाने पर मेरा भविष्य अंधकार में हो जाएगा।
मैं उच्च शिक्षा प्राप्त करके अपने पिता का सहारा बनना चाहता हूँ ताकि अपने छोटे भाई और बहनों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सहयोग कर सकूँ । आप ही मेरे इस प्रयास में मेरी मदद कर सकते हैं। मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।
धन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य

क ख ग

2.प्रधानाचार्य को छात्रवृत्ति के लिए आवेदन पत्र लिखिए |
सेवा में
प्रधानाचार्य
जागरण कॉलेज

संदेश लेखन

संदेश लेखन का अर्थ- संदेश लेखन उन लेखों को कहते हैं जिसमें शुभकामना, पर्व–त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर संदेश दिए जाते हैं।

संदेश मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं।

(1)औपचारिक

2अनौपचारिक।

औपचारिक :- कार्यालय तथा विशेष प्रकार के संदेशों में औपचारिक संदेश लेखन का प्रयोग किया जाता है।

अनौपचारिक :- अनौपचारिक संदेश लेखन मित्र परिवार तथा शुभचिंतकों को लिखा जाता है जिसमें जन्मदिन , किसी शुभ अवसर , विवाह , बधाई , धन्यवाद आदि के रूप में अनौपचारिक संदेश लेखन होता है।

(1) औपचारिक संदेश लेखन का प्रारूप –

संदेश

दिनांक : .....

समय : .....

संबोधन .....

विषय (जिस विषय हेतु सन्देश दे रहे हैं).....

.....

.....

अपना नाम

(2) अनौपचारिक संदेश लेखन का प्रारूप –

संदेश

दिनांक : .....

समय : .....

विषय (जिस विषय हेतु सन्देश दे रहे हैं).....

.....

.....

अपना नाम

उदाहरण – 1

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर देशवासियों के लिए एक संदेश लिखें।

स्वतंत्रता दिवस पर शुभकामना सन्देश

दिनांक – 15 अगस्त 2023
समय – 7:00 am
समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। आइए स्वतंत्रता दिवस के शुभ

अवसर पर हम सब मिलकर अपने देश को चहुमुखी विकास के मार्ग पर अग्रसर करने का दृढ संकल्प लेते है।
प्रधानमंत्री

उदाहरण – 2
जन्मदिन के शुभ अवसर पर एक संदेश लिखें।

जन्मदिन पर शुभकामना सन्देश
“तुम जियो हज़ार साल,
हर साल के दिन हो पचास हजार“

दिनांक – 19 नवम्बर 2023
समय – 5:00 am
प्रिय छोटे भाई आपको आपके जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं भगवान् से प्रार्थना करती हूँ कि वह आपको निरोग व् लम्बी आयु प्रदान करें और आप आपने जीवन में हर वो मुकाम हासिल करे जो आप चाहते है।
गीतिका

विज्ञापन लेखन के कुछ महत्वपूर्ण बातें -

विज्ञापन लेखन में यदि आप कुछ खास बातों का ध्यान दें तो बहुत ही आसानी से इसमें अच्छे अंक ला सकते है।

- सबसे पहली बात - विज्ञापन आकर्षक होना चाहिए।
- विज्ञापन को बॉक्स में बनाये।
- उसमे विषय से सम्बंधित चित्र का प्रयोग करे इससे उसमे खूबसूरती बढ़ जाती है।
- कोशिश करे कि कम शब्दों में ज्यादा बातें बता पाए।

- विज्ञापन में कुछ पंक्ति ऐसी लिखे जो हमेशा याद रहे इसमें आप 'स्लोगन' का प्रयोग कर सकते है।
- विज्ञापन जिस विषय पर हो उसकी विशेषता को जरूर बताये।
- विज्ञापन को और भी प्रभावशाली बनाने के लिए रंगीन पेंसिल का प्रयोग करे।
- ध्यान रहे विज्ञापन साफ सुथरा और सुन्दर लगना चाहिए।

विज्ञापन के कुछ प्रश्न-

प्रश्न1. न्यू रॉयल चाय चायपत्ती के प्रोडक्ट के लिए एक एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

प्रश्न2 .आप एक योग प्रशिक्षण केन्द्र खोलना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में युवाओं को आकर्षित करने वाला 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

प्रश्न3. आप एक योग प्रशिक्षण केन्द्र खोलना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में युवाओं को आकर्षित करने वाला 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

विज्ञापन के कुछ नमूने –

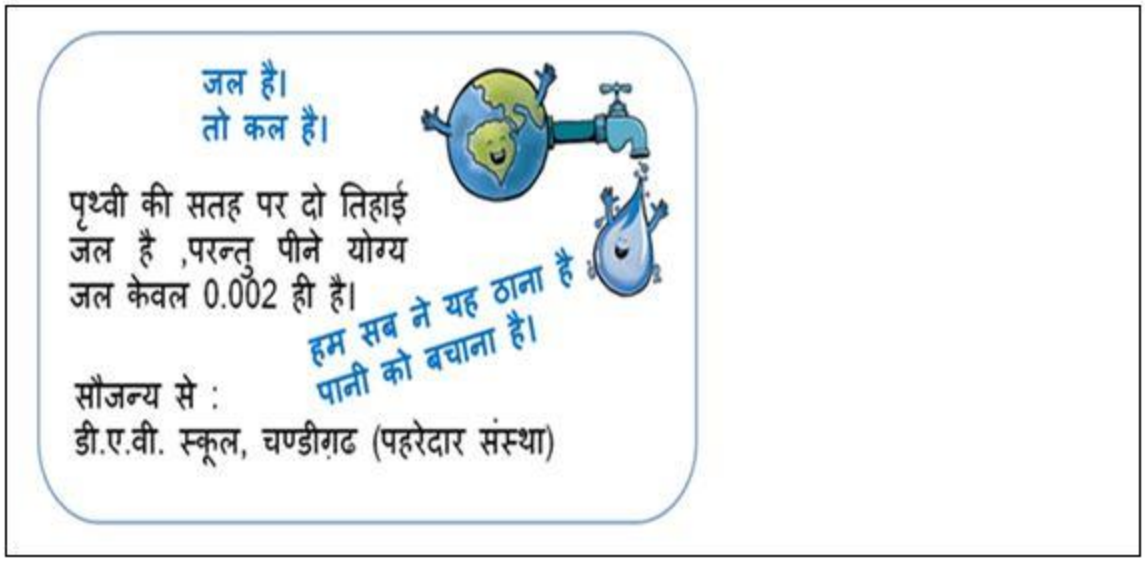

1 'रक्षक' हेलमेट बनाने वाली-कंपनी' की बिक्री बढ़ाने के लिए विज्ञापन तैयार करना -

2 मॉडर्न स्कूल ,चंडीगढ़ की रंग रचना सभा द्वारा बनाए गए चित्रों एवं कलाकृतियों की बिक्री एवं प्रदर्शिनी का उल्लेख करते हुए एक विज्ञापन तैयार कीजिए|

अनुच्छेद लेखन

आत्मनिर्भर भारत

आत्मनिर्भरता का अर्थ है अपने ऊपर निर्भर रहना जो व्यक्ति दूसरे के मुँह को नहीं ताकते वह ही आत्मनिर्भर होते हैं । वस्तुतः आत्मविश्वास के बल पर कार्य करते रहना अत्मनिर्भरता का अर्थ है -समाज निज तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करना इसका उद्देश्य है । व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र में आत्मविश्वास की भावना आत्मनिर्भरता क प्रतीक है |यह विशेष रूप से भारत के प्रधान मंत्री नरेन्द्रमोदी द्वारा 2020 मेंप्रस्तुत किया गया था| इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत को स्वावलंबन और समृद्धि की ओर ले जाना है|इसके अंतर्गत उद्योगों को प्रोत्साहित करने , नवीनतम तकनीक और विज्ञान के लिए निवेश करने ,भारतीय उत्पादों की बिक्री बढ़ाने और आर्थिक अवसरों को बढ़ावा देने पर ज़ोर दिया है | भारतीय स्टार्टप्स को प्रोत्साहित करने,नए तकनीकी संबंधी उद्योगों को बढ़ावा देने के द्वारा तकनीकी विकास को लक्ष्य कर दिया है | आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत, विभिन्न संस्कृति, कला, और शिक्षा के क्षेत्र में निवेश किया जाता है ताकि भारतीय संस्कृति और शिक्षा को बढ़ावा मिल सके। आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत, बेरोजगारी को कम करने और देश के युवाओं को प्रशिक्षण के माध्यम से सामर्थ्य का विकास किया जाता है। यह एक लंबे समय का मिशन है जो भारत को पूर्णत: आत्मनिर्भर बानाने के काम में सक्षम होगा |

कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टिफ़िश्यल इंटेलिजेंस)

कृत्रिम बुद्धिमता का अर्थ है- बनावटी दिमाग | मनुष्य जो काम अपने मस्तिष्क से करता है- सोचता है. सोखता है वही काम अब मनुष्य की बनाई हुई मशीन करे, मशीन ही सोचे, परिस्थिति को भाँपे और उसके अनुसार सही निर्णय ले| जैसे, गूगल ऐप यात्रा की लोकेशन बताने का काम मशीन से लेता है। कंप्यूटर ही हर क्षण बदलती सड़कों, स्थिति आदि को देखकर सही रास्ते बताता है। यह काम कृत्रिम बुद्धि का है। अनुवाद करते समय मशीन एक ही शब्द के दो अ 14 एक सही शब्द का चयन करती है। हमारी आवाज को सुनकर उसे लिखित रूप में प्रस्तुत करना, एलेक्सा के द्वारा गाना चलाना या प्रति उत्तर देना कृत्रिम बुद्धि के ही काम हैं। इसके लिए रोबोट के मस्तिष्क में ढेर सारी सूचनाएं दी जाती है । आजकल उन्हें सोचने और विविध निर्णयों में से डाटा के आधार पर सही निर्णय लेने का भी प्रशिक्षण है। धीरे-धीरे ये मशीनें बहुत हद तक सही निर्णय लेने लगेंगी। वर्तमान काल में एमेज़ोन, गूगल आदि कंपनियाँ अपने कार्य विस्तार के लिए इसका उपयोग कर रही हैं। गूगल पर एक चीज खरीदनी हो तो ढेर सारे विज्ञापन पल-भर में आप आपके मोबाइल पर दस्तक देने लगती हैं ये सब कृत्रिम बुद्धि के ही खेल है। इस प्रकार मनुष्य की बहुत सारी गतिविधियाँ उसकी मुट्ठी में हो गई हैं। हम घर बैठे-बैठे लगभग सभी काम कर सकते है | खतरा यह है कि वह मशीन का गुलाम बनता जा रहा है। यदि कभी मशीनी दिमाग मनुष्य से भी अधिक शक्तिशाली होगा,मनुष्य के विरुद्ध खड़ा हो गया तो इसका परिणाम क्या होगा ? इसका पता किसी को नहीं है। यह सच है कि कृत्रिम बुद्धि ने हमारा जीना सुविधापूर्ण बना दिया है।

स्ववृत्त लेखन

किसी व्यक्ति विशेष द्वारा अपने बारे में सूचनाओं का सिलसिलेवार संकलन ही स्ववृत्त कहलाता है । इसमें व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पक्ष को इस प्रकार प्रस्तुत करता है जो नियोक्ता के मन में उम्मीदवार के प्रति अच्छी व सकारात्मक छवि प्रस्तुत करता है ।

स्ववृत्त लेखन में व्याकरण की गलतियाँ नहीं होनी चाहिए । आप जो सूचना दे रहे हैं, वह क्रम के अनुसार व्यवस्थित रूप से होना चाहिए ताकि नियोक्ता को आपका परिचय पढ़ने में आसानी हो । इस लेखन में सूचनाओं को अनुशासित क्रम में लिखना चाहिए तथा व्यक्ति-परिचय, शैक्षिक योग्यता, अनुभव, प्रशिक्षण, उपलब्धियाँ, कार्येत्तर गतिविधियों को साफ-साफ लिखना चाहिए ।

नौकरी के लिए आवेदन पत्र

प्रश्न 1. "इंडियन केमिकल्स लिमिटेड" 36, न्यूलिंक रोड, मुंबई में रिक्त मार्केटिंग एक्सिक्यूटिव के पद हेतु आवेदन पत्र लिखिए ।

उत्तर 1.

सेवा में
महा प्रबन्धक (मानव संसाधन)
मानव संसाधन विभाग
इंडियन केमिकल्स लिमिटेड
36, न्यूलिंक रोड
अंधेरी, मुंबई – 400035

विषय: "मार्केटिंग एक्सिक्यूटिव के पद हेतु आवेदन"
महोदय,

आज दिनांक 16 अप्रैल 2006 को दिल्ली में प्रकाशित नवभारत टाइम्स में प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ है कि आपकी कंपनी को मार्केटिंग एक्सिक्यूटिव की आवश्यकता है । मैं इस पद के लिए आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ । मेरा स्ववृत्त आवेदन के साथ संलग्न है ।

स्ववृत्त

नाम	-	नरेंद्र कुमार
पिता का नाम	-	राम प्रकाश ठाकुर
माता का नाम	-	सुनीता ठाकुर
जन्म तिथि	-	30 जुलाई 1992
वर्तमान पता	-	302 नरीमन पॉइंट, मुंबई – 1100092
दूरभाष	-	011 2254565

मोबाइल संख्या - 0000546
ईमेल - sureshthakur@....

शैक्षणिक योग्यता

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड	विषय	प्रतिशत/ श्रेणी
1.	दसवीं	2006	सी.बी.एस.ई	हिन्दी अंग्रेज़ी सामाजिक विज्ञान गणित	72% प्रथम
2.	बारहवीं	2008	सी.बी.एस.ई	हिन्दी अंग्रेज़ी रसायन शास्त्र	86% प्रथम
3.	स्नातक	2011	मध्यविश्वविद्यालय, तमिलनाडु	रसायन शास्त्र	69% प्रथम
4.	एम.बी.ए	2012	मध्यविश्वविद्यालय, तमिलनाडु	रसायन शास्त्र	93% प्रथम

अन्य योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास (एम.एस ऑफिस तथा इंटरनेट)
- फ्रेंच भाषा का कार्य योग्य ज्ञान ।

उपलब्धियाँ

- अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता (वर्ष 2001) में प्रथम पुरस्कार
- राजीवगाँधी स्मारक निबंध प्रतियोगिता (2002) में प्रथम पुरस्कार
- विद्यालय और महाविद्यालय क्रिकेट टीमों का कैप्टन

कार्येत्तर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- **उद्योग व्यापार संबंधी पत्रिकाओं और अख़बारों का नियमित पाठन**
- **देश भ्रमण का शौक**
- **इंटरनेट सर्फिंग**
- **फुट बॉल और क्रिकेट में अभिरुचि**

धन्यवाद

निवेदक/आवेदक
क, ख, ग

परीक्षा भवन, मुंबई – ११०००१ 19, मार्च 2023

प्रश्न 2. सर्वोदय बाल विद्यालय गोल मार्केट दिल्ली में हिन्दी विषय पीजीटी का पद रिक्त है । विज्ञापन के अनुसार अपनी योग्यता का विवरण प्रस्तुत करते हुए शिक्षा निदेशक को आवेदन पत्र प्रस्तुत करें ।

उत्तर 2.

सेवा में
शिक्षा निदेशक
शिक्षा निदेशालय
पुराना सचिवालय
दिल्ली- 110053

विषय: पीजीटी हिन्दी पद के लिए आवेदन पत्र ।

महोदय,

मैं सुरेश ठाकुर विगत कुछ वर्षों से दिल्ली सरकार के विद्यालय में संविदा शिक्षक के रूप में बतौर काम कर रहा हूँ । मुझे ज्ञात हुआ सर्वोदय बाल विद्यालय, गोल मार्केट में हिन्दी पीजीटी का पद रिक्त है ।

मैं इस पद के लिए उचित योग्यता रखता हूँ । ये मेरे घर से निकट भी है ।
अतः श्रीमान से निवेदन करना चाहता हूँ कि मुझे सर्वोदय बाल विद्यालय गोल मार्केट में बतौर हिन्दी प्रवक्ता के पद पर नियुक्त करने की कृपा करें ।

धन्यवाद,

निवेदक
सुरेश ठाकुर
302 गोल मार्केट
नई दिल्ली
5 फरवरी 2020
मेरा स्ववृत्त आवेदन पत्र के साथ संलग्न है ।

स्ववृत्त

नाम - सुरेश ठाकुर

पिता का नाम - राम प्रकाश ठाकुर
माता का नाम - सुनीता ठाकुर
जन्म तिथि - 30 जुलाई 1992
वर्तमान पता - 302 गोल मार्केट, नई दिल्ली – 110001
दूरभाष - 011 2254565
मोबाइल संख्या - 0000546
ईमेल - sureshthakur@....

शैक्षणिक योग्यता

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड	विषय	प्रतिशत/ श्रेणी
1.	दसवीं	2006	सी.बी.एस.ई	हिन्दी अंग्रेज़ी सामाजिक विज्ञान गणित	72% प्रथम
2.	बारहवीं	2008	सी.बी.एस.ई	हिन्दी अंग्रेज़ी रसायन शास्त्र	86% प्रथम
3.	स्नातक	2011	दिल्ली विश्वविद्यालय	हिन्दी	69% प्रथम
4.	बी. एड	2012	दिल्ली विश्वविद्यालय	हिन्दी	93% प्रथम
5.	परास्नातक	2014	दिल्ली विश्वविद्यालय	हिन्दी	79% प्रथम

अन्य योग्यताएँ

- कंप्यूटर में 1 वर्ष का डिप्लोमा ।
- मैकानिकल इंजीनियरिंग में 6 माह का डिप्लोमा ।
- हिन्दी अंग्रेज़ी, जर्मनी, स्पेनिश भाषा की जानकारी ।
- योगा के क्षेत्र में 6 माह का प्रशिक्षण ।

उपलब्धियाँ

- विद्यालय स्तर पर एनसीसी में उच्च प्रशिक्षण ।
- भारत को जानो प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर द्वितीय पुरस्कार ।
- गणतन्त्र दिवस परेड में भाग लेने का पुरस्कार ।

कार्येत्तर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- योगाभ्यास, क्रिकेट, शास्त्रीय संगीय गायन, वादन में विशेष अभिरुचि ।

- सांस्कृतिक कार्यक्रम को आयोजन करने का अनुभव तथा रुचि ।
- आधुनिक तकनीकों का प्रयोग सीखना तथा समाज के लिए उपयोगी बनाना ।

धन्यवाद
क, ख, ग
नई दिल्ली – 110001 19, मार्च 2023

प्रश्न 3. कंप्यूटर अध्यापक पद हेतु आवेदन पत्र लिखिए ।
उत्तर 3.

प्रेषक
संपतकुमार
परीक्षा भवन
नई दिल्ली – 24
19 अप्रैल, 2001

सेवा में
श्रीमान प्रधानाचार्य जी
के वी स्कूल
नई दिल्ली

विषय: कंप्यूटर अध्यापक पद हेतु आवेदन पत्र ।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि विश्वस्व सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि आपके विध्यालय में कंप्यूटर अध्यापक/अध्यापिका (प्राइमरी कक्षा के लिए) का पद रिक्त है ।

मैं इस पद के लिए आवेदन देना चाहता हूँ । मैं ने इसी विद्यालय से अपनी स्कूली शिक्षा संपन्न की है । मुझे पढ़ने और पढ़ाने में अत्यंत रुचि है । मैं ने कंप्यूटर ट्रेनिंग में दक्षता प्राप्त की हुई है । मेरी टाइपिंग स्पीड 100 शब्द पर मिनट है । मेरे परिवार का वातावरण पूर्णतः पढ़न-पाढ़न के अनुकूल है, किन्तु अचानक मेरे पिताजी की मृत्यु हो जाने के कारण परिवार का भार मेरे कंधे पर आ गया है । मैं पूर्ण ईमानदारी और

निष्ठापूर्ण मन लगाकर अपना काम करूँगा तथा मैं आपको विश्वासित करता हूँ कि मेरी ओर से आपको कभी तकलीफ नहीं होगी और न ही मैं आपको किसी भी प्रकार की शिकायत का मौका दूँगा ।

स्ववृत्त

नाम - संपतकुमार
पिता का नाम - राम प्रकाश ठाकुर
माता का नाम - सुनीता ठाकुर
जन्म तिथि - 30 जुलाई 1992
वर्तमान पता - 302 परीक्षा भवन, गोल मार्केट, नई दिल्ली – 24
दूरभाष - 011 2254565
मोबाइल संख्या - 0000546
ईमेल - sureshthakur@....

शैक्षणिक योग्यता

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड	विषय	प्रतिशत/ श्रेणी
1.	दसवीं	2006	सी.बी.एस.ई	हिन्दी अंग्रेज़ी सामाजिक विज्ञान गणित	72% प्रथम
2.	बारहवीं	2008	सी.बी.एस.ई	हिन्दी अंग्रेज़ी इतिहास अर्थशास्त्र	86% प्रथम

3. कंप्यूटर ट्रेनिंग में पूर्णतः दक्ष हूँ ।

अन्य योग्यताएँ

- कला व गायन में भी कुशल हूं।

सभी महत्वपूर्ण दस्तावेज़, रिपोर्ट कार्ड, सर्टिफिकेट की कॉपी आदि पत्र के साथ ही संलग्न है । एक सकारात्मक उत्तर की प्रतीक्षा है ।

सधन्यवाद

संपतकुमार

नई दिल्ली 19, मार्च 2023

प्रश्न 4. कल्पना कीजिए कि आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना अध्ययन पूरा किया है और किसी प्रसिद्ध अखबार में पत्रकार पद के लिए आवेदन भेजना है । इसके लिए एक आवेदन पत्र लिखिए ।
उत्तर 4.

सेवा में
संपादक,
अमर उजाला,
पानीपत ।

विषय: पत्रकार पद के लिए आवेदन हेतु ।

महोदय,

आज दिनांक 10 जुलाई, 2023 को अमर उजाला से प्रकाशित विज्ञापन से पता चला है कि आपके कार्यालय को पत्राकार की आवश्यकता है । मैं इस पद के लिए अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत कर रहा/रही हूँ । मेरा स्ववृत्त इस आवेदन पत्र के साथ संलग्न है । इसका अवलोकन करने पर आपको विश्वास होगा कि मैं इस पद के लिए पूरी तरह से उपयुक्त उम्मीदवार हूँ । मैं आपके विज्ञापन में वर्णित सभी योग्यताओं को पूरा करता हूँ/करती हूं । मेरा संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं :-

नाम	-	महेश/महेश्वरी
पिता का नाम	-	क ख ग
जन्म तिथि	-	xx/xx/x00xx
वर्तमान पता	-	65, विकास नगर, तिरुवरूर
स्थाई पता	-	65, विकास नगर, तिरुवरूर
दूरभाष	-	xxxx-4546840 छल ध्वनि : 9478895845
ईमेल	-	cclchapter@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ:

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड	विषय	प्रतिशत/ श्रेणी
1.	दसवीं	2006	सी.बी.एस.ई	हिन्दी अंग्रेज़ी सामाजिक विज्ञान गणित	72% प्रथम

2.	बारहवीं	2008	सी.बी.एस.ई	हिन्दी अंग्रेज़ी इतिहास अर्थशास्त्र	86% प्रथम
3.	स्नातक	2011	तमिलनाडु विश्वविद्यालय	गणित	92% प्रथम
4.	पत्रकारिता	2012	तमिलनाडु विश्वविद्यालय	अंग्रेज़ी, संस्कृत	96 % प्रथम

अन्य योग्यताएँ

इस योग्यता के साथ-साथ मैं कई वर्षों से स्वतंत्र लेखन से भी जुड़ा/जुड़ी हुआ/हुई हूँ । मुझे पत्रकारिता में बेहद रुचि है । मैं आपको पूर्ण विश्वास दिलाता/दिलाती हूँ कि मैं अपना कार्य पूरी निष्ठा से करूँगा/करूँगी । आपसे अनुरोध है कि उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मेरे आवेदन पत्र पर सकारात्मक विचार करते हुए मुझे पत्रकार पद पर नियुक्त करें ।

सधन्यवाद,
भवदीय,
(हस्ताक्षर) 19, मार्च 2023

प्रश्न 1. मार्केटिंग एक्सेक्यूटिव पद के लिए अपना एक आकर्षक स्ववृत्त तैयार करें ।

उत्तर : स्ववृत्त

नाम - नरेंद्र कुमार
पिता का नाम - सुरेश कुमार
माँ का नाम - शकुंतला
जन्म तिथि - 18 नवंबर, 1972
वर्तमान पता - A 92 पाकेट चार, अशोक विहार (फेज़ एक) दिल्ली – 110052
स्थाई पता - वही
टेलीफोन नं. - 011- 32918296
मोबाइल नं. - 986904859
ईमेल - narendra17@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्रम संख्या	परीक्षा/डिग्री/वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविध्यालय/ विश्वविध्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत

	डिप्लोमा				
1.	दसवीं कक्षा 1987	राजकीय विद्यालय सीबीएसई	अंग्रेज़ी, हिन्दी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	93%
2.	बारहवीं 1989	वही सीबीएसई	अंग्रेज़ी, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित	प्रथम	95%
3.	बी.एस.सी. (आनर्स) 1992	हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	कंप्यूटर साइंस	प्रथम	84%
4.	एमबीए 1994	आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट		प्रथम	85%

अन्य संबंधित योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास (एम.एस. ऑफिस तथा इंटरनेट)
- फ्रांसीसी भाषा का कार्य योग्य ज्ञान ।

उपलब्धियाँ

- अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता (वर्ष 2001) में प्रथम पुरस्कार ।
- राजीव गाँधी स्मारक निबंध प्रतियोगिता (2002) में प्रथम पुरस्कार ।
- विद्यालय और महाविद्यालय क्रिकेट टीमों का कप्तान ।

कार्येत्तर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- उद्योग व्यापार संबंधी पत्रिकाओं और अखबारों का नियमित पाठन ।
- देश भ्रमण का शौक ।
- इंटरनेट सर्फिंग ।
- फुटबॉल और क्रिकेट में अभिरुचि ।

वैसे सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

1. श्री जे रामनाथ, निदेशक, आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लोदी इस्टेट, नई दिल्ली
2. श्री देवेन्द्र गुप्ता, प्राध्यापक (मार्केटिंग), आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लोदी स्टेट, नई दिल्ली

स्थान

तिथि

हस्ताक्षर

प्रश्न 2. ट्रेंड ग्रेजुएट टीचर (TGT) पद के लिए अपना एक आकर्षक स्ववृत्त तैयार करें ।

उत्तर : स्ववृत्त

नाम - अभिलाष कुमार
पिता का नाम - सुलभ शर्मा
माँ का नाम - शकुंतला मिश्रा
जन्म तिथि - 15 नवंबर, 1992
वर्तमान पता - 11/2 पाकेट 4, गली नं. 2 रोशन नगर, दिल्ली
स्थाई पता - वही
टेलीफोन नं. - 011- 239645600
मोबाइल नं. - 996904859
ईमेल - abhilash.15@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्रम संख्या	परीक्षा/डिग्री/वर्ष डिप्लोमा	विद्यालय/बोर्ड/महाविध्यालय/ विश्वविध्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा2002	राजकीय विद्यालय सीबीएसई	अंग्रेज़ी, हिन्दी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	98%
2.	बारहवीं 2005	वही सीबीएसई	अंग्रेज़ी, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित	प्रथम	85%
3.	बी.एस.सी. (आनर्स) 2007	रामलाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	कंप्यूटर साइंस	प्रथम	64%
4.	एमबीए 2008	एल°एन° मिश्रा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट		प्रथम	75%

अन्य संबंधित योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास (एम.एस. ऑफिस तथा इंटरनेट)
- फ्रांसीसी भाषा का कार्य योग्य ज्ञान ।

उपलब्धियाँ

- अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार ।
- राजीवगाँधी स्मारक निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार ।
- विद्यालय और महाविद्यालय क्रिकेट टीमों का कप्तान ।

कार्येत्तर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- उद्योग व्यापार संबंधी पत्रिकाओं और अखबारों का नियमित पाठन ।
- बच्चों के साथ वक्त बिताना अच्छा लगता है ।
- इंटरनेट सर्फिंग
- हॉकी और क्रिकेट में अभिरुचि

वैसे सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

1. श्री आशापूर्णा देवी, निदेशक रमन पब्लिक स्कूल, मोती नगर, नई दिल्ली
2. श्री आशीष गुप्ता, प्राध्यापक, आदर्श विद्यालय, लोदी इस्टेट, नई दिल्ली

हस्ताक्षर

स्थान
तिथि

प्रश्न 3. उच्च श्रेणी लिपिक पद के लिए अपना एक आकर्षक स्ववृत्त तैयार करें ।

उत्तर : **स्ववृत्त**

नाम	-	तथागत मैत्रेय
पिता का नाम	-	सौमित्र विश्वास
माता का नाम	-	सावित्री विश्वास
जन्म तिथि	-	22 नवंबर, 1996
वर्तमान पता	-	A 82 अशोक विहार (फेज़ एक) दिल्ली 110052
स्थाई पता	-	वही
टेलीफोन नं.	-	011- 33918206
मोबाइल नं.	-	936704850
ईमेल	-	tathagat22@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्रम संख्या	परीक्षा/डिग्री/वर्ष डिप्लोमा	विद्यालय/बोर्ड/महाविध्यालय/ विश्वविध्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	राजकीय विद्यालय सीबीएसई	अंग्रेज़ी, हिन्दी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	83%
2.	बारहवीं	वही सीबीएसई	अंग्रेज़ी, इतिहास, समाजशास्त्र तथा गणित, हिन्दी	प्रथम	85%
3.	बी. (आनर्स)	श्यामलाल, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	इतिहास	प्रथम	74%
4.	एमबीए	मॉडर्न इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट		प्रथम	65%

अन्य संबंधित योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास (एम.एस. ऑफिस तथा इंटरनेट)
- जापानी भाषा का कार्य योग्य ज्ञान ।

उपलब्धियाँ

- अखिल भारतीय लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार ।
- विद्यालय और महाविद्यालय फूटबाल टीमों का कप्तान ।

कार्येत्तर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- अखबारों का नियमित पाठन ।

- इंटरनेट सर्फिंग ।

वैसे सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

3. श्री सुरेन्द्र कुमार शा, निदेशक वी. के., इंटरनेशनल
4. श्री सत्यार्थ प्रकाश, अपर सचिव, परिवहन विभाग, भारत सरकार

स्थान
तिथि हस्ताक्षर

प्रश्न 4. सहायक अध्यापक पद के लिए अपना एक आकर्षक स्ववृत्त तैयार करें ।

उत्तर : स्ववृत्त

नाम - नवीन बहल
पिता का नाम - पवन बहल
माँ का नाम - अनुप्रिया बहल
जन्म तिथि - 30 अक्तूबर, 1982
वर्तमान पता - A 92 पाकेट चार, हापुड़ उत्तर प्रदेश
स्थाई पता - वही
टेलीफोन नं. - 9329192960
मोबाइल नं. - 29869048590
ईमेल - naveen30@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्रम संख्या	परीक्षा/डिग्री/वर्ष डिप्लोमा	विद्यालय/बोर्ड/महाविध्यालय/ विश्वविध्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	राजकीय विद्यालय सीबीएसई	अंग्रेज़ी, हिन्दी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	63%
2.	बारहवीं	वही सीबीएसई	अंग्रेज़ी, इतिहास, समाजशास्त्र,	प्रथम	85%

			राजनीति विज्ञान, गणित		
3.	बी. (आनर्स)	सत्यवती, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	राजनीति विज्ञान	प्रथम	94%

अन्य संबंधित योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास (एम.एस. ऑफिस तथा इंटरनेट)

उपलब्धियाँ

- अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार ।
- राजीव गाँधी स्मारक फुटबाल प्रतियोगिता में मैन ऑफ द मैच ।
- विद्यालय और महाविद्यालय फुटबाल टीमों का कप्तान ।

कार्येत्तर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- अखबारों का नियमित पाठन ।
- इंटरनेट सर्फिंग ।

वैसे सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

1. श्री सुरेन्द्र कुमार शा, निदेशक वी. के., इंटरनेशनल
2. श्री सत्यार्थ प्रकाश, अपर सचिव, परिवहन विभाग, भारत सरकार

स्थान
तिथि हस्ताक्षर

ई - मेल लेखन

आजकल हम इंटरनेट के माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं ,जिसे ई मेल कहा जाता है |ई-मेल का पूरा नाम है 'इलेक्ट्रॉनिक मेल'| इसके माध्यम से सूचनाओं का आदान प्रदान बड़ी सरलता से किया जा सकता है |

ई-मेल के लाभ

- इसके माध्यम से हम अपनी सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचा सकते हैं |

- इसके द्वारा हम अपने दस्तावेजों को सुरक्षित रख सकते हैं |
- भेजे गए समय और दिनांक की पुष्टि हमेशा के लिए कर सकते हैं |
- संदेशों को व्यवस्थित रूप से एकत्रित कर सकते हैं |
- कागज की बचत होती है |
- पासवर्ड के द्वारा सूचना सुरक्षित रखी जाती है |

ई-मेल का प्रारूप

From : प्रेषक का ई-मेल पता यहाँ लिखा जाना है |

To: सेवा में का ई-मेल पता यहाँ लिखा जाना है |

CC : कार्बन कॉपी (एक से अधिक ई मेल पते पर भेजने के लिए उपयोग किया जाता है |

BCC :ब्लैंड कार्बन कॉपी (यह भी CC की तरह कार्य करता है परंतु इसमें लिखा पता CC और To वाले नहीं देख पाते)

विषय : यहाँ ई-मेल लिखने का प्रयोजन लिखा जाना है |

अभिनंदन : महोदय लिख सकते हैं

मुख्य विषय वस्तु : यहाँ विषय को विस्तार से लिखा जाना है |

समापन: कथन समाप्त करना

अटैचमेंट ज्वाइन करें : पी डी एफ, इमेज जैसी फ़ाइलें हैं |

हस्ताक्षर : प्रेषक का नाम ,संकेत आदि

अंक विभाजन	
प्रारूप	2 अंक
विषय वस्तु	2 अंक
भाषा	1 अंक

कुल अंक	5 अंक

स्मरणीय बिन्दु

ई-मेल को हमेशा ई-मेल पते पर भेजें|

मुख्य सामग्री हमेशा आपके विषय से संबंधित होनी चाहिए |

व्याकरणिक कोटि को ध्यान दें |

शब्दों का उचित प्रयोग करें

ई-मेल के उदाहरण

1 अनौपचारिक ई-मेल

अपने मित्र को जन्मदिन की पार्टी के लिए निमंत्रण देने हेतु 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए |

प्रेषक(from):xyz@gmail.com

सेवा में (to): abc@yahoo.com

Cc :

Bcc :

विषय: पार्टी का निमंत्रण

प्रिय मित्र मुझे लगता है कि तुम्हें मेरा जन्मदिन याद होगा| मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि अगस्त 15 की तारीख स्टार सभागार में जन्मदिन की पार्टी है, जिसका समय सायंकाल चार बजे से आठ बजे तक है |

तुम्हें जन्मदिन समारोह में जरूर आना है |

धन्यवाद

तुम्हारा मित्र

क ख ग

2 औपचारिक ई-मेल लेखन

आप हवार्ड यूनिवर्सिटी में माइक्रोबायोलजी में प्रवेश लेना चाहते हैं |इसके लिए समस्त जानकारियों को ज्ञात करने के लिए यहाँ के डीन को ई-मेल लिखिए |

प्रेषक(from):xyz@gmail.com

सेवा में (to): principal.haward.univesity@yahoo.com

Cc :

Bcc :

विषय: माइक्रोबायोलजी में प्रवेश से संबंधित जानकारी हेतु

महोदय

निवेदन है कि मैंने इसी वर्ष स्नातक की परीक्षा 95% अंकों से उत्तीर्ण की है| मेरी रुचि माइक्रोबायोलजी में होने के कारण मैं आपकी यूनिवर्सिटी में प्रवेश लेने के इच्छुक हूँ | मुझे प्रवेश से सबंधित सभी जानकारियों से अवगत करवाने की कृपा करें | साथ ही छात्रवृत्ति से संबंधित जानकारी भी देने का प्रयास करें |

आशा है कि मुझे सभी जानकारियाँ उपलब्ध करवाने की कृपा करेंगे |

धन्यवाद

भवदीय

क ख ग